अर्ध शताधिक ग्रंथ कर्ता ,इन्दू)हिन्दू (धर्म प्रदाता,

संचलनात्मक रचयिता ,त्रैत सिद्धान्त आदि कर्ता

श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

जन्म–मरण का सिद्धांत

Translation by

K.Ramani B.Com
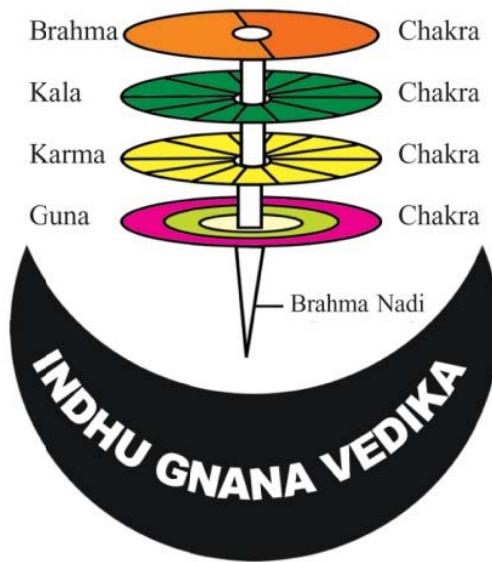
Published by

Indu Gnana Vedika

(Regd.No.168/2004)

IMP Note : To know the true and complete meaning of this Grandha (book) it must be read in Telugu Language.

लेखक की मुख्य बातें

जनन और मरण दोनों मनुष्य के साथ होनी है। जन्म से जीवन का प्रारंभ , मरण से जीवन का अंत होता है। जन्म-मरण इन दोनों से संबंध रखनेवाला मनुष्य, इन दोनों विषयों में अवगाहना न होने की वजह से कल्पनाएँ कर रहा है। जन्म के बारे में हो या मरण के बारें में हो, मनुष्य के पास कोई भी शास्त्रबद्ध समाचार नहीं है। जन्म और मृत्यु के बारें में अशास्त्रीय और पुराणसंबंधित विषयों के होने की वजह से वास्तविकता से दूर हो गया है। **मनुष्य को मुख्य रुप से जानने कि जरुरत है कि कैसे जीवन प्रारंभ और अंत होता है।** इन दोनों विषयों से संबंधित मनुष्य में दफन हुए अवास्तविकताओं को बाहर निकाल कर वास्तविकताओं को आप तक पहुँचने के उद्‌देश्य से ही इस पुस्तक की रचना की गई। इस पुस्तक में लिखे सारे विषय शासनबद्ध और सिद्धांत रुपी होने के कारण ही इसका नाम (जन्म-मरण का सिद्धांत) रखा गया है।

इसमें कई शासन से संबंधित सिद्धांत है। ब्रम्हविद्या से संबंधित शासन रुपी होने के कारण इसे ब्रम्हविद्या का ही एक सिद्धांत कह सकते हैं। इस धरती पर षट्शास्त्र है । उनमें से पहले पाँच प्रकृति संबंधित और अंतिम एक परमात्मा संबंधित है। (1) **गणित शास्त्र** (2) **खगोल शास्त्र** (3) **रसायनिक शास्त्र** (4) **भौतिक शास्त्र** (5) **ज्योतिष शास्त्र** (6) **ब्रम्हविद्या शास्त्र ।** इन शास्त्रों के होते हुए इन्हें छोड़ कर अन्य को भी शास्त्र कहने लगे हैं। जैसे (1) शिक्षा (2) व्याकरण (3) छन्द (4) निरुक्त्त (5) ज्योतिष (6) कल्प। इनका भी शास्त्र होने में कुछ लोगों का तर्क है। इनमें से पाँचवाँ ज्योतिष के अलावा अन्य सभी को भी शास्त्र माना जाना, मेरे समझ के बाहर है। मनुष्य के लिए शास्त्र कौन से हैं, शास्त्र कौन से नहीं, अनभिज्ञता से दिखने वाले हर पुस्तक को शास्त्र माना जाता है। कुछ पुराण ग्रंथों में मनुष्य के जन्म के बारें में लिखे गए विषयों को

सत्य तथा शास्त्र का वचन समझ, मनुष्य विश्वास कर रहा है। अब इन विषयों के बारें में चर्चा करेंगें। कुछ पुस्तकों में लिखे गए विषयों को देखा जाए तो माता के गर्भ में ही शिशु में प्राण आना, माता के गर्भ में ही शिशु मे वास जीव का बाहर आने से पहले तक उसे पूर्व जन्म का याद रहना , लिखा गया है। इसे वास्तविकता का रुप देते हुए, इससे संबंधित कहानियाँ भीं लिखी गयी हैं। इतना ही नहीं, प्रहलाद को माता के गर्भ में ही नारद द्वारा नारायण मंत्रोपदेश दिया जाना, भागवत में कहा गया है। महाभारत में, अभिमन्यु ने माता के गर्भ में ही (युद्धव्यूह के अंर्तगत) पद्म व्यूह मे प्रवेश करना लिखा गया है। इस तरह अनेक पुराण ग्रंथों तथा चरित्र ग्रंथों में लिखा जाना माता के गर्भ में ही जीवात्मा का प्रवेश होने का विश्वास लोगों के मन में घर कर गया । बाद में आये पुस्तकों में भी इसी के समर्थ में ही कहे जाने कि वजह से, प्रसव से पहले माता के गर्भ में शिशु के अंदर जीव का प्रवेश लोगों के मन में मुद्रित हो गया है, इतना दृढ़ और विश्वास भरे, उस कथन से इंकार कर , यह सत्य तथा शास्त्रबद्ध नहीं कहा जाए तो सुनने की स्थिति में लोग नहीं हैं यह जानने के बावगुद भी सत्य को बतलाने का हम प्रयत्न कर रहे हैं । और इस प्रयत्न का नाम "जनन - मरण का सिद्धांत " नामक पुस्तक है। इसमें जनन से संबंधित विषय ही नहीं बल्कि मरण से संबंधित विषय भी विवादास्पद हैं।

अगर लोग पुछें कि अविश्वसनीय तथा विवादास्पद विषयों को लिखने में आपका उद्देश्य क्या है। इसका जवाब है कोई विश्वास करें या न करें सत्य तो सत्य ही है। सत्य को दर्शाने के उद्देश्य से ही हमने इस पुस्तक को लिखा है। इसमें जनन सिद्धांत में गर्भस्थ शिशु में प्राण न होना, जीव का उस शिशु शरीर में प्रवेश

न होना कहा गया है। माता प्रसवित होने के बाद पहले श्वास से ही जीव का शिशु शरीर में प्रवेश होने का कहा जाना ही मुख्य सिद्धांत है। इस बात को सुनते ही इसमें रहस्यमयी क्या है इसे बिना देखे, पुस्तक को बिना पढ़े, बगल में रखनेवाले अनेक लोग हैं। ऐसे में जन्म से पहले का विषय बिना जाने ही रहस्य रह जाएगा। इसलिए कहे गए विषयों को परिशोध की दृष्टि से देखा जाय तो अंतत; एक निर्णय में आ सकते हैं। किसी के द्वारा पूर्व कही विषयों को सच मानकर अभी इतने सविवरण कही विषयों को अनदेखा नही करना चाहिए।

कर्ण का जन्म कान से हुआ, वालि पूंछ के पास से जनमा, द्रोण का जन्म कटोरे में हुआ, मत्स्य वल्लभ का जन्म मछली से हुआ लिखा गया। इन बातों पर विश्वास करनेवाले लोग आज भी हैं। असत्य को आसानी से विश्वास कर लेने वालों की वजह से, सुनी- सुनाई विषयों में सही गलत को बिना सोचे-समझे मान लेने वालों की वजह से, जिसे जो मन हुआ लिखा दिया, इतने अवास्तविक विषयों में विश्वास करनेवालों को, कितने ही प्रमाणों से सैद्धांतिक रुप से लिखा गया जन्म के विषयों पर अविश्वास कर रहे है। सामान्य मानव ही नहीं, विज्ञान को जाननेवाले का भी अविश्वास करना आश्चर्यजनक है। भगवत गीता शास्त्र में भगवान के कही बातों को छोड़कर पुराणों में कवियों की कही बातों पर विश्वास करना बहुत विचित्र लगता है। शास्त्रों, पुराणों तथा इतिहास को अलग- अलग दृष्टिकोण से न समझ कर, प्रति पुस्तक को शास्त्र ही मान कर चलने वाले अनेक लोग हैं, जो शास्त्र और पुराणों में फर्क न समझें तो, समझे हुए विषयों में सत्य- असत्य में फर्क को परखने की कोई गुंजाइश ही नही रहेगी।

जनन विषयों का ही नहीं बल्कि मरण विषयों में भी मनुष्य अवास्तविक विषयों को सिर में बिठाए रखा है । मृतक को पहले यमदूत आकर यमलोक ले जाना, वहाँ जीवन काल में किए गए पापों का हिसाब कर उनका यमराज के कहे दंड का अमल होना, अनेक नरक यातनाओं से गुजरने के बाद में , वहाँ देवदूत आकर स्वर्ग में ले जाना वहाँ उनके पुण्यों के अनुसार रखा जाना, रंभा ,उर्वशी, मेनका आदि अप्सराओं के मध्य सुखों का अनुभव कर पुण्य समाप्त होते ही ब्रम्हा के पास जाकर नया भाग्य लिखवाकर वापस जन्म लेना कहा गया है । यह सारी बातें पुराणों के अंतर्गत विषय है, वास्तविकता को न समझ पाने की वजह से सौ प्रतिशत लोग इन पर विश्वास कर, इन विषयों का प्रचार कर जा रहे हैं । ब्रम्हविद्या शास्त्र में भगवान के कही बातों को भी भूल रहे हैं।

मृतक तुरन्त दोबारा शिशु शरीर में आश्रय लेना, यमलोक में या स्वर्ग लोक में न जाकर , ऐसी कोई विशेष जगह न होने को जान ही नहीं पाया। मृत्यु के तत् पश्चात् जन्म लेकर जीव पाप-पुण्यों को जीवन काल में ही अनुभव करता है , पाप निमित्त यमलोक में या पुण्य निमित्त स्वर्गलोक का न होना जान नहीं सका **अब तक सभी के विश्वास किए विषयों को खंडन करना जन्म सिद्धांत को ज्ञात कराना है , यमलोक का खंडन करना मरण सिद्धांत को ज्ञात कराना है ।** जनन-मरण के विषयों का मेरा कहा जाना अब तक किसी के न कहने की वजह से यह पूरी तरह से नया लग सकता है। मरणों के भ्रमों को दूर करना हो तो , जन्म के विवरण को पूरी तरह से जानना हो तो , शास्त्र पद्धति से कहे गये इस पुस्तक में, विषयों को परिशोध की दृष्टि से पढने की आवश्यकता होगी। अंत तक पढ़े बिना मध्य में ही छोड़ने से कुछ भी समझ में नहीं आएगा। जीवन का शुरु तथा अंत अर्थात् जन्म -मृत्यु को जानना

बहुत ही मुख्य विषय है। यही न पता हो कि हम कौन है, कहाँ से आए हैं, सब कुछ अविज्ञ ही रह जाएगा। अपने आप को भुलावे में रखकर स्वयं जीव होने के विषय का अणु मात्र भी होश में न रहे तो हमारा सब कुछ पीछे छुटने का दिन नजदीक आ रहा है को भूल जायेंगें। कभी भी अस्वस्थ होने पर यदि डॉक्टर कहे कि इस बीमारी की कोई दवा नहीं है , मौत निश्चित है सुनकर स्वयं पर बहुत बड़ा उपद्रव आ गया सोच कर चिंतित हो जाते हैं। मौत को सर्व साधारण होना मानते ही नहीं है। इतना ही नहीं मौत अर्थात् कैसी होगी सोचकर डर से कमजोर हो जाते हैं ।ये नही कि पहले से ही मौत के बारें में तथा जन्म के बारे में जान लें।

यह जन्म और मृत्यु सारे मनुष्यों का ही नहीं बल्कि समस्त प्राणियों से भी संबंधित विषय हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि इनका एक हिन्दु धर्म के लोगों पर ही नहीं सभी मतों के लोगों पर लागू होता हैं। कुछ मतों के लोग मरने वाला दोबारा जन्म लेने को मानते नहीं है । पूर्व जन्म के विषय को हिन्दु धर्म में ही कुछ लोगों ने अस्वीकार कर दिया। मनुष्य मानें या न मानें परमात्मा ने मरने के बाद दोबारा जन्म होना कहा है । मरने के बाद दोबारा जन्म न लेने का कोई प्रमाण नही है। मरने के बाद दोबारा जन्म लेने के अनेकों प्रमाण हैं। अनेक लोगों को गत जन्म का याद आना , गत जन्म के विषयों को बताना, उनका सच होना भी हुआ। गत जन्म में छुपाए गए धन का दूसरे जन्म में याद आकर छुपा गया स्थान को दिखाना, पिछले जन्म का अपना नाम बताना, अपने घर को पहचानना अपने रिश्तेदारों को पहचानना ऐसे अनेकों हुए हैं। इसके अनुसार जन्म का होना निरुपण हुआ है लेकिन जन्म का न होना कहीं भी निरुपण नहीं किया गया ।

जन्म नही होता है को कहने वाले जन्म सिद्धांत को भले ही अस्वीकार करें, किन्तु सभी धर्मों के मनुष्यों को मौत का होना मानना ही पड़ेगा। कुछ लोगों को जन्म सिद्धांत से भले ही मतलब न हो मरण सिद्धांत को सभी धर्मों के लोगों के लिए जानना आवश्यक है। जन्म और मृत्यु हमारे आँखों के सामने होनेवाले विषय ही है। हमारा कहा गया सिद्धांत भी यहीं हुआ है। हमारी बातों को अगर घटनाओं से मिलाकर देखें तो हमारी बातों में सत्यता और असत्यता का पता चल सकता है।

आध्यात्मिकता और विज्ञान दो विधान होते हैं। यहाँ पर असल चर्चा का विषय यह है कि आध्यात्मिक पहले जनमा, या विज्ञान पहले जनमा है। इसका जवाब यह है कि विज्ञान मनुष्य के दिमाग से उत्पन्न परिशोध की योजना से जन्मी है। विज्ञान कितना ही बड़ा क्यों न हो मनुष्य द्वारा ही खोज गया है। मनुष्य से निकली शास्त्रबद्ध रुपी नये योजनाओं का सारांश ही विज्ञान है। आध्यात्मिक मनुष्य का अंतर्गत रुप है। आत्मा का अध्ययन करना या जानना आध्यात्मिकता है। सब के अंदर बसी आत्मा को कुछ लोग जानने का प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ लोगों को तो इस विषय में कोई जानकारी नही है। मालूम हो या न हो मनुष्य के अंदर ही आध्यात्मिकता होती है। मनुष्य के अंदर बसी आत्मा द्वारा ही विज्ञान का पता लगा है। आज का सारा विज्ञान मनुष्य की ही उपज है। इसलिए आध्यात्मिक पहला है और दूसरा है विज्ञान। इसलिए आध्यात्मिक से विज्ञान जन्मा कह सकते हैं।

आध्यात्मिकता से विज्ञान को देखा जा सकता लेकिन विज्ञान से आध्यात्मिकता नहीं देखी जा सकती है। इसका कारण विज्ञान स्थूल दृष्टि मात्र रखता है। स्थूल दृष्टि से आत्मा का, या

उसका अध्ययन करना नामुमकिन है। आत्मा की सूक्ष्म दृष्टि होती है, सूक्ष्म दृष्टि से कुछ भी पता लग सकता है। इस सूत्र से ही अगम्य गोचर हुआ जनन ,तथा मरण की स्थिीतियों का विवरण दिया गया है। आत्मा द्वारा बर्हिगत हुआ यह विषय भीं विज्ञान विषय है। इस वजह से इसे परिशोध की दृष्टि से देखना चाहिए, अनेक बार कहा गया है। हम लोग एक नये विषय की खोज भले ही न करें, खोजी गई विषयों को सोचने की जिम्मेदारी हम सब पर है। सब लोग विचार करें तो इस विषय की महानता का पता चलता है।

हर कोई एक बेकार विषय के बारें में कहते रहते हैं। हर एक के बारे में विचार क-रते रहें क्या! ऐसा कुछ लोग सोच सकते हैं। हम यह नहीं कह रहे कि आप हर विषय में गहराई से विचार करें। विज्ञान का, शास्त्र का तथा सिद्धांत के विषयों को ही मात्र गहराई से विचार करें। शास्त्रों को न छोडने का जिक्र हम पहले भी कर चुके हैं। यहाँ जन्म-मरण के मूल सिद्धांत हैं। इसलिए इसे आसानी से न टाल कर आप अपने वैज्ञानिक दृष्टि- कोण से देखिए।अगर उस तरह से देखा जाय तो इस विषय कि सत्यता का बोध होगा। जनन-मरण का बोध विज्ञान के क्षेत्र में एक नया मोड का विषय है। इसलिए हम चाहते है आप इसे विज्ञानता से समझें।

आपका

श्री आचार्य प्रभोदानंद योगिश्वर

जनन

यहाँ पर कहे जानेवाले जनन का विवरण भगवत गीता के संख्या योग से "**वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि, तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यनि संयाति नवानि देही ।**" नामक श्लोक को आधार मान कर कहा गया है । भगवान के वर्णन किए विषयों में असत्यता नहीं होती लोग यह मानें उनकी बातों का अनुसरण करें तो कहे गए जन्म विवरण को समझ पायेंगें, ऐसी हमारी धारणा है। केवल विमर्श की दृष्टि से न देख कर अवगाहना की दृष्टि से देखें तो, लोगों को भगवान के इस श्लोक का पूरा विवरण समझ में आएगा ।

विवरण :- भगवान ने इस श्लोक में वर्णन किए भाव का सौ प्रतिशत से भी अधिक लोगों को समझ में नहीं आया ऐसा हमारा मानना है । क्योंकि इस श्लोक के भाव का विपरीत विवरण बिना जानें उनके अंदर रच बस गई । भगवान ने इस श्लोक के उदाहरण में **पुराने वस्त्र**, **नये वस्त्र कहा** , **पुराना शरीर**, **नया शरीर** का भी विवरण दिया । लेकिन यहाँ पर नया शरीर का उद्देश्य क्या हो सकता है न समझना अनेक लोगों द्वारा ऊपर श्लोक के भाव की हत्या करना, कह सकते हैं । विचक्षण विवरण दृष्टि रहित लोगों ने गीता में नये देह होना स्वीकार किया। कुछ और पुस्तकों में गर्भ में ही आधे बने असम्पूर्ण शरीर में जीव का छः महीने में ही प्रवेश करना भी स्वीकार किया गया । उसी तरह पुराने गृह को छोड़ नये गृह में प्रवेश करना भी स्वीकारा । नया घर, मतलब ऊपरी छत बिना बने, दरवाजे बिना लगे, आधा से भी कम बना हुआ उसमें प्रवेश करना भी मान लिया गया। नया घरं का मतलब है पूरा बना हुआ, नया शरीर अर्थात् पूरी रुप - रेखा से तैयार हुई, इस बारें में विचार न सकें। कोई कुछ भी समझे भगवान के कहे अनुसार पुराने शरीर को छोड़कर आत्मा, पूरे तैयार नये शरीर में ही प्रवेश करती है । जीवात्मा जहाँ हो

आत्मा भी साथ में रहती है । इसलिए जीवात्मा के जन्म लेने के साथ हीं आत्मा भी दूसरे जन्म में प्रवेश करती है, यदि जीवात्मा कैसे शरीर बदलती है समझ सकें तो आत्मा का नये शरीर में पहुँचना मालूम हो पाएगा । इसलिए इसका पूरा विवरण आध्यात्मिक दृष्टि से, विज्ञान की दृष्टि से सिद्धांतपूर्वक नीचे बता रहे हैं, देखिए ।

स्त्री -पुरुष के संयोग से पुरुष का वीर्य कण स्त्री योनी के मार्ग से प्रवेश कर गर्भ कोश में पहुँच वहाँ शरीर तैयार होना प्रारंभ होता है । पुरुष का वीर्य स्त्री के गर्भ कोश में पूरे शरीर के तैयार होने में लगभग नौ महीने का समय लगता है । स्त्री के गर्भ में **मावा** यानि बच्चेदानी में पूरी तरह से तैयार हुआ शिशु जीव रहित होता है। अनेक लोगों के लिए यह अनभिज्ञ विषय हैं। छठवें माह में शिशु शरीर में प्राण का आना अनेक लोगों को गलतफहमी होती हैं। **माता के गर्भ के अंदर शिशु में प्राण का आना असत्य है । गर्भ में ही पूर्व जन्म का याद रहना भी पूरी तरह से असत्य है ।** यहाँ कुछ लोगों को शंका हो सकती हैं यदि शिशु के शरीर में प्राण नहीं होता तो, गर्भ में शिशु का हलचल करना कैसे महसूस होता है। यह कैसे संभव है। यदि छठवें माह में प्राण न आता तो , शिशु का गर्भ में हरकतें करना नामुमकिन था। छठवें माह से ही हरकतें होती रहती है । इसलिए शिशु शरीर में प्राण गर्भ में ही आने का हम यकीन करते हुए हम आप से पूछ रहे हैं । इसका हमारा जवाब है । दूर से देखने में इमली का पेड़ जैसा दिखने वाला शमी का पेड़ , इमली का पेड जैसा ही दिखलाई पड़ता है। गर्भ में ही शिशु की हरकतों की वजह से अनभिज्ञ होकर हम लोग गर्भ में ही शिशु में प्राण आने का मानने में विशेषता क्या है । यदि नजदीक जाकर देखने से इमली का पेड़ जैसा दिखने वाला पेड़ शमी का पेड़ ही था, इमली का पेड़ नही पता चलता है । सच में, यदि गर्भ में हो रहे

परिवर्तनों पर ध्यान देने से हम लोगों का संशय दूर हो सकता है । इसलिए अब गर्भ में शिशु शरीर में हो रहे परिवर्तनों के बारे में जानेंगें ।

स्त्री गर्भ धारण के पहले महीने से लगभग छठवाँ महीने तक शिशु शरीर का एक आकृति तैयार होता है , छठवाँ माह तक शिशु शरीर का निर्माण माता के शरीर की नाड़ियाँ ही करती है । माता के शरीर की ब्रम्ह नाडी से निकली कुछ नसें गर्भ कोश को आक्रमित कर, शिशु शरीर में नाभि द्वारा संबंध स्थापित कर उस शरीर की वृद्धि में सहायक होती हैं । माता के शरीर के भागों का जैसे कि जीर्णशय ,दिल,कलेजा, आदि अव्यव होते हैं, वैसे ही गर्भ को भी एक भाग में ही गिना जाएगा । जीर्णाशय, दिल। जैसे अव्यवों को आक्रमित कर जिस प्रकार से हरकतें करवाती है, उसी प्रकार से छ; माह के बाद गर्भ में रहे शिशु को भी कभी-कभी नाड़ियाँ हरकतें करवाती हैं, कुम्हार घड़ा को एक आकृति के आने तक एक ही स्थिति में बना करके, उस आकृति का बनने के बाद ठोक बजा कर पूरा घड़ा जिस तरह तैयार करता है, ठीक वैसे ही आत्मा ब्रम्हनाडी द्वारा छ; माह तक शिशु शरीर का एक आकृति बनवाकर, उसके बाद उस शरीर को उलट कर, आडा और अनेक स्थितियों में मावा के अंदर कभी - कभी घुमाकर, पूरे आकार में आने तक जीव के रहने योग्य शरीर का निर्माण किया जाता है । नाड़ियाँ द्वारा हिलाये गए हरकतों को , कुछ लोगों ने गर्भ में छठवें माह में शिशु शरीर में प्राण आना मान कर गलतफहमी में रहते हैं ।

माता के गर्भ में नाड़ियाँ शिशु के शरीर से जुड़कर, नौ महीने तक जीव के निवास योग्य शरीर की रचना होना, पूरा शरीर तैयार होते ही तुरंत एक क्षण भीं गर्भ में शिशु शरीर को न

रखकर, गर्भ कोश मुकुलित होकर, योनि द्वारा विकसित कर, शिशु शरीर को बाहर की ओर धकेला जाता है। शिशु शरीर बाहर आने तक माता के गर्भ की नाड़ियाँ शिशु शरीर से संबंध रखती हैं। जैसे ही गर्भ से शिशु शरीर बाहर आता है, उसी समय गर्भ के नाड़ियों का संबंध टूट जाता हैं। गर्भ से बाहर आए शिशु शरीर शव रुप में निकलता है। शरीर बाहर निकलने तक प्राण नहीं रहता है। इसलिए इसे शव जैसा ही कहा जाता है। कुछ लोग कहते हैं "**गर्भ में शिशु में प्राण न हो तो वह सड़कर माता की जान का खतरा हो सकता है। छः माह के बाद जब गर्भ में भ्रूण का हरकत रुक जाए तब माता को खतरा होता है, भ्रूण की हरकतें रुकते ही माता को पीड़ा महसूस होती है, यदि समय रहते वैद्यशाला ले जाया जाए वहाँ डॉक्टर इनका भ्रूण अंदर ही मर गया कहकर, देर करने से खतरा होगा कहकर ऑपरेशन कर भ्रूण को बाहर निकाला जाता है। इन बातों से अनभिज्ञ उद्दंड व्यक्ति भी भ्रूण के हरकतें करने से शिशु में प्राण का आना, भ्रूण के हरकतें रुकते ही प्राणहीन होना, समझते है।फिर आप की बातों पर कैसे विश्वास की जाए ? इतना ही नहीं भ्रूण में प्राण न हो तो माता को खतरा होना भी सब जानते हैं। इस तरह से प्रत्यक्ष रुप में सिद्ध होने के कारण गर्भ में ही शिशु में प्राण आने का हमें विश्वास हैं**" ऐसा कुछ लोग प्रश्न कर सकते हैं। इसका समाधान है।

गर्भ में छठवाँ माह में ही हरकतों का होना सच है। उन हरकतों का रुकते ही माता को खतरा पैदा होना भी सच है। इतने मात्र से ही शिशु में प्राण का आना और चले जाने का सोचना बहुत गलत है। छठें माह में प्राण का आना, अर्थात् उस समय तक प्राण था ही नहीं। सच्चाई को न समझकर सब लोग यहीं गलतफहमी का शिकार होते हैं। वास्तव में विषय यह है कि

हमारे शरीर में कुछ अव्यवों का होने से हमें कोई हानि नहीं पहुँचती है। गर्भ में शिशु माता शरीर के एक भाग में रहने से, माता को कोई हानि नही पहुँचती है। माता के शरीर की नाड़ियाँ शिशु शरीर को आधीन में करके उनकी बढोत्तरी में सहायक सिद्ध होती है। इसलिए शिशुशरीर को माताशरीर का एक भाग कह सकते हैं छठवाँ माह में नसों द्वारा भ्रूण को हिलाने से माता को किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होती। इस स्थिति में रहकर नौवें माह में शिशु शरीर पूरी तरह से तैयार होकर तुरन्त नसों के दबाव से माता का प्रसव होता है। अगर ऐसा न होकर किसी को भी शारीरिक समस्या के कारण छठवाँ माह से पहले ब्रम्हनाडी से निकली हुई नसों का संबंध गर्भकोश से टूट जाए तो माता के शरीर के अन्दर गर्भ में दूसरे पदार्थ वहाँ जमा न रहकर उसका स्त्राव हो जाता है, इसे ही **"गर्भ स्त्राव"** कहते है। ऐसा अनेक स्त्रीयों को छठवाँ माह के अंदर होता है। छठवाँ महीने के अंदर शिशु शरीर एक स्थाई में नहीं होता है। इसलिए रक्त के रुप में, या रक्त के थक्का के रुप में बाहर निकलता है। रक्त को नरम रक्त के थक्का के रुप में होने के कारण बाहर निकलने में आसानी होती है। एक या दो माह का गर्भस्त्राव अधिक पीड़ादायक नहीं होता है। महीने के चढ़ते रहने से गर्भ स्त्राव में पीड़ा अधिक होती है।

छः महीने के बाद भ्रूण एक आकृति धारण करने से स्त्रवित होने का संभव नही रहता है। माता के अस्वस्थता के कारण छठवाँ माह के बाद गर्भकोश में नाड़ियों का संबंध गर्भ कोश से अलग होकर, गर्भस्त्राव न हो सकने के कारण, गर्भस्थ शिशुशरीर का माता के शरीर से संबंध-विच्छेद होने से दूसरा द्रव पदार्थ वहाँ ठहर नहीं पाता है और नसों का दबाव गर्भकोश के ऊपर न होने से शिशुशरीर अन्य पदार्थों के साथ गर्भकोश में रह जाने से सड़ना शुरु

हो जाता है । शिशु का शरीर फुलने के साथ ही उसके साथ के अंगों पर भी दबाव पड़ता है । उस स्थिति में फुला हुआ शिशु शरीर का दबाव अन्य कोमल अंगों पर एक-दूसरे पर दबाव बनाते हैं , अंत में दिल पर दबाव पड़ता है। दिल पर थोडा सा भी दबाव पड़ने से धडकनों का रुकने का खतरा हो जाता है। अगर भाग्यवश तुरंत वैद्य के पास ले जाकर सड़े हुए शिशुशरीर को बाहर निकाला जाए तो माता की बचने की उम्मीद होती है । यह विषय इस प्रकार से होते हुए हम लोग अलग - अलग तरह से तुलना कर गर्भ में ही प्राण का आना या चले जाने का सोचते रहते हैं।

यदि माता का स्वास्थ्य ठीक रहे तो पूरी तरह से तैयार हुआ शिशु शरीर नौ महीने में गर्भ कोश में नसों के दबाव से बाहर की ओर धकेला जाता है । जैसे कि **एक थान से लिया गया कपड़ा दर्जी द्वारा एक व्यक्ति के पहनने योग्य जिस तरह से सिला जाता है , वैसे ही गर्भकोश से बाहर निकला शरीर भी जीवात्मा के निवास करने योग्य नसों के चैतन्य से तैयार होकर बाहर आता है ।** इस प्रकार से बाहर निकले शरीर में जीवात्मा का प्रवेश होता है । मरने के तुरंत बाद जीवात्मा बिना देर किए बाहर निकले शरीर को धारण करता है । इसे ही गीता शास्त्र में **"पुराने वस्त्रों को छोड़ नये वस्त्रों को धारण करना , जीव नाश हुआ शरीर को छोड़ कर, नया शरीर धारण करता है।"** परमात्मा ने कहा। जीव का नया शरीर धारण करना उनके कर्मानुसार ही होता है । जीव का किया हुआ पाप - पुण्यों के अनुसार ही नया शरीर लब्ध होता है । एक माता के गर्भ से बाहर निकला शरीर को धारण करने के लिए जीवात्मा के लायक , जीवात्मा पूराने शरीर से निकल कर प्रसवित हुए शरीर में प्रवेश करता है । माता के गर्भ से बाहर निकलने वाला शरीर का सिर बाहर निकलने मात्र से ही उस शरीर में जीव का प्रवेश होने

की संभावना हो सकती है। इसलिए थोड़ा बाहर निकले शरीर में भी प्राण आने से शिशु चिल्लाना शुरु करता है । कुछ जगहों में एक मिनट से लेकर 1 घंटा या दो घंटे तक शिशुशरीर में प्राण का न आने की संभावना होती है। उसका कारण उस शरीर में प्रवेश करना जीवात्मा का पुराने शरीर को छोड़ने में देर होना हो सकता है। जैसा कि उस शरीर में प्रवेश करने वाला जीवात्मा दूसरे स्थान में मरने में देर होना। इसलिए यहाँ भी शिशुशरीर में बाहर निकलने के बाद प्राण के आने में कुछ घंटों का समय लगने के संदर्भ भी हैं। 12 घंटों के बाद प्राण के आने की घटनाएँ भी देखी जा सकती हैं ।

प्रसवित शरीर में जीव के देर से आने का कारण से अनभिज्ञ ग्रामीण प्रांत की दाईयाँ, मावा में प्राण होता है सोच कर मावा पर पानी डालकर थपथपाती हैं। अनभिज्ञता से यहाँ की दाईयाँ मावा को पानी से थपथपाती है , जबकि जीवात्मा दूसरे जगह से आकर शरीर में प्रवेश करता है। जीव का प्रवेश होते समय में श्वास का भी शरीर में प्रवेश होता है। इसलिए पहली श्वास से जन्म का होना कह सकते हैं। शिशु शरीर में जीव का प्रवेश होते ही शिशु चिल्लाना शुरु करता है। और तब दाईयाँ मावा में से प्राण शिशु में आ गया है सोचकर नाभि को काटती हैं। प्राण के आने से पहले नाभि को काटने से, मावा में से प्राण शरीर में नहीं आयेगा ऐसा उनका विश्वास हैं। इसलिए प्राण आने से पहले नाभि को नहीं काटती हैं।यदि प्राण आने से पहले नाभि को काटा जाय तो, उस शिशुशरीर में प्राण का न आना सत्य है। परन्तु मावा में से प्राण का आने की बात करना एकदम असत्य है ।

नाभि को काटने के पश्चात प्राण के न आने का कारण यह है कि नया अंकुरित हुआ इमली का अंकुर को , बीज में से निकला दाल जिस तरह आहार शक्ति प्रदान करता है उसी तरह से नया-नया सा बाहर निकला शरीर में जीवात्मा का प्रवेश होने तक मावा पर आधारित होकर शिशु शरीर में रक्त को जमने से रोकता है । उस तरह से वह कुछ देर ही रोक सकता है । जीव का प्रवेश होते ही श्वास और रक्त का प्रसरण शुरु हो जाता है और फिर मावा की आवश्यकता नहीं पड़ती है । अगर जीव के प्रवेश से पहले नाभि को काटें तो रक्त ठंडी होकर शरीर में जमकर जीव के लिए प्रवेश करना तथा श्वास के चलने में अयोग्य होता है । इस कारण पहले नाभि को काटने की पद्धति गलत है । यदि अनभिज्ञ लोग पहले ही नाभि को काट दें तो उस शरीर में रक्त ठंडी पड़ने के 1 मिनट के अंदर जीवात्मा प्रवेश कर सकता है । एक मिनट के अंदर प्रवेश न करें तो उस शरीर में रक्त जमकर शरीर निर्जीव हो जाता है । इस वजह से विज्ञ या अविज्ञ लोग प्राण के आने से पहले नाभि को काटते नही हैं । नाभि को पहले न काटने की वजह मावा से प्राण का आना , अनेक लोगों को विश्वास करते है ।इसलिए दाईयों की बातें सुनकर **"ऐ दाई माँ , आप लोग छठ्वाँ माह में ही शिशु में प्राण का आना कहती है न , तो फिर माता के प्रसव समय में शिशुशरीर के अन्दर में आया प्राण , शिशु में आया था ? या मावा में ? शिशु में प्राण आया होता तो वह शिशु में न रहकर मावा में क्यों गया , वापस शरीर में क्यों लौटा?** यदि पूछा जाय तो वें जवाब नहीं दे पायेंगीं ।

अपने जन्म के बारे में स्वयं को ही न मालूम होना अज्ञान के अंधकार में रहकर अंधेरे में रखी वस्तु के बारे में कल्पना करने जैसा है । अनभिज्ञ रहे जन्म के बारे में कुछ लोग छठवाँ माह में ही जीव माता के गर्भ में शिशु में प्रवेश कर गत जन्म को याद करके

शिशु दुखी होता है, कुछ लोगों का कहना है क्या ऐसा हो सकता है आप ही सोचिए ? पूर्व काल में जन्म होने के बाद में ही प्राण के आने का विश्वास किया करते थे । परमात्मा ने गीता में कहा था सारे धर्म अधर्म में बदल जाऐंगे, इसीलिए शायद अब लोगों ने जन्म से पहले ही प्राण का आना कह रहे हैं । प्राचीन काल में, जन्म लिए शरीर में प्राण के आते समय को जीव का जन्म होने का हिसाब कर, उसी हिसाब से जन्म-कुंडली बना कर देखा करते थे। अब भी ऐसी पद्धति है । ज्योतिषशास्त्र के अनुसार भी शरीर में जब पहला श्वास प्रवेश करता है , उसी समय को जन्म का होना समझते थे। इस काल के ज्योतिष भी प्रसव होने के समय को ही जन्म होने में गिन रहे हैं। सही मायने में, जन्म तथा श्वास शरीर में प्रवेश करते समय में होता है । इसी हिसाब से सही ज्योतिष का पता लगता है । वर्तमान में प्रसव समय को ही जन्म के रुप में गिना जा रहा है । इसलिए भविष्य का ठीक से पता नहीं चल पा रहा है । छठवाँ माह में जीव का नये शरीर में प्रवेश मान कर ज्योतिषी लोग उसे जन्म में गिनती कर सकते थें, लेकिन ऐसा न कर प्रसवित समय लेकर गिनती कर रहे है। इससे सिद्ध होता है धर्म अभी पूरी तरह से नाश नही हुआ अभी भी थोड़ा सा बचा हुआ है ।

आज के शरीर शास्त्रज्ञों तथा डॉक्टरों को इन विषयों में अनेक शंकाएँ हो सकती है क्योंकि उनके पढ़े पढाईयों में पुरुष के शरीर में तैयार हुए वीर्य में वीर्य कणों में ही प्राण का होने की जानकारी दी गयी । इस वजह से एक वैद्य ने हमारे इस बोध (ज्ञान) को सुन कर एक व्यक्ति से मिल कर " उनका कहना पूरी तरह शास्त्र विरुद्ध है। हम शरीर शास्त्रियों और डॉक्टरों के होते हुए हम लोगों से भी अधिक क्या उनको जानकारी हो सकती है ? प्रसव के बाद शरीर में प्राण आना पूरी तरह असत्य है । छठवाँ माह में प्राण का

आना अन्य वेदान्त वादियों का कहना भी क्या असत्य ही होगा। पुरुष वीर्य में वीर्यकण जीव सहित होता है। जीव सहित वीर्यकण का स्त्री शरीर के रजोकण से मिल शरीर रुप में परिवर्तित होकर नौ माह के बाद जीवित माता के गर्भ से बाहर निकलता है। जीव रहित आने की बात कहना एकदम गलत है। वीर्य में वीर्यकणों में जीव के होने का हम अनेक उदाहरण दिखा सकते हैं। जीवित जंतु के शरीर से वीर्य को निकाल कर, कुछ दिनों तक बाहर अनुकूल वातावरण में रख कर आवश्यकता पड़ने पर उस वीर्य को स्त्री जंतु के योनि में छोड़ कर उसका गर्भ धारण करवाते हैं" बातें कर रहे थे। वीर्य में प्राण होने का उस व्यक्ति को पूरा विश्वास था, अत्यधिक ठंडे वातावरण में यानि 0 से 4 सेलसियस तापमान में एक फ्लास्क से टेस्ट ट्यूब जैसी एक काँच के कमरे में सुरक्षित किया हुआ वीर्य को निकाल तुरंत काँचं के पट पर रख, माइक्रोस्कोप (सूक्ष्म दर्शीनी) से देखा जाय तो, एक बूंद वीर्य में सिर और पूँछ वाले वीर्य कण असंख्याओं में, वे संचलन होकर पूँछ हरकत करते हुए आगे की ओर तैरते हुए नजर आते हैं, यह देख कर वह व्यक्ति वीर्य में वीर्य कणों में प्राण होने को पूरी तरह से विश्वास कर रहा है। वीर्य में वीर्य कण के चित्र को आप नीचे देख सकते हैं।
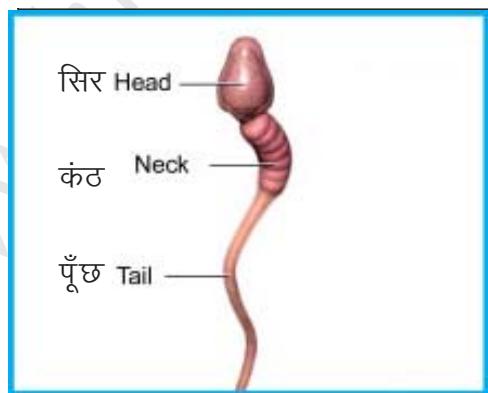
वीर्य में वीर्यकणों को हिलता हुआ देख कर उस व्यक्ति ने वीर्य में चेतन होने का , प्रसवित होने के बाद जीव के आने का कहना झूठा हो सकता है सोच कर , उन्होंनें हम से मिल कर पुछा - स्वामीजी , जीव जन्म लेने का विषय को आपके कहे बोध सुन कर मैंने एक परिशोध में, मैंने वीर्य में प्राण का होना देखा था। वीर्य में वीर्य कणों में पहले से ही जीव के होते हुए , प्रसवित होने के बाद जीव के आने की बात हमें संशय में डालता है। अगर प्रसवान्तर जीव का आना मानें तो वीर्य कण में हरकते होते हमने आँखों से देखा है , यह हमें संशय की ओर ही इशारा कर रहा है। इस वजह से आप का कहा बोध कहाँ तक सच है ? अथवा डॉकटरों द्वारा कहा और दिखाया गया को सच मानें ? कौन सा सही और कौन सा गलत की संदिग्ध अवस्था में हूँ । इस विषय में आपका क्या कहना है " कहकर हमसे प्रश्न किया ।

इससे पहले भी आध्यात्मिक ग्रंथों में छठवाँ माह में ही जीव आने का विषय सच नही है , प्रसव के बाद जीव आने को हमने अपने सिद्धांत में बतलाया था। अब वैद्यों ने वीर्य में ही जीव होने का , अपने उद्देश्य की जानकारी दे रहे हैं । इसलिए उनके संशय को दूर करने के लिए नीचे विज्ञान के रुप में जानकारी दिया जा रहा है श्रद्धा से ग्रहण करें ।

जीव अदृश्य रुप में होता है । ज्ञान नेत्रों को मात्र ही दिखलाई पड़ता है । ज्ञान नेत्र न रहने वाले वैद्यों को हिलते हुए वीर्यकणों में चेतन होने का सोचते हैं किन्तु चेतन को देखा नही। हरकतों के होने मात्र से ही चेतन होना क्यों सोचा गया ? यदि कण हिलते रहने की वजह चेतन होने की कल्पना करें तो, बसें , रेलें भी चलती रहती है ? क्या उनमें भी चेतन होता है ? बिना मनुष्य के

अंतरिक्ष में सफर करते रॉकेट में क्या चेतन होता है? नही न। चलते हुए यंत्रों में जिस तरह से चेतन नहीं होता, उसी प्रकार हिलते हुए वीर्यकण में भी चेतन का न होना कह सकते हैं। इस संशय का निवारण करने के लिए वीर्य में वीर्यकण पुरुष शरीर में कैसे तैयार होते हैं संपूर्ण रुप से जानने की आवश्यकता है। इसलिए आज के शरीर शास्त्रज्ञों को तथा वैद्यों को अविज्ञ जनन सिद्धांत के बारें वर्तमान शरीर शास्त्रों का अनुसरण करते हुए जानकारी दे रहे हैं।

पुरुष शरीर में अंग के पार्श्व में रहने वाले भ्रूण में वीर्य तैयार होता है। भ्रूण जंतुओं में बड़ा तथा मनुष्यों में छोटा होता है। जंतुओं और मानवों अर्थात् पिण्ड द्वारा पैदा हुए सारे प्राणियों में वीर्य तैयार होता है। मनुष्य के भ्रूणों में 200 से ज्यादा लाब्यूलूलू नामक सूक्ष्म भाग होते हैं। हर लाब्यूलूलू नामक सूक्ष्म भाग में तह किया हुआ एक गुच्छे जैसी नलियाँ होती हैं। इसे हम वीर्योत्पत्ति नलियाँ कहते हैं। इस तह किए हुए नलियों में वीर्याणुओं की उत्पत्ति होती है। वीर्योत्पत्ति की सारी नलियाँ एकक होकर **एपिडेडिमिस** नामक एक बड़ी नली (Tube) उदर भाग के अंदर प्रवेश कर वहाँ एक थैली के रुप में विस्तृत होती है। वीर्य इस थैली में जमा होता है। इसलिए इसे वीर्याशय कहा जाता है। दोनों भ्रूणों से निकली नलियाँ वीर्याशय में विस्तृत हुई रहती है, वीर्याशय से नलियाँ निकल कर प्रोस्टेट नामक ग्रंथि में जाकर, वहाँ से मूत्र की नली में खुली रहती है। मानवों के बीज निर्माण का चित्र नीचे देख सकते हैं।
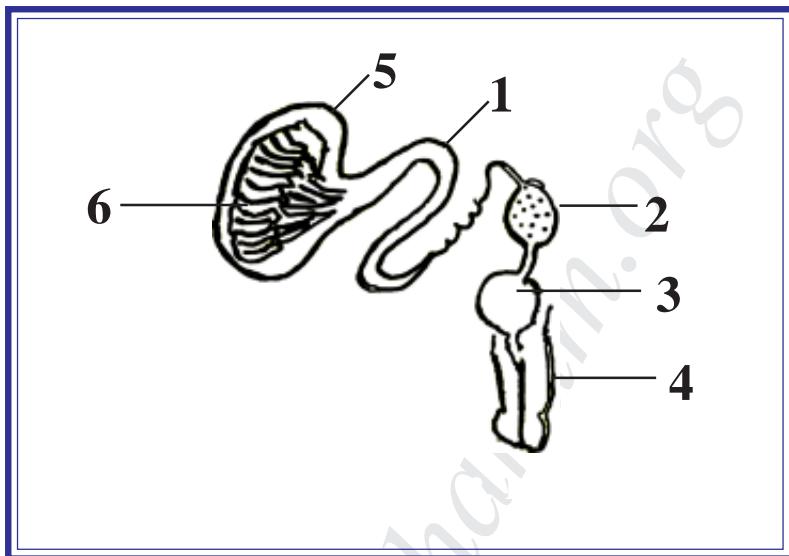
1. एपिै डिमिस नली, 2. वीर्याशय, 3. प्रोस्टेट ग्रंथि, 4. फ्लंग
5. बीज या भ्रूण , 6. लाब्यूललू

भ्रूण में तैयार हुआ वीर्यकण एपिडैडिमिस में पहुँच, वहाँ से वीर्य नली द्वारा वीर्याशय के अन्दर जाकर , वहाँ कुछ समय जमा होकर स्खलन काल में प्रोस्टेट ग्रंथि से निकलते समय स्त्रवित होकर दूध जैसी पतले द्रव से मिलकर मूत्र नली में आकर वहाँ **कोपर** नामक छोटी ग्रंथियाँ से तैयार हुआ द्रव को और मूत्र की नली में म्यूकस नामक परत को स्त्रवित कर **म्यूकस** नामक चिपचिपा पदार्थ को मिलाकर वीर्य सफेद चिपचिपे पदार्थ के रुप में बाहर आता है। इसे ही वीर्य कहा जाता है । अंग्रेजी में र्स्पम (Sperm) कहते हैं ।

वीर्य में वीर्यकणों का सिर, कंठ और पूँछ ये तीन भाग होते हैं । भ्रूण वीर्य नलियों में तैयार हुआ संचलन रहित होता है।

भ्रूण वीर्य नली में तैयार वीर्यकण पूरे परिमाण का नहीं होता है। एपिडेडिमिस में, वीर्य नली में तथा वीर्याशय में वीर्यकण का पूरा आकार तैयार होता है। वीर्यकण पूरा परिमाण होने के बाद ही संचलन होता है। पूर्ण आकार का होने तक चलन नहीं होता इसे मुख्य रुप से जानने की जरुरत है। पूरी तरह से तैयार वीर्य कण द्रव पदार्थ में 1 मिनट में 4 मिलीमीटर की रफतार से तैरता रहता है। वीर्य कण की पूँछ साँप की पूँछ हिलने जैसा हिलाने के कारण वीर्य कण आगे की ओर बढ़ता चले जाता है वीर्यकण अम्लगुण द्रव पदार्थों में संचलित नहीं होते। क्षारगुण द्रव पदार्थ में संचलित होते हैं। पुरुष के शरीर में वीर्यकण कुछ सप्ताह तक संचलित होकर रहते हैं। स्खलन होने के कुछ घंटों तक ही स्त्री शरीर में शीत - उष्णों की स्थिति में संचलित हो सकते हैं।

अब वीर्यकण के संचलन होने की वजह के विषय का परिशीलन करें तो वीर्याशय के अंदर ग्लूकोज अधिक मात्रा में द्रव स्त्रवित होता है। वीर्यकण के पूँछ को ग्लूकोज लगते ही पूँछ में चलन शुरु हो जाता है। वीर्यशय के अंदर द्रव में ग्लूकोज का स्त्रवित होना सामान्य होता है। इसलिए वीर्यकण अनेक दिनों तक पुरुष शरीर में संचलित रहते हैं। **द्रव में ग्लूकोज की कमी से वीर्यकण का संचलन नहीं हो पाता।** जैसे चूने के पत्थर में पानी लगते ही तुरंत जिस तरह से क्रिया शुरु होती है, नींबू के रस में सोड़ा मिलते ही जिस तरह चलन शुरु होता है, पारा में तापमान के लगते ही जिस तरह से चलन शुरु होता है, ठीक उसी तरह वीर्यकण के पूँछ में ग्लूकोज के लगते ही तुरंत पूँछ में कंपन शुरु हो जाता है। ग्लूकोज का वीर्यकणपूंछ का मेल नहीं होता। इसलिए वीर्यकण पूंछ में जैसे ही ग्लूकोज लगता है फौरन रसायनिक क्रिया होती है। यह क्रिया ही वीर्यकण पूंछ का चलन

है । वीर्यकण पूंछ में कंपन होने की वजह से पूरा वीर्यकण कंपित होता है । इतने मात्र से वीर्यकण में चेतन आने का कहना गलत है । सारे शास्त्रज्ञों को यहीं पर गलतफहमी होती है । **जब ग्लूकोज की कमी होती है तब वीर्यकण का चलन रुक जाता है इस विषय को मुख्य रुप से** ग्रहण करें ।

शास्त्रज्ञों के अंदाज के अनुसार वीर्यकण में अगर चेतन होता तो उसका चलन आगे की ओर ही क्यों बढ़ता रहता है पीछे या पाश्वरों में क्यों नही ।क्योंकि उसमें चेतन न होने की वजह से पीछे तथा पार्श्व में चलन नहीं करता , इस पर मुख्य रुप से गौर किया जाए । ग्लूकोज के साथ पूँछ का बेमेल होने की वजह से , पूँछ संचलित होने की वजह से , वीर्यकण आगे की ओर बढ़ते हैं । वीर्यकण पूँछ चलन से रसायनिक क्रिया की वजह से ग्लूकोज खर्च हो जाते हैं । ग्लूकोज खर्च होने से वीर्य द्रव में उसकी कमी होने से वीर्याशय ग्लूकोज स्त्रवित करता रहता है । इसलिए वीर्य कण का चलन होने में अंदर किसी प्रकार की रुकावट नहीं होती है ।

संभोग के समय में वीर्य स्त्री के योनि में स्त्रवित होता है । वीर्य में वीर्यकण का स्त्री गर्भ में रजोकण से संपर्क होने से स्त्री की गर्भ धारण करने की गुंजाइश रहती है । वीर्यकण को गर्भाशय में रजोकण से संपर्क के लिए बहुत दूर गमन करना पड़ता है । वीर्यकण के पूँछ का चलन वीर्यकण को आगे की ओर लेकर जाता है । वीर्यकण कुछ दूर सफर करने के बाद रजोकण से संपर्क करने का संयोग मिलता है । वीर्यकण का संचलित होना रजोकण से संपर्क के लिए ही निर्मित हुआ है । वरन्ा संचलित की आवश्यकता ही नहीं होती । स्त्री योनि में स्खलित होना वीर्य में

ग्लूकोज के रहने तक वीर्यकण संचलित होकर आगे की ओर बढ़ते हैं । ग्लूकोज की कमी होते ही रुक जाते हैं । वीर्यकण कंपन करते हुए कितना दूर जाया जा सकें इस विषय का निर्णय वीर्य द्रव में ग्लूकोज से होता है । स्खलन काल में प्रोस्टेट ग्रंथी अधिक ग्लूकोज को स्त्रवित कर सकती है । इस कारण से वीर्यकण योनि में संचलित होकर आगे की ओर बढ़ना कह सकते हैं ।

अम्ल गुण द्रव में ग्लूकोज होने के बावगुद रसायनिक क्रिया न होने से वीर्य चलन रहित हो जाता है । क्षार गुण द्रव में केवल ग्लूकोज के संपर्क से ही संचलित होकर आगे की ओर गमन कर सकता है । स्त्री योनि में द्रव में अम्लगुण अधिक मात्रा रहती है । इस कारण योनि में वीर्यकण चलन रहित होकर आगे की ओर गमन न करने की स्थिति आ जाती है । स्त्री योनि में गिरा वीर्य अम्ल द्रव के प्रभाव से व्यर्थ न हो्कर प्रोस्टेट ग्रंथी क्षार गुण युक्त सफेद द्रव स्खलन काल में स्त्रवित होती है । स्खलित होकर वीर्य में क्षारगुण युक्त द्रव में होने की वजह से वीर्य स्त्री योनि के अन्दर अम्ल द्रव में रुकावट न होकर दो तीन घंटे तक संचलित रहता है । वीर्य का सफेद होना प्रोस्टेट ग्रंथी ही कारण होती है गौर करें ।

स्त्री पुरुष के संभोग में हर बार वीर्यकण स्त्री रजोकण में नहीं पहुँच पाता । हर संभोग में वीर्यकण संचलित होने के लिए ग्लूकोज की मात्रा में कमी होना या योनि के पास अम्ल गुण द्रव का प्रभाव अधिक होना भी हो सकता है । अगर वीर्य में ग्लूकोज संपूर्ण हो क्षारगुण द्रव भी अधिक मात्रा में होने के बावजुद वीर्यकण पूरी तरह आगे की ओर गमन करने के बावजूद भी गर्भ कोश में उस समय रजोकण न रहे तो वह संभोग निश्प्रयोजन हो जाएगा ।

कभी - कभी सभी अनुकूल होने से ही वीर्यकण रजोकण से मिलता है । किसी एक के भी प्रतिकूल होने से वह संभोग असफल होता है । इसलिए हम कह सकते है कि मनुष्यों के द्वारा किए गए सारे संभोग सफल नहीं होते हैं । इसी वजह से कुछ लोगों में संतान देरी से होती है । पिण्डजों के अंतर्गत जंतुओं का एक पर्याय संभोग से ही सफल होकर संतति होती है । अत; हम जानें है कि जंतु के वीर्य में क्षार गुण द्रव का अधिक रहना तथा वीर्य में ग्लूकोज भी अधिक होता हैं । मादा जंतु में रजोकण तैयार होते पर उस जंतु के शरीर में बदलाव देख कर पुरुष जंतु आकर्षित होता है । उस बदलाव को देखते ही नर जंतु में वासना गुण उत्पन्न होती है । मादा जंतुओं में भी रजोकण के तैयार होते ही वासना की लालसा पैदा होती है । तभी नर जंतु के लिए ललायित होती है । उस स्थिति को दिल आना कहते हैं । रजोकण के तैयार होने से ही संभोग होता है तथा उस वीर्य में कणों को आगे जाने में अनुकूलता होती है । इस वगह से जंतु के संभोग एक पर्याय होने से ही तुरंत सफल हो जाता है । मनुष्य के संभोग में वीर्यकण के लिए अनेक रुकावटें होती हैं । इसलिए मानवों का संभोग अनेकों बार होने पर भी वह सफल नहीं हो पाता है ।

वीर्यकण शरीर के तापमान में ग्लूकोज से मिलकर रसायनिक क्रिया से संचलित होता है । वीर्यकण ग्लूकोज और रसायनिक क्रिया को तापमान की आवश्यकता होती है यहाँ मालूम हुआ । शरीर के तापमान में थोड़ा बहुत अधिक उष्ण होना परवाह नहीं । अत्यधिक तापमान में रसायनिक क्रिया नहीं होती है तथा वीर्यकण खराब हो जाते हैं । उसी प्रकार से शरीर के तापमान से कम उष्ण होने से भी वीर्यकण, ग्लूकोज और रसायनिक क्रिया नहीं होती है । लेकिन अत्यधिक शीतल होने पर भी रसायनिक क्रि

या नहीं होती है। अधिक शीतल में वीर्यकण खराब नहीं होते है। आज के तापमान के हिसाब से 0^0 सेलसियस शीतल मे रखने पर भी वीर्य खराब नहीं होते हँ। उस शीतल में वीर्य के अंदर रसायनिक क्रिया न होकर रुक जाती है। लेकिन वीर्यकण खराब नहीं होते हैं। रसायनिक क्रिया न होने से वीर्य में ग्लूकोज खर्च न होकर वैसे ही रह जाते हैं। इस वजह से वर्तमान समय में वीर्य को बाहर "0^0 **सेलसियस**" ठंडक प्रदेशों में स्टोर किए जा रहे हैं। स्टोर किया हुआ वीर्य को वापस ताप लगते ही फिर से रसायनिक क्रिया होकर चलन शुरु हो जाती है। इसलिए वीर्य को आवश्यकता पड़ने पर संतान उत्पति के लिए उपयोग किया जाता है। इस कार्य को पशुओं के साथ अधिक हो रहा हैं।

आज के शास्त्रज्ञों को ज्ञान नेत्र या सूक्ष्म दृष्टि नहीं होती है। इस वजह से उनके सारी भावनाएँ स्थूल परिशोध पर ही निर्भर रहती है। वीर्यकण के हिलने भर से उनमें प्राण होने का अनुमान लगा लेते हैं। उन्हें जीव के विषय में जानकारी नहीं है। जीव एक स्थान में निवास करने के लिए उनके साथ कितने भागों (शक्ति भाग) का होना अनिवार्य हैं इस विषय में उन्हें जानकारी नही है। जीव एक वीर्यकण में ही नहीं बल्कि, जिस शरीर में निवास करें वहाँ पंच महाभूतों का होना अनिवार्य है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से तैयार हुए मन, बुद्धि, चित्त तथा अहं आदि 24 भाग जिस स्थान में रहते हैं, वहीं जीव निवास करता है। जीव मरण से पुराने शरीर को छोड़, जन्म से नये शरीर को धारण करना परमात्मा ने गीता में वर्णन किया था। तथा नये शरीर में बाल्य, यौवन, कौमार्य, वृद्धावस्था के दशाओं का होना कहा गया। लेकिन वीर्यकण के रुप में गर्भ में वृद्धि होने का वर्णन नहीं है। जीव का धारण किया गया शरीर स्थूल तथा सूक्ष्म दो भागों में है। इन दो भागों में स्थूल भाग

न रहने पर भी , सूक्ष्म भाग होने से उसमें जीव निवास कर सकता है। लेकिन सूक्ष्म के न होने से जीव निवास नहीं कर सकता। जीव के निवास करने का विधान संख्या योग को जानने वाले मात्र योगी ही जान पायेंगें। आजकल के डॉकटरों, शास्त्रज्ञों इससे अनभिज्ञ हैं। जीवात्मा को ज्ञान नेत्र योगी मात्र ही देख सकते हैं। डॉकटरों और शास्त्रज्ञों अपने स्थूल नेत्रों से नहीं देख सकते।

वीर्यकण का पूँछ तथा सिर होना हम बतला चुके हैं। पूँछ संचलनता से सिर के भाग को आगे की ओर धकेल कर ले जाती है। पूँछ वीर्यकण सिर के भाग को आगे की ओर ले जाना वाहन जैसा लगता है। वीर्यकण में सिर ही संतान होने का कारण होना हम जानें हैं। इसके पहले वीर्यकण के पूँछ के बारे में जानकारी दी गई। अब उसके सिर के बारे में जानेंगे। वीर्यकण के सिर के अंदर के भाग में एक गोलाकार भाग होता है। यह गेंद जैसी होती है। उस गोलाकार कण में एक प्रकार का प्रकाश होता है।

परिशोध कर गोलाकार भाग में प्रकाश को देखा जा सकता है। यह गोलाकार भाग स्त्री गर्भ में रजोकण से मिलकर शरीर के रुप में परिवर्तित होने के लिए अनुकूलता से निर्माण हुआ है। यही पुरुष वीर्य के अन्दर का भ्रूण या बीज कह सकते हैं।

स्त्री गर्भ कोश में ओवरी (Ovary) नामक भाग में रजो कण तैयार होते है। रजोकण ओवरी में महीने में एक ही तैयार होता है। रजोकण को अँगरेजी में ओवम (Ovum) भी कहते हैं। यह रजोकण प्रोटोप्लाजमा नामक पदार्थ से तैयार होता है। यह बादाम के आकार की ओवरियाँ स्त्री गर्भकोश में गर्भाशय के पार्श्व में

दोनों ओर रहती हैं । ओवरी में तैयार हुए रजोकण गर्भाशय के पास के नली में जाकर रहता है । पुरुष वीर्य में वीर्य कण संभोग होने के बाद योनि से आगे की ओर संचलित होकर बढता हुआ , विकसित पुष्प की आकृति के भाग में प्रवेश कर, वहाँ के नली द्वारा गर्भकोश में जाकर गर्भाशय के अगले वाले भाग के नलीमंडली रजोकण से मिलन करती है। रजोकण तथा वीर्यकण के मिलन को ही गर्भधारण कहते हैं। रजोकण से मिलकर वीर्यकण वापस गर्भाशय में आकर , उसमें के चिपचिपे पदार्थ से तैयार हुआ परतों में घुस कर स्थान बनाकर शिशु के रुप में वृद्धि होता है ।

स्त्री रजोकण से वीर्यकण मिलने से वीर्यकण के सिर भाग में गोलाकार कण अनेक कणों में विभाजित होकर (Mitosis) , वे सारे कण मिलकर एक शरीर के रुप में तैयार होना शुरु हो जाता है । वीर्यकण का अनेक भागों में विभाजित होना भी रसायनिक प्रक्रिया के अंतर्गत होना हम लोगों ने जाना । वीर्यकण स्त्री शरीर जनित प्रोटोप्लाजमा रजोकण से मिलते ही यह रसायनिक क्रिया होती है । वीर्यकण सिर में गोलाकार भाग तथा स्त्री के रजोकण में रसायनिक क्रिया अनुकूल पदार्थों से तैयार होना हम लोगों ने जाना । ये दोनों पदार्थ जीव रहित होते हैं याद रखें। ये दोनों पदार्थों के मिलने से होने वाली रसायनिक क्रिया में वीर्यकण अनेक कणों में बँटकर उन सारे कण एक समूह में होकर , शिशु शरीर के रुप में तैयार होता है । गर्भोत्पत्ति होने के तीसरे महीने से गर्भाशय में वीर्यकण का वृद्धि होना परत से सटी रक्त से भरी थैली परत निर्मित होती है इसमें की रक्त नली माता में रक्त नली की शाखाएँ से जुडी रहती है । इस रक्त नली से निकली नाड़ियाँ नाभि रस्सी के रुप में शिशु के नाभि से जुड़ जाती है । शिशु शरीर में हो रहे कार्यों को जरुरत के मुताबिक ऑक्सीजन, खाद्य पदार्थ और

विटामिनों को नाभि द्वारा ही पहुँचता है । गर्भ धारण होने के पश्चात 280 दिनों में शिशु शरीर पूर्ण रुप से तैयार हो जाता है।

गर्भ होने के बाद ओवरी के एक भाग में गर्भरक्षक रस तैयार होकर रक्त में मिल जाता है । उस रस में प्रोजेस्टीरॉन नामक हॉरमोन रहता है । वह हॉरमोन गर्भकोश के ऊपर काम कर रहे नाड़ियों को ताकत प्रदान कर गर्भस्त्राव होने से बचाव करता है । प्रोजेस्टीरॉन अच्छे से तैयार होने के लिए माता को अपना स्वास्थ्य का ख्याल रखना पड़ता है । प्रोजेस्टीरॉन ठीक से न बनाने वाला माता शरीर , गर्भ की वृद्धि में अस्वस्थ्य होती है । प्रोजेस्टीरॉन न बनाने वाला शरीर में गर्भ स्त्राव होता रहता है जानिए। ऐसे महिलाएँ गर्भ स्त्राव को रोकने के लिए प्रोजेस्टीरॉन हॉरमोन इंजेक्शन के रुप में ले सकती हैं।

माता शरीर में ब्रम्हनाड़ी से निकली कुछ नाड़ियाँ गर्भकोश में आश्रय लेती है । ये नाड़ियाँ वीर्यकण को शरीर के रुप में बदलने में कौन सी आकृति का तैयार होना है निर्णय लेती है । ये नाड़ियाँ ही शरीर की जिस तरीके से पोषण करती है उसी तरीके से पोषण कर प्रसवित करती है । ब्रम्हनाड़ी से निकल कर नाड़ियाँ ही शिशु शरीर को गर्भाशय में हरकतें करवाने का काम करती है । उन नाड़ियाँ में चैतन्य शक्ति कम प्रसार होने से गर्भाशय में हरकतों में कमी से, शिशु शरीर क्रम पद्धति से बढ़ता नहीं है । माता के अस्वस्थता के कारण से गर्भ में शिशु में हरकतें कम होने से , वह शिशु क्रम पद्धति से न बढ़कर कमर से ऊपर की ओर अधिक बढ़कर पैर कम बढ़ते हैं । कुछ लोगों में कमर से नीचे का भाग अधिक लम्बा होकर कमर से ऊपर की ओर शरीर कम परिमाण में बढ़ती है , कुछ का सिर बड़ा होता है , कमर का बड़ा या , छोटा

होना, हाथों का छोटा या लम्बा होना ऐसे अनेक प्रकार के परिवर्तनों को देखें तो शिशु शरीर सही तरीके से बढोत्तरी न होने का पता चलता है । अव्यवों का क्रमबद्धता से बढ़ने के लिए ब्रम्हनाड़ी में चैतन्य की आवश्यकता होती है , ब्रम्हनाड़ी में चैतन्य के न होने से शरीर न बढ़ता है न हिलता है और न ही आकृति का रुप लेता है ।

आज के शास्त्रज्ञों ने पुरुष के वीर्यकण और स्त्री के रजोकण को प्रयोगशाला में मिला कर उसे अनुकूल वातावरण और अभिवृद्धि के लिए पोषक पदार्थों, रक्त का प्रसार कराकर वीर्यकण को रजोकण से मिलाकर रसायनिक क्रिया द्वारा विभाजित होकर मांस के कण का थक्का थोडा बढ़कर रह जाता है । शरीर पूरी तरह न बढ़कर , तैयार हुआ शरीर एक मांस के थक्का के रुप में रह कर , कोई आकार नहीं बन पाया । इस परिशोध से यह सिद्ध होता है माता के शरीर में ही आकृति बनकर बढ़ता है, अगर ऐसा न होने से शरीर की कोई आकृति नही बन पाती है । ब्रम्हनाड़ी के बिना स्पर्श से शरीर नही बन सकती है इससे अनभिज्ञ शास्त्रज्ञों ने परिशोध कर उसमें असफल होकर हम लोगों से भी बड़ा परमात्मा है अंतत; स्वीकार किया । अगर उनके परिशोध में शिशु की एक आकृति बन कर उनमें जीव प्रवेश किया होता तो लोग कहते हम से बड़ा दूसरा कोई परमात्मा है ही नही ।

इतना सब जानने के बाद भी कुछ लोगों को संशय से **"हिरण्य कश्यप का पुत्र प्रहलाद ने, माता के गर्भ में ही नारायण मंत्र को नारद द्वारा सुना था न , माता के गर्भ के अन्दर प्रहलाद में जीव नहीं था तो नारायण मंत्र को कैसे सुना "** पूछ सकते हैं । इसका जवाब है । अगर उनके कथन के अनुसार सोचा जाय प्रहलाद को गर्भ

में प्राण था तो बाहरी बातों को गर्भ के अंदर कैसे सुनाई देगा ? वैसे सुनाई पड़ा होगा मानें तो भी गर्भ के अन्दर शिशुओं को बाहरी लोगों द्वारा बोधित किया बोध मालूम होना चाहिए था , इस तरह से अंदर में मैने सुना था का कहने वाला, सुनने को कहने वाला कोई नहीं है , परिशीलन करने से पता चलता है अनुभव कि कमीं से कवियों की कही बातें ही प्रहलाद का विषय था, मालूम पड़ता है। ब्रम्हविद्या की जानकारी केवल योगियों को ही रहती है। भाषा पंडितों तथा कवियों को ब्र म्हविद्या के बारे में कुछ भी बता नहीं सकते । इसलिए ज्ञान दृष्टि न रखने वाले कवियों की लिखी बातें पूर्णतः असत्य है ।

प्रहलाद का विषय पुराण के अंर्तगत है । पुराण केवल कल्पित है । विष्णु के बारें में लिखने के लिए कवियों ने अपनी मन–मर्जी से गढी कथाएँ ही प्रहलाद का विषय है। इस तरह की कई कथाएँ देख , इतने महान लोगों द्वारा लिखे विषयों में सच्चाई न होकर असत्य होगा क्या, अन्य कवियों का कहना था। इस प्रकार से लिखना शुरु कर शास्त्र को पूरी तरह से हानि पहुँचाई। मेरा इतना सब कहने के बावजुद मेरे बातों को अनसुना कर धर्म क्या होता है ? अधर्म क्या होता है ? को ग्रहण न करके अधर्म तर्कों को करने वाले परमात्मा ने गीता में वर्णन किए विषयों के विरोधी हैं।

हमारे बतलाए गए बोध जीव तथा आत्मा से संबंधित विषय है, इसलिए यह जीवयुक्त समस्त प्राणियाों पर लागू होता है। जन्म एक मनुष्यों के लिए ही नहीं बल्कि समस्त प्राणियों का भी होता है। इस कारण से कीट-कीटाणु, पशु , पक्षी तथा मृग आदि पर भी हमारा बोध लागू होता है । मेरे इन बातों को सुन कुछ लोग संशय से " मुर्गी का अंड़ा बिना प्राण के बाहर निकलता है, अगर बाद में उसमे प्राण आएगा सोचें तो, लेकिन वह चलन रहित होता है। चलनरहित अंड़ा में

प्राण नहीं होता सोचें तो अंड़ा में से निकला बच्चा जीवित होना हम देखते रहते हैं। अंड़ों से जनमें जीवों पर आप के कहे बोध कैसे लागू होगा ? अंडे में जीव था या गर्भ से बाहर निकला अंड़ा में जीव पहुँचा " सवाल कर सकते हैं। इस संशय के निवारण से अंड़जों के सारे विषय समझ मेंआ जायेंगें। इसलिए मुर्गी के अंड़े के विषय में जानकारी करेंगे ।

अंड़ों से जनमें प्राणी तथा पिण्ड़ों से जनमें प्राणी के जन्म के विषयों में थोडा अंतर होता है । जन्म के विषय में अण्ड़ज तथा पिण्ड़जों में अंतर होने पर भी , सिद्धांत तो सबके लिए एक ही होता है । अण्डजों का तथा पिण्ड़जों का और धरती से उद्भव हुए पर भी , पहले श्वास से ही जन्म होने का सिद्धांत लागू होता है । मुर्गी का जन्म विवरण देखें तो मुर्गी का यौवन दशा आते ही तुरंत शरीर में कुछ पदार्थ तैयार होकर गोलाकार आकृति धारण कर दिन प्रति दिन अभिवृद्धि होकर अंड़ाकृति लेता है । मुर्गी के शरीर में डिम्ब के आवश्यक पदार्थ तैयार होते समय में मुर्गी मुर्गें से संबंध स्थापित होता है । मुर्गी से संपर्क होते समय में उस संपर्क के फलस्वरुप एक पदार्थ मुर्गी के शरीर में डिम्ब के लिए तैयार हुआ पदार्थ से मिलता है। इस तरह से मुर्गी के शरीर में तैयार हुए पदार्थ अंड़ों में बदल कर बाहर आता है । मुर्गी प्रतिदिन एक अण्ड़ को ही तैयार करती है। बाहर निकला अंड़ा का परिशीलन करें तो उसमें सफेदी और जरदी नामक दो पदार्थ दिखलाई पड़ते हैं। इन पदार्थों में एक दम प्राण नहीं होते हैं। इस वजह से अंड़े में प्राण न होना कह सकते हैं। पिण्ड़ज के बाहर निकलते ही तुरंत प्राण आने जैसा डिम्ब के बाहर निकलते ही प्राण उसमें प्रवेश नहीं करता है । यही है अण्ड़ज और पिण्ड़ज में अंतर । अण्ड़ के सारे पदार्थ निर्जीव होते हैं । ये पदार्थ अनुकूल वातावरण से बदलाव वाले होते हैं ।मुर्गी

का अंड़ा 40^0 सेंटीग्रेड तापमान में परिवर्तन होने वाले होते हैं। अन्य अलग - अलग जाति के अंड़ों कों अलग अलग तापमान की आवश्यकता होती है। अनुकूल तापमान सारे पदार्थों में रसायनिक परिवर्तन होकर अण्ड़ा का निर्माण होता है। अण्डे में मुर्गी के बच्चे के शरीर का तैयार होने में आवश्यक पोषक पदार्थों, विटमिनों तथा अन्य पदार्थों से निर्मित हुआ होता है। हाथों के बमों में रसायनिक पदार्थों का जिस तरह से भरा हुआ रहता है, उसी प्रकार से मुर्गी का अंड़ा भी रसायनिक पदार्थों से भरा हुआ होता है। हाथ के बम पर जैसे ही दबाव पड़ता है फट जाता है, वैसे ही अंड़ा को अनुकूल उष्ण के लगते ही बच्चे में परिवर्तन होना शुरु होता है।

मुर्गी अंड़ा के ऊपर सेतें समय में मुर्गी के शरीर की गर्मी अंड़ा को लगते ही अंड़ा के अंदर के पदार्थों का परिवर्तन होते हुए बच्चा सा तैयार होता है। अंड़ा में जरदी के भाग के मध्य में एक गोलाकार पदार्थ होता है। उसे उष्ण के लगते ही तुरंत परिवर्तन होने के लिए शुरु हो जाता है। मध्य भाग के पदार्थों को हम पुरुष के भ्रूण के रुप में गिन सकते हैं। इसलिए सफेदी और जरदी को स्त्रीकणों में गिन रहे हैं। अनुकूल उष्ण के लगते ही अंड़े में समाया हुआ पुरुष वीर्यकण स्त्रीकण पदार्थों से मिल कर, पुरुषकण वृद्धि होते हुए, कुछ दिनों में पूरा बच्चा बन कर तैयार हो जाता है। मनुष्यों के पुरुषकण गर्भाशय के अन्दर ही स्त्रीकण से मिलता है। मुर्गी के अंड़ा में उष्ण के लगते ही अंड़ा बीजकण में परिवर्तन होना शुरु हो जाता है। अंड़ा में पूरा बच्चा का शरीर को तैयार होने में 21 दिनों का समय लगता है। बच्चे में बदलने का समय सभी जाति के अंड़ों में समानता नहीं होती है। एक-एक जाति का एक-एक समय परिमिती होता है। 40^0 सेंटीग्रेड उष्ण से अधिक

उष्ण में अड़ा का पदार्थ खराब हो जाता है । इस वजह से गर्मी के मौसम में मुर्गी के अंड़ों से बच्चे कम बनते हैं । अंड़ा केवल मुर्गी सेने से ही नहीं बल्कि कहीं भी अनुकूल वातावरण में बच्चा बन सकता है । वर्तमान समय में अंड़ों से बच्चें बनाने के यंत्र उपलब्ध हैं । उन यंत्रों से अंड़ों को जरुरत के मुताबिक उष्ण पहुँचाई जाती है । इसलिए अंड़ा बच्चे में बदलता है इसे (Incubators) कहते हैं । कई स्थानों में घड़ों के अंदर अंड़ों को रखने से बच्चे में बदलने की घटनाएँ भी है । मुर्गे से बिना संबंध के मुर्गी अंड़ा देती है । इस प्रकार से दिए गए अंड़ों को सेतवाने से बच्चे नहीं बन सकते । इसकी वजह है उस अंड़े में पुरुष बीज नहीं होता है। अंड़े में सफेदी तथा जरदी के अलावा अन्य स्त्री पदार्थ तो हो सकते हैं । लेकिन जरदी के मध्य भाग में पुरुषकण नहीं रहता है । एक-एक अंड़ा एक -एक संपर्क से बनता है । एक ही संपर्क सारे अंड़ों में बीज नहीं हो सकते हैं। इस वजह से अंड़ा देने वाली मुर्गी एक प्रकार की सीटी बजाकर मुर्गे को आकर्षित करती है और प्रतिदिन संपर्क होता है ।

इंसानों के गर्भकोश में मावा में शिशु तैयार होने जैसा ही अंड़ा में भी अंड़े के अंदर बच्चे का तैयार होना होता है । मावा में तैयार हुआ शिशु में जिस तरह प्राण नहीं होता , वैसे ही अंड़े में तैयार बच्चे में भी प्राण नहीं होता । यहाँ मुख्य रुप से ध्यान देनेवाली बातें यह है कि मावा द्वारा प्रसवित हुआ शिशु में प्राण शिशु बाहर निकलने पर आता है । लेकिन अंड़े द्वारा तैयार हुआ बच्चे के शरीर में प्राण अंड़े से बाहर निकलने से पहले ही अंड़े में आता है । पिण्डजों में पहले श्वास से प्राण आता है । अंड़ों में भी पहले श्वास से ही प्राण आता है । निर्जीव बच्चा अंड़कवच को तोड़ कर बाहर नहीं आ सकता। अंड़कवच को तोडने के लिए शक्ति की आवश्यकता प्राण के होने से ही लब्ध होती है । इस वजह से

अंड़कवच को तोडकर बाहर आने के निमित्त से , बच्चे में प्राण अंन्दर ही आने का व्यवस्था परमात्मा ने करवाया। जीव के निवास योग्य शरीर जब तैयार होता है , तब ही उस शरीर में दूसरा कोई जीव पहले श्वास से प्रवेश करने का सिद्धांत आप लोगों को मालूम ही है । इस प्रकार से अंड़ा में तैयार हुए बच्चे के शरीर में जीवात्मा पहले श्वास से प्रवेश करता है । यहाँ कुछ लोगों को संशय हो सकता है । श्वास चलने के लिए हवा की जरुरत हो सकती है न , बाहरी हवा का अंदर न आने से मुर्गी का बच्चा श्वास कैसे ले पायेगा , लोग पूछ सकते है, इसका जवाब है । मुर्गी के शरीर में अंड़ा तैयार होते समय में अंड़े से बच्चे में परिवर्तन के आवश्यक सारे पदार्थ भरी हुई उन सारे पदार्थ एक परत में बंधित हुए होते हैं । उस परत और छिल्के के मध्य एक ओर थोड़ा सा खाली स्थल होता है । उसमें हवा भरी हुई होती है । अंड़ा में हवा कहाँ रहती है। नीचे चित्र में देख सकते हैं ।
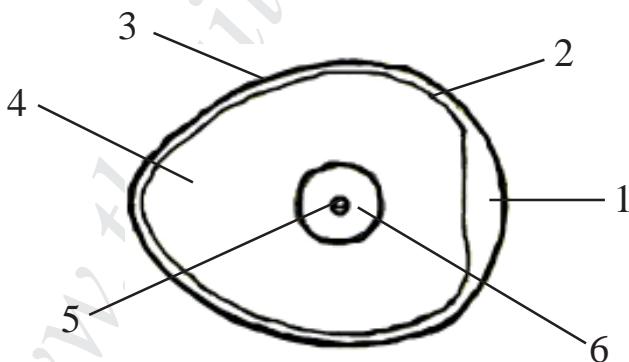
1. हवा का कमरा 2. पतली परत 3. अंड़कवच 4. सफेदी 5. पुरुष कण 6. जरदी

डिम्ब में पूर्ण रुप से तैयार हुआ बच्चे में जीवात्मा का प्रवेश होता है। बच्चा तैयार हुए अंतिम क्षण में पतली परत फटकर पूरा अंड़ा में बच्चे का शरीर आक्रमित करता है। परत फटने से हवा पूरे अंड़ा में व्याप्त हो जाती है। अंड़ा में हवा होने की वजह से जीव का प्रवेश बच्चे के शरीर में पहली श्वास से होता है हम लोगों नें ज्ञात किया। बच्चे के शरीर में प्रवेश किया जीवात्मा अंड़े के अंदर की हवा से साँस लेता है। इस तरह कुछ मिनटों तक श्वास चलने के बाद उस हवा में ऑक्सीजन समाप्त हो जाती है और तब श्वास चलने के बावजूद उस श्वास में ऑक्सीजन की कमी के कारण बच्चा बेचैन होकर छटपटाना शुरु करता है। असमंजस्य में छिलके को नाक से तोड़ने लगता है। बच्चे के छटपटाहट से नाक से छिलके को तोड़ते रहने से छिलके में छेद पड़ कर बाद में टूट जाता है तब बाहर निकलकर हवा में बच्चा जीवन जीता चला जाता है। इसी विधान से सारे अण्डजों का जन्म होना हम लोगों नें जाना। स्त्रीयों का गर्भस्त्राव हो जाने जैसा ही अंड़ा भी व्यर्थ हो सकता है। अंड़ा को तैयार करने में पदार्थों का अधिक - कम होने की वजह से या अंड़े से बाहर आने के बाद उष्ण मिलने में अधिक - कम होने की वजह से भी या अंड़ा अविकसित अंड़ा बन कर व्यर्थ हो जाता है। अब तक अण्डज के जन्म के बारे में जानें हैं। अण्डजों के विषयों में डिम्ब का प्राणहीन होने का विषय जाना गया। अभी हम भूमि से जन्में जीवों का जन्म कैसे होता है की जानकारी करेंगें।

भूमि से जनमें सारे पेड़ - पौधों को भूमिज कहा जाता है। मुर्गी का अंड़ा से जनमा बच्चे की तरह ही , बीजों से भूमिजों का जन्म होता है। मुर्गी के शरीर में तैयार हुए अंड़े में जिस तरह प्राण नहीं होता, वैसे ही बीजों में भी प्राण का न होने का कुछ लोगों को अजीब लग सकता है। लोगों को बीजों में प्राण होने

का यकीन पूरी तरह से रच बस गया है । कुछ लोग हमारी बातों को झूठला कर किताब को पढ़ना भी छोड़ सकते हैं । कोई विश्वास करें या न करें बीजों में प्राण न होना पूर्णत ; सत्य है ।

मुर्गी के शरीर में अंड़ा तैयार होने जैसा ही वृक्षों में बीजें तैयार होती है । वृक्षों में लगे कच्चे फल में ही बीजें तैयार रहती हैं । हर जाति के बीज दो भागों में विभाजित हुआ होता है । बीज अंकुरित होने के लिए कई पदार्थ कच्चे फल में ही तैयार होकर बीज में भरी हुई होती हैं। बीज के दोनों दालों में अंकुरित होने के आहार पदार्थों, अन्य कई रसायनिक पदार्थ तैयार होकर रहते हैं। अंड़े पर छिलका रहने जैसा ही , बीज एक परत से ढ़की हुई होती है । इस परत में एक जगह में छोटी सी गाँठ लगी होती है । वह गाँठ बीज के अंदर के दालों की परत से मिली हुई होती है । बीज के दालों के ऊपरी परत के जोड़ गांठ में "नोक " नाम से एक छोटा भाग होता है । यह नोक बीज के लिए अति मुख्य भाग है । इस नोक में पुरुष कण सेट (Set) रहता है । बीज में नोक को छोड़ दालों को स्त्री कणों में गिने जाते हैं । स्त्री पुरुष कणों की रक्षां के लिए हर जाति के बीज में एक परत रहती है इसे ही बीज रक्षक परत कहते हैं । छिलके रहित बीज का रक्षण न हो पाने से कणें खराब हो जाती है। इस वजह से छिलके रहित बीज अंकुरित नहीं होते हैं । बीज के एक स्थान में गाँठ का होना हम लोगों को मालूम पड़ा है। उस गाँठ के पास ऊपरी परत में छोटा सा छिद्र होता है। इस तरह के बीज को पूरा तैयार हुआ बीज कह सकते हैं । दाल न पकना , परत तैयार न होना , परत में छेद न होना , यह पूरी तरह से न तैयार होने वाली बीजों की किस्में हैं , सिद्ध होता है । इस प्रकार के बीज जन्म के लिए अयोग्य है । पूरा तैयार हुआ बीज में पानी के लगते ही बदलाव होने लगता है ।

भूमि में पके बीज में नमी लगते ही तुरंत वह पौधे में उगना शुरु हो जाता है।बीज के पास के छेद द्वारा पानी बीज के अंदर के भाग के नोक में लगता है। पानी के लगते ही नोक में बदलाव आकर बीज के पार्श्व दाल में भी बदलाव आता है। दालें नरम पड़ जाती है। बीज के नोक दोनों दालों को आधार बनाकर बढ़ना प्रारंभ करता है। तब बीज का ऊपरी परत नरम होकर फट जाता है। नोक से बढ़ने के लिए निकले एक भाग भूमि में जाता है। दूसरा भाग भूमि के ऊपरी ओर बढ़ता है। अंड़ा के अन्दर बच्चे में प्राण न होने के बावजुद भी जिस प्रकार से वृद्धि होता है, उसी प्रकार से बीज में प्राण न होने के बावजुद भी नोक के पास पुरुष कण वृद्धि होता है। यह पूरे बीज के अंदर की रसायनिक क्रिया है। इस तरह बढ़ते समय में बीज के अंदर के पदार्थों का अंकुरित होने में उपयोग होता है। पुरुषकण बीज के अंदर के पदार्थ को उपयोग कर पौधे में बदलता है। भूमि के ऊपर बढ़े हुए भाग में छोटे छोटे पत्तें तैयार होते हैं। भूमि के अंदर के जड़ भाग में छोटे - छोटे जड़ें बनती हैं। इस प्रकार से तैयार हुए पौधे में भी प्राण नहीं होता ,सिद्ध होता है। अब तक बीज के अंदर के पोषक पदार्थों से ही बदलाव का आना रसायनिक क्रिया के अंतर्गत है।

पौधे से पत्तें निकलकर विकसित होने तक उनमें प्राण न होना कह सकते हैं। पहले श्वास से ही जीवात्मा का प्रवेश होने के सिद्धांत के अनुसार ही पेड़ का पहले श्वास चलने तक प्राण नही आता है। अंकुरित हुआ पौधे के पत्तें में छोटे-छोटे छिद्र तैयार होने से जीवात्मा के प्रवेश के लिए पौधा योग्य होता है। पौधों में पत्तें, धड़ या तना पूरी तरह से तैयार होने के बाद, पत्तें में छोटे - छोटे छिद्रों होने के बाद , पहले श्वास से जीव का पौधे में प्रवेश होता है।पत्तें के नीचे छिद्रों द्वारा पौधे का साँस लेना

ज्ञात हुआ। पत्तें के रंद्रों में जब श्वास प्रवेश करता हो तभी जीव का उस पौधे में प्रवेश होना गिना जाता है। अण्डजों और पिण्डजों में प्राण आने के बाद उसमें प्राण आना हम आसानी से पहचान सकते हैं। लेकिन अंकुर में प्राण आने का श्वास का प्रवेश कब होता है, इसका कोई पता नहीं लगा सकता। अंकुरित बीजों में प्राण के आते ही हवा से पत्तें द्वारा श्वास लेना, जमीन से जड़ों द्वारा पोषक पदार्थों का लेना, पत्तें के ऊपरी भाग में सूर्य की रोशनी से कार्बोहाइड्रेट तैयार करना, आहार को बनाना, जीवन कार्य आगे बढ़ते रहते हैं।

स्त्रीयों में गर्भ स्त्राव होने जैसा, अंड़ो में खराब होने जैसा ही बीज भी खराब हो सकते हैं। अधिक गर्मी के कारण, बीज के अंदर की नमी सूखने से, पदार्थ के सड़ने स। बीज अंकुरित नहीं हो पाते हैं। छिलके रहित बीज का, सड़ें बीज का, और बहुत पुराने बीज भी अंकुरित नहीं हो सकते हैं। बीज के पदार्थों में अनुकूलता न होने पर पुरुष भाग यानि नोक अंकुरित नहीं हो पाती है।

भूमि के ऊपर के समस्त बीजों का जन्म ऊपर कहे अनुसार पहले श्वास से ही होने को हम लोगों ने जाना। समुद्र के जीव यानि जलचर पानी को पहले श्वास से लेती है। इस प्रकार से सारे जीव शरीर को धारण करते हैं। जीवात्मा साथ ही आत्मा होती है इसलिए आत्मा भी जीवात्मा के साथ नया शरीर धारण करती है ,मालूम रहें। नया शरीर क्या है, आत्मा का प्रवेश कब होता है मालूम हुआ न, आत्मा कैसे होती है नीचे श्लोक में देखेंगे।

<u>**निर्देश :**</u> *"वासांसि जीर्णानि "* भगवदगीता श्लोक का हमारे द्वारा कहा गया विवरण एकदम नया है। इसलिए हम चाहते है इस विषय में अच्छे से विचार कर समझें। फिर भी इसमें अनेक शंकाएँ उत्पन्न

होकर इसकी सत्यता पर प्रश्न लग सकता है। इस प्रकार की शंकाओं को हल करने के लिए कुछ वास्तविक घटनाएँ आप तक पहूँचा रहे हैं । लगभग 25 साल पहले ईनाडू दिन पत्रिका में संक्षिप्त में शीर्षक के नीचे **"गडूग्गाय"** नाम से प्रकाशित हुआ । इस प्रकार से है। इंग्लैंड के एक बड़े अस्पताल में एक स्त्री को प्रसव हुआ । जन्में मादा शिशु में घंटे भर से हरकत न होने पर , वहाँ के डॉक्टरों ने जाँच कर उस शिशु की गर्भ में ही मौत हो गई है घोषित किया । उसके बाद उस शिशु की बूढ़ी नानी ने आकर शिशु के बारें में पूछा । तब उन्हें शिशु की माता के पास खड़े लोगों ने शिशु गर्भ में ही मर गया है, उसे शवों के कमरे में रखा गया है बताया । उस बूढी औरत ने शिशु के चेहरे को देखने जाती हूँ कह कर शवों के कमरे में एक टब में रखे कपडे से ढ़कें शिशु के पास जाकर चेहरे पर से कपडा हटाकर देखा तो, शिशु जीवित था उसे उठा कर ले आई , चिल्लाते हुए उस शिशु को सबको दिखलाते हुए माता के पास लाई । इस विषय को जान कर डॉक्टरों ने आकर शिशु का परीक्षण कर असमंजस्य में पड़ गए ।उसके बाद अपने संरक्षण में महीने भर रखकर बाद में डिस्चार्ज कर भेजा दिया ।

इसी तरह की एक और घटना तिरुपति के गोस अस्पताल में भी हुआ । वहाँ के गलतफहमी की शिकार हुई एक महिला डॉक्टर ने मुझसे कैसे गलती हुई , सारी परीक्षाएँ करने के बाद ही शिशु में प्राण का न होने का निर्णय लिया था ।फिर शिशु घंटे भर बाद कैसे जीवित हुआ कहीं कोई गलतफहमी मुझे हुई होगी । उन्होंने हमारे **"जनन-मरण का सिद्धांत"** नामक पुस्तक को पढ़ने के बाद मुझसे मिल कर उनको कहाँ गलतफहमी हुई का पता लगा । इस विषय का जिक्र हमारी शिक्षा में कहीं भी नहीं है , इसलिए शायद गलती हुई होगी मानी , और तब मैंने उनसे प्रश्न किया

"हरकत न होने से शिशु कौन सी स्थिति में होने का सोचतीं हैं आप?" उनका जवाब था 'उसे बेहोश की स्थिति में होने की सोचते हैं ।और फिर उसके पैरों को पकड़कर उल्टा लटाककर पीठ पर थपकी देते हैं । तब भी हरकत न हो तो दो प्रकार के इन्जेक्शनों का उपयोग करते हैं। इसके बावजुद भी शिशु में हरकत न हो तो शिशु गर्भ में ही मर गया है निर्णय लेते हैं "उन्होंनें कहा , तब मैंने पुछा श्वास चलते हुए होश खोने को बेहोश कहते हैं न , बिना श्वास के होश खोने को बेहोशी नहीं कह सकते हैं न। बिना हरकत वाला शरीर में श्वास चलता है या नही , जाँच करने से इसका पता अवश्य आपको लगेगा । इस प्रकार के अनेक उदाहरणों को आप जनन-मरण के सिद्धांत के अंर्तगत आप देख सकते हैं ।

शिशु जीवित था , किन्तु मृत घोषित किया डॉक्टरों नें

(दिसम्बर 1-2001 ईनाडू, हैदराबाद)

सीताफल मंडी, नवम्बर 30 न्यूस टुडे नौ महीने गर्भ में रह कर कुछ ही देर में दुनिया में आने वाले नन्ही सी जान केबारें सोच कर एक माँ आनन्द - विभोर हो रही थी । इतने दिन गर्भ में रह कर गुदगुदी को अहसास कराने वाला, माँ के आँखों का तारा , ऐसे अनेक सपनों का साकार होने का समय आ ही गया । जन्म होते ही बच्चे की मौत की खबर डॉक्टरों से सुन कर माता का कलेजा फट गया । बच्चे के शव को डॉक्टर ने एक थैली में रख कर उनके अपनों से हस्ताक्षर लेकर उन्हें सौंप दिया । लेकिन बच्चे के पिता को आने में थोड़ी देर होने से उस कहानी में मोड़ा आ गया। रिश्तेदार बच्चे के पिता का इंतजार कर रहे थे इतने में थैली में कुछ हिल रहा था। यह कोई आश्चर्य जनक था या डॉक्टरों की लापरवाही , यह कोई दूर-दराज के गाँव में नही हुआ। राज्य में ख्याति प्राप्त गाँधी (Hospital) में हुई घटना थी । इसकी जानकारी कुछ इस से

प्रकार है - गुडुर के निवासी प्रकाश 25 रेणुका 20 साल भर पहले विवाह हुआ था रेणुका गर्भवती हुई । पहली बार गर्भ ठहरने से खर्च तथा श्रम की परवाह न करते हुए हर बार (Hospital) जाकर जाँच करवाती थी । प्रसव समय नजदीक आने से ब्रहस्पतिवार के शाम को गुडुर से आकर गाँधी (Hospital) में भर्ती हुई ।शाम 7 बजे रेणुका ने नर शिशु को जन्म दिया । डॉक्टरों ने जाँच कर बच्चा कमजोर पैदा होने की वजह से मर गया है कहा । यह सुन कर रेणुका रो-रोकर बेहाल हो गई ।उनके साथ में आई उनकी माता वीरम्मा को बच्चा मर गया है कह कर बच्चे को एक बोरे में रख कर अस्पताल के कर्मचारियों ने उन्हें सौंप दिया । सबूत के तौर पर हस्ताक्षर लेकर बच्चे को सौंपा गया । रेणुका का पति उस समय में बाहर गया हुआ था । वीरम्मा बच्चे के शव को उठा कर बेटी रेणुका को तसल्ली देते हुए दामाद का इंतजार कर रही थी ।एक घंटा बीत गया इतने में बोरे की थैली में कुछ हिलना शुरु हुआ । पास खड़ी एक महिला ने उसे देख कर वीरम्मा को बताया। थैली को खोल कर देखा तो बच्चा हिल रहा था। यह देख वीरम्मा और रेणुका की खुशी का ठिकाना न रहा। इतने में हरकतें रुक गई । इस विषय में डॉक्टरों को बताने पर वे वीरम्मा को डरा-धमका कर भेज दिया। फिर कुछ देर में बच्चा ने रोना शुरु किया। तब जाकर डॉक्टरों को होश आया । तुरन्त बच्चे को प्रिमेच्योर युनिट में भेजा गया । शिशु उस युनिट में चिकित्सा ले रहा था । अगर दामाद आने में देरी न हुई होती तो क्या हुआ होता सोच कर ही डर लग रहा है , रोते हुए वीरम्मा ने कहा। रेणुका और वीरम्मा कह रहीं थी उस थोड़े से समय में हम जिन हालातों से गुजरें हैं, बाबू जीवित नहीं है जान कर आत्महत्या कर लेने की सोची , रोते हुए रेणुका ने कहा ।अगर ऐसा हुआ होता तो दो जानें गई होती । तब उस पाप का भागीदार कौन होता? डॉक्टर आत्म-विमर्श करके देखें।

हर जगह डॉक्टरों ने अपनी गलतियों का समर्थन ही किया है स्वयं की जानकारी से कुछ अलग होता है विचार ही नहीं करते हैं। जीवित शिशु मर गया है कह देना , डॉक्टर तो कोई अंधे है नहीं । उन्हें भी विषय की जानकारी रहती है । कुछ न समझ पाने को मात्र गलतफहमी कहना पड़ रहा है । डॉक्टरों ने पहले जाँचते वक्त प्राण का न होना सच ही था , परन्तु बाद में देखा तो प्राण का होना भी सच था। इसमें कोई गलतफहमी नही थी ।

2) प्राण आने से पहले आया , निकल गया डॉक्टरों का कहना था

पिता का नाम	-	E राम मोहन गौड
माता का नाम	-	E वासवी
अस्पताल	-	गंगा अस्पताल
तिथि	-	जुलाई 22 2004
समय	-	6.30 AM

गर्भवती हुई श्रीमती वासवी जी ने गंगा अस्पताल (दिलसुख नगर, चैतन्य पूरी) में महिला डॉक्टर से चेकअप करवाया, गर्भस्थ शिशु स्वस्थ है उनके पति राम मोहन गौड़ को डॉक्टर ने बताया । बाद में कुछ महीनों में महीने पूरे होकर गर्भवती वासवी जी को दर्द आना शुरु हुआ । डिलिवरी होने वाला है सोच कर गंगा अस्पताल जाकर डॉक्टरों से मिलें । गर्भ में शिशु की हरकतें ठीक है , शिशु भी ठीक है डॉक्टरों ने कहा । डॉक्टरों की बातों को सुन कर राम मोहन गौड़ खुश हुए । कुछ समय बाद वासवी जी का प्रसव हुआ । प्रसव होने के 15 मिनट बाद पिता राम मोहन गौड़ को शिशु को दिखलाया । तब शिशु में हरकतें न होना, श्वास न चलना दिखालाई पड़ा। उस विषय को लेडी डॉक्टर से पूछे जाने पर शिशु का हार्ट

समस्या से जन्म हुआ, धीरे-धीरे श्वास ले रहा है , इसलिए बाहर दिखाई नहीं दे रहा कहा , तब राम मोहन गौड़ ने पुछा शिशु न हिल रहा है, नही चिल्ला रहा है। उनका जवाब था हार्ट प्रोब्लम वाले शिशु ऐसे ही होते है, भविष्य में, शिशु बड़ा होने पर भी ऐसी ही स्थिति रहेगी, ऐसे शिशु से माता - पिता को बहुत कष्ट होता है । यह बात सुनकर शिशु पर पिता को थोडी विरक्ति हुई । फिर भी निराश न होकर गर्भ में रहते समय आप के पास लाकर सारी परीक्षाएँ करवायी गई थी । उस समय गर्भ में शिशु स्वस्थ है कहा था पूछा । सारे प्रोबलम्स का पता परीक्षाओं से पता नहीं चलता कह कर (ICU) में बच्चे को भेज रहे हैं , शिशु बच भी सकता या मर भी सकता है कह दूसरे अस्पताल को फोन कर वैन को बुलाकर शिशु के नाकों में ऑक्सीजन लगाकर वहाँ से भेजा दिया। यह सब होने में 45 मिनट का समय लगा । शिशु पर से उम्मीद छोड़कर राम मोहन ने , उनकी पत्नी का स्वस्थ अच्छा रहें यहीं बहुत है सोच कर पत्नी को शिशु के विषय में कुछ न बताकर पास के कमरे में जाँच निमित्त डॉक्टरों ने रखा है कहकर टाल दिया । उसके आधे घंटे बाद में आपका शिशु मर गया है डॉक्टरों ने कहा । उस विषय में माता को मालूम हुआ तो शॉक लग सकता है सोच पति ने पत्नी को नही बताया लगभग 20 दिन बीत गए ।

यहाँ हुआ विषय यह है कि 15 मिनटों के बाद भी न हिला, न चिल्लाया शिशु को देख डॉक्टरों को कुछ समझ में न आया , श्वास एकदम से न चलने के बावजूद भी शिशु में धीरे - धीरे श्वास बाहर दिखाई न देने के अंदाज में ले रहा है कहना पहली गलती है । उस गलती को छुपाने के लिए हार्टविक वाला शिशु ऐसा ही रहता है , बडा होने के बाद भी न हिलेगा - न डूलेगा कहना दूसरी गलती है ।बिना श्वास ही के शिशु में ऑक्सीजन

लगाकर दूसरे अस्पताल में (ICU) में भेज कर शिशु मर गया है उनके द्वारा कहलवाना तीसरी गलती है। कभी-कभी कुछ शिशुओं में प्राण देर से आने का डॉक्टरों को पता न होना सबसे बड़ी गलती है ।

आधे घंटे में, 1 घंटे मे, या दो-तीन घंटों में या उससे भी अधिक के समय में भी, शिशु में प्राण आता है इस सत्य को न जानने के कारण , गंगा अस्पताल में शिशु में प्राण के आने से पहले थोड़ा श्वास चलना फिर चले जाना कहा गया। इस घटना से अनेक उम्मीदों से , सपनों से अपने बच्चे की देख-रेख करेंगे ,ऐसे कितने ही माता - पिताओं को उनके बच्चे से अलग करने जैसे हुआ। जिन्दगी के शुरुआत में ही शिशुओं को डॉक्टर अनजाने में परोक्ष में हत्याएँ कर रहे हैं। हत्या अनागरिकता है , हत्या करने वाले को सजा देने वाली न्याय - व्यवस्था माता-पिताओं को दुख देनेवाले परोक्ष शिशु - हत्या को रोकने की , शिशु में प्राण कब आता है से अनजान , कमियों से भरी डॉक्टरी " शिक्षा को कमी रहित बनाने का आदेश देकर, अनेकों शिशुओं की रक्षा करने की जिम्मेदारी लें हम न्याय" व्यवस्था से अनुरोध कर रहे हैं ।

3) **शिशु में प्राण आने से पहले मर गया , डॉक्टरों ने कहा**

पिता का नाम	-	मल्लेश
माता का नाम	-	रजिता
अस्पताल	-	विजया नर्सिंग होम , कर्मनगाट
तिथि	-	अगस्त 26, 2004
डॉक्टरों	-	सत्यनारायण तथा गैनाकॉलजिस्ट

मेहनत - मजदूरी कर जिन्दगी बसर करने वाले गरीब दंपतियों का परिवार था मल्लेश जी का। पत्नी गर्भवती थी बच्चा होने के समय में उन्हें दर्द शुरु हुआ। तुरंत नजदीक के गायत्री नगर रोड नम्बर 19 में विजया नर्सिंग होम ले जाया गया। प्रसव होते ही उस नर शिशु को डॉक्टरों ने जाँच कर शिशु में प्राण नहीं है मर गया, कह कर शिशु को ले जाओ डॉकटरों ने कहा, उस समय में शिशु के पिता वहाँ नहीं थे, लगभग डेढ घंटे के बाद शिशु के पिता, और भी लोग नर्सिंग होम आए, शिशु मर गया है, डॉक्टरों का जवाब सुन कर दुखी हो गए।

बिना प्राण के बच्चे को दफन करने का सोचने लगे। विचार करके तुरंत गडढ़ा खोदने के लिए शिशु के पिता से संबंधित लोग चले गए। अस्पताल से बच्चे का शव को श्मशान ले जाने का सोच रहे थे कि, रक्त लगे उस छोटे से शिशु को पिता ने आखिरी बार अपने गोद में लिया, अपने गोद में लिए शिशु को देख पिता मल्लेश खुशी से "मेरा बच्चा जिन्दा है" कह जोर से चिल्लाया। इस हठात् परिणाम से वहाँ के लोग आश्चर्य चकित रह गए। मेरा बच्चा साँस ले रहा है मल्लेश ने कहा। उस समय तक शिशु का नाभि - रस्सी अलग नहीं किया गया। शिशु मर गया है ऐसा क्यों कहा डॉक्टरों से पूछा तो, डॉक्टर सत्य नारायण ने जवाब देते हुए मेरे साथ महिला डॉक्टर ने भी जाँच की, **कोई फिटस हार्ट** की प्रोबलम बता रही थी कहा। शिशु की नाभि - रस्सी को अलग कर तुरंत ओ. आई.सी. अस्पताल ले जाने के लिए डॉक्टरों ने कहा। तुरंत ओ. आई.सी अस्पताल ले जाकर कुछ परीक्षाएँ करवाकर बाद में शिशु स्वस्थ है जानकर दंपति खुश हुए।

पिता के हाथों में जीवित हुआ वह शिशु कुछ मिनटों और आँखें न खोली होती तो गड्ढ़े में दफन हो गया होता। दंपति दुख से रोते रहते। प्राण के होते हुए न होने का क्यों कहा गया उस दंपति के रिश्तेदारों , बडे बुजुर्ग ने , वैद्य विजय नर्सिंग अस्पताल के डॉकटरों से पुछा। डॉक्टरों ने टालने के लिए बेकार सा उत्तर देकर भेज दिया।

इस विषय का दो तीन दिनों में Etv वालों को पता चला। Etv के रिपोर्टर रहमान ने स्थानिक विजय नर्सिंग होम अस्पताल में जाकर पता किया तो डॉक्टरों तो पहले टाल गए बाद में इसमें मेरी गलती नहीं है महिला डॉक्टर ने जाँच किया कहा। इस घटना का Etv न्यूज में अगस्त 29 तारीख को प्रसारित किया गया था।

4) 12 घंटों के बाद श्मशान मं जीवित हुआ शिशु

माता का नाम	-	सुमति
अस्पताल	-	गायत्री क्लिनिक, (कल्वकुर्ती)
तिथि	-	अक्तूबर 5, 2004
डॉक्टर	-	डॉक्टर मुत्वा रामाराव तथा डॉक्टर हिम बिन्दु

आंध्र भूमि न्यूज (कुल्वकर्ती) : अनेक शोधो को कर भौतिक विषयों में हमने जानकारी हासिल किया सोचने वाले शास्त्रज्ञों के लिए , और भी बहुत सारे अनभिज्ञ विषय हैं। हमसे अविदित कुछ भी नही है कहना, स्वयं की विदित को ही सत्य मान कर भौतिक शास्त्रीयों को और भी शोधों को कर जानकारी हासिल करने के लिए बहुत

सारे विषय हैं उनमें से एक विषय का भी बिना परिशीलन किए उच्च विद्यावान होने का चोला पहनना समाजिकद्रोह होता है न जानने जैसी , कितने ही घटनाएँ हुई हैं। एक बकरी दो मेमनों को पैदा कर बाद में , उनमें प्राण नही है उसे बगल में फेंकने के बाद , तीन घंटों में उन दोनों बच्चों में एक के बाद एक जीवित होना विचित्र घटना ही है, लेकिन वे जन्तु है इसलिए उनकी कोई परवाह नही करेगा ।परन्तु मनुष्यों के विषय में इसी प्रकार होने से अगर कोई उसकी परवाह न करें तो उसे क्या कहा जाए समझ में नही आ रहा है । हमारे परिशोधों का परिणाम मानव समाज नागरिकता की ओर बढ़ना है न कि अनागरिकता की ओर । मानव जाति के उपयोग में आने वाले विज्ञान प्रारंभिक दशा यानि बाल्य में ही मानवों की हत्या होना सोचनीय है । एक आंध्रा में ही वर्ष में सौं की संख्या में , शिशु दशा में ही मानव जाति की परोक्ष हत्या होने की अनेक उदाहरण हैं, उनमें से महबूब नगर जिला , कुल्वकुर्ती में एक प्राइवेट अस्पताल में हुई घटना का विवरण करेंगें ।

" जडर्चल मंडल नजरुल्लाबाद गाँव के निवासी सुमति, प्रसव वेदना से 2004 अक्तूबर 5 वाँ तिथि मंगलवार को कुल्वकुर्ती प्राइवेट अस्पताल में भर्ती हुई । शाम 5 बजे डॉक्टरों ने सीजिरियन ऑपरेशन कर मादाशिशु को बाहर निकाला , शिशु को कुछ देर बारिकियों से जाँच कर मौत हो गई ध्रुविकरण किया । मरा हुआ शिशु पैदा हुआ है बताने पर डॉक्टरों की बातों से दुखी होकर माता-पिता ने शिशु को घर लेकर चले गए । शिशु का जन्म मंगलवार को हुआ बीत गया बुधवार को बच्चे को दफन करने के लिए श्मशान ले गए । गडढ़े में शिशु को लिटाकर ऊपर से मिट्टी डालते समय शिशु हरकत कर रोना शुरु कर दिया । आश्चर्य में पड़कर पिता और अन्य लोगों ने बच्ची जिन्दा है जान कर घर ले आए । बच्ची पूरी

तरह स्वस्थ थी। सारी परीक्षाएँ करवाने के बाद भी मरा हुआ शिशु पैदा हुआ डॉक्टरों के कहने से उस परिवार ने जो दर्द झेला वह क्रोध में बदल गया । अस्पताल में धावा बोलकर ताला लगाने का प्रयत्न किया । शिशु मरने का ध्रृविकरण करने वाले डॉक्टर फरार हो गए ।

इस घटना के होने मे इसमें डॉक्टरों के लिए अनभिज्ञ विषय का होना स्पष्ट रुप से दिखलाई दे रहा है । शिशु बाहर निकलने के बाद ही प्राण आने का विषय इस जगत के लिए अविज्ञ सत्य है । उसके दूसरे दिन बाद प्राण आने का विषय को न समझा जाना , अपनी गलती को मानते हुए भाग गए । शिशु में पहले प्राण न होने की बात में वास्तविकता है, फिर भी उस विषय में अनजान डॉक्टरों ने अपनी गलती को मान लेना उनकी शिक्षा की अवहेलना करना है । इस एक विषय से ही डॉक्टरों को अनेक विषयों से अनजान होना सिद्ध होता है , हमारे गत 30 सालों से बताए जाने के बावजूद भी हमें जो मालूम नहीं हैं उसकी आपको कैसे जानकारी हो सकती है, ऐसे उद्दंडता से बातें करने वालों को क्या कहा जाए आप ही सोचिए ।

डॉक्टरों ने शिशु की मौत हो गई कहने के तुरंत बाद माता-पिता शिशु को छोड़कर चले गए होते तो, या शिंशु को फेंक दिया जाता तो, या तुरंत जमीन में दफनाया जाता तो, उस शिशु की परोक्ष रुप से हत्या हुई न, इसका जिम्मेदार डॉक्टर होगा या डॉक्टरों को तैयार करने वाला मेडिकल बोर्ड , इन सारे विषयों की जिम्मेदारी लेते हुए जवाब दें ।

अपने जन्म से ही अविज्ञ मनुष्य, अपने संतान के जन्म में भी गलतफहमी हो रही है । अनेकों माता-पिताओं को अपने शिशु में प्राण आने से पहले ही गर्भ में मर जाने के भ्रम में जी रहे हैं। पैदा होने के बाद हरकत न होने से शिशु मर गया डॉकटरों के कहने

की वजह से, प्राण आने से पहले ही शिशु मर गया सोच कर दफनाने वाले कुछ लोग होते हैं, बिना श्रम के निर्जन प्रदेशों में या, काँटों की झाडियों में या गटर में फेंकने वाले अनेक लोग हैं । इस प्रकार की घटनाएँ हजारों की संख्या में होती हैं । उनमें से उदाहरण के लिए अनन्तपूर आंध्र ज्योति वार्ता पत्रिका में सोमवार 13 वीं तारीख सितंबर 2004 को अनन्तपूर जिला स्पेशल धर्मवरम जोन में प्रकाशित वार्ता इस प्रकार से है ।

5) अनाध नन्ही सी जान को एक दंपति ने अपनाया ।

धर्मवरम,सितम्बर 12, 2004 (अनलाइन आंध्र ज्योति)

एक माता ने पैदा करके फेंक दिया , उस नन्ही सी जान को अपनाने वाले दंपति की घटना है यह । अनंतपूर जिला, धर्मवरम नगर में गुड्स शेड के जाने के रास्ते में रेलवे गेट के पास , जिसने दुनिया ही न देखी हो नवजात नन्हीं सी जान को किसी ने फेंक दिया , विषय को जान कर पुलिस वहाँ पहूँची, उस नन्ही सी जान को जीवित देख कर उसे सरकारी अस्पताल ले जाया गया कटीली झाडियों से नन्ही सी जान की चिल्लाने पर भी किसी ने परवाह न करने के स्थिति में से आई. विक्टर, एस . आई . श्रीनिवास , ए .एस . आई . भीमप्पा ने झाड़ियों में से नन्हीं सी जान को बाहर निकाला । तुरंत सरकारी अस्पताल भेजा वैद्यों ने चिकित्सा की । उस नन्हीं सी जान की उम्र कुछ घंटे है डॉक्टरों ने बताया । उस नन्ही सी जान को अपनाने के लिए दंपतियों में होड] लग गयी , अंत में पूरा तफसील कर बच्ची को पालन - पोषण करने में अच्छी आर्थिक स्थिति वाले निस्संतान दंपति को सौंपने से, उस बच्ची के साथ न्याय होगा C. I. विक्टर , S. I. श्रीनिवास ने सोचा । इससे गुंतकल

के निवासी वी. देवदानम , सरोज दंपति को बच्ची सौंप दिया । उनका निस्संतान होने की वजह से उस बच्ची को अपनी बच्ची जैसी पालने का निवेदन पुलिस से किया । देवदानम गुंतकल नगर के निवासी है, कल्लूर ए. पी. ट्रांसको में लाइनमैन की नौकरी कर रहा था। इससे सी. आई. विक्टर ने उनको बच्ची सौंप कर दंपति से ब्योरा लिया ।

यह किसी अवैध संबंध की वजह से पैदा हुआ शिशु होगा जिसे फेंका दिया गया ऐसा अनेक लोग सोच सकते हैं ऐसा कुछ भी नहीं है । अवैध संबंध के गर्भ को गर्भपात करने के लिए इस नये जमाने में कितने ही डॉक्टर तैयार बैठे हैं, सबकी नजर में नौ महीने कोख में रखकर पालने तथा पैदा करने की हिम्मत किसी में नहीं है । इससे सिद्ध होता है कि शिशु को फेंकने वाले सारे केस मर जाने का तथा फेंके जाने का ही है । फेंकने के बाद शिंशु सुरक्षित रहकर प्राण आने से, यदि कोई उसे देख कर घर ले जाकर पालन "पोषण करने वाले ऐसे कई लोग हैं । अगर कोई न देख पाए , कुत्तों के आँखों में पड़ने से उस शिशु का राम नाम सत्य हो जाएगा ।

समाज में इस प्रकार से अनेकों परोक्ष शिशु हत्याएँ हो रही हैं । हम गत तीस सालों से कह रहे हैं , हमारी अवहेलना करना छोड़ कर सत्य को ग्रहण करने वाले कोई नही है । शुरु में ही अंत होने वालों की रक्षा करने के लिए , इस परोक्ष हत्याओं को निवारण करने के लिए न्यायालयों के न्यायधीशों से अनूरोध कर रहे हैं।

जनन सिद्धांत के एक और उदाहरण आप देख सकते हैं.

6) माँ मैं जिन्दा हूँ ।

जिन्दा बच्चे को मर गया समझकर कपडे में लपेटे वैद्य

सितम्बर 21, 2005 (ईनाडू न्यूजटूडे , सुल्तान बाजार) कोठी हैदराबाद

आँखें खोली नवजात नन्ही जान ने, माँ की गोद की गर्मी से अनजान , माँ की दूध का स्वाद चखा नहीं, कितने ही रंगों, सुन्दरताओं को देखना बाकि था । लेकिन निर्दयी डॉक्टरों ने तुम जिन्दा नहीं हो , मृत शिशु हो कहा । कपड़े में लपेट एक किनारे फेंका गया । बच्चे ने जन्म लिया जानकर मधुर अनुभूति में खोई उस ममता की मूरत को , उसके कलेजे का टुकड़े का क्या हुआ , पता नहीं। रिश्तेदारों के बाहर जाते ही जीवित शिशु को मृत शिशु समझ घोषित कर किनारे में रखा गया । बेपरवाह, शर्मनाक, अनागरिकता इस शब्द से बढ़ कर कोई और बड़ा शब्द हो तो वह सुल्तान बाजार के प्रसूति अस्पताल के कर्मचारियों के लिए ही है । मंगलवार के दिन (अ) / धर्म अस्पताल में हुई घटना को याद करने से ही शरीर में सिहरन होती है। मानवता पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है । सारे वैद्य लोक पर न मिटने लाला काला धब्बा लग गया ।

जिड़ी मेट्टा के समीप में सुराराम गाँव के निवासी सुरेश यादव , रेवती (27) दंपति रहते थे । उनकी एक बच्ची थी । इसके पहले रेवती को दो कर गर्भपात हुआ था । उनके दोबारा गर्भधारण करने पर परिवार वालों ने सुल्तान बाजार के सरकारी अस्पताल में कुछ समय से चिकित्सा करवा रहे थे । सात महीने की गर्भवती रेवती को हाई. बी.पी की शिकायत थी । प्रसव के समय में समस्याओं के साथ, बच्चा भी कमजोर पैदा हो सकता है या शिशु के मरने की संभावनाएँ हो सकती है , अस्पताल के सुपरीटेन्डेंट ने उनके परिवार वालों को एक सप्ताह पहले ही बतलाया । रेवती इस माह

के आठवीं तारीख को सुल्तान बाजार सरकारी अस्पताल में भर्ती हुई। सोमवार शाम को उन्हें प्रसव दर्द के लिए इंजेक्शन दिया गया, रात एक बजे के समय में दर्द आना शुरु हुआ। ड्यूटी के मेडिकल ऑफिसर (DMO) संध्या दीक्षित को खबर पहुँचाया गया। मंगलवार सुबह 3.45 बजे के समय में रेवती ने सामान्य प्रसव से एक नर बच्चे को जन्म दिया। प्रसव के समय में रेवती की माता यादम्मा प्रसव हो रहे वार्ड के पास ही थी, उनका पति सुरेश दवाईयाँ लाने बाहर गया हुआ था। इससे रेवती को तुरंत ऑपरेशन थियेटर में ले जाया गया। छः बजे के समय में वहाँ काम कर रही आया आकर जन्म लिया शिशु मर गया है एक कपड़ा लेकर आने को कहा। इससे रेवती का माता यादम्मा ने कपड़ा लाकर दिया ।शिशु को कपड़े में लपेटकर एक प्लास्टिक कवर में रख कोने में रखा गया। पैसे देने से यहीं के एक व्यक्ति से मृत शिंशु को ले जाकर दफना देने की सलाह भी दिया। लेकिन रेवती की हालत सीरियस होने से उनके सास-ससुर आने तक रखें कहने पर, उस कर्मचारी ने शिशु को वहीं एक किनारे में रखा । दोपहर 3.30 बजे के समय में रेवती के ससुर शिवय्या और कई रिश्तेदारों ने आकर मृत शिशु को देने की मांग की, किनारे में कवर में रखें शिशु को उनको दिया गया। उसे लेकर अस्पताल के आवरण में विजिटर रुम के पास गए, एक बार यह किसके जैसे दिखता है चेहरे को देखने के लिए कवर में रखे शिशु को बाहर निकाला। बस शिशु साँस लेते हुए हाथ और पैरों को हिलाता हुआ दिखाई दिया। तुरंत वे ड्यूटी के डॉक्टर राजेश्वरी के पास ले गए, शिशु साँस ले रहा है तुरंत निलोफर अस्पताल भेजने को कहा। प्राण से होते हुए शिशु को मृत कहा अपने बेपरवाही को दर्शाते हुए डॉक्टर ने 12 घंटों बाद शिशु जीवित होने का विषय मालूम होने पर भी सही

ढंग से प्रतिक्रिया नहीं दिखाई । फिलहाल वह शिशु निलोफर अस्पताल में चिकित्सा ले रहा है । सनसनी भरी इस घटना से सरकारी अस्पताल के नियत को एक बार फिर पर्दे पर लाया गया ।

7) **जिन्दा शिशु को मार डाला , संगीता ने बच्चे को बचा लिया**

(साक्षी जुलाई, 3, 2008)

** प्रसव होते ही बच्चा मर गया,नर्सों ने कहा*

** बारह घंटों बाद सजीव*

** पिता ने ध्यान दिया , बच्चा माँ की गोद में*

कोलकता ; संगीता " मनसेदास दंपति को पुत्र होने की खुशी मिनटों में गायब हो गयी। उनका बच्चा जन्म लेने के कुछ मिनटों के बाद ही मर गया बेल्लेपुर अस्तपताल के नर्सों ने निर्धारण किया। 10 घंटे बीत जाने के बाद ,उनका बच्चा साँस लेता हुआ दिखाई दिया। फ़ौरन अस्पताल के अधिकारियों ने उस शिशु को चिकित्सा निमित्त ए .एम .आर .आई अस्पताल भेजा गया ।बच्चा सीरियस स्थिीति में था। नर्सिंग होम की लापरवाही से दास दंपति ने शेक्सपियर सरानी पुलिस स्टेशन में फिरयाद किया। 32 साल की संगीता को प्रसव होने के तुरन्त बाद उनके पति को खबर नही दिया गया,जो उस समय में अस्पताल में ही थे। बच्चा मर गया सिर्फ संगीता को ही थोड़ी देर बाद नर्सों ने बताया।" प्रसुति कमरे में डॉक्टर मौजुद नही थे, नर्सें घबरा कर इधर-उधर भाग रहीं थी हमनें गौर किया। प्रसव होने तक हमें नीचे जाने को कहा। संगीता को भी बच्चा मर गया है बताया गया दिखाया नही" ऐसा दास के एक रिश्तेदार ने कहा। यह निर्धारण में होने वाली कमियाँ थी अस्पताल के अधिकारीयों ने कहा। शिशु में हरकत न होने की वजह से ही मृत होने का निर्धारण किया गया। प्रसव समय में डॉक्टर मौजुद थे, कह कर बहस कर रहें थें।

अरे बच्चा

(ईनाडु न्युस 20.11.2008)

नवजात शिशु कचरें के ढ़ेर में, स्थानिकों की सहायता से जान बची,

माता के गर्भ से अभी जनमी ही थी, प्रसव की नर्मी सुखी ही नही कि कचरें के ढ़ेर मे पड़ी मिली। लड़की होना था या किसी र्दुभाग्य का पाप का फल था, मालूम नही परन्तु प्लास्टिक की थैली में डाल कर गली में फेंक दिया गया। पल भर में कुत्तों का भोजन बनने ही वाली थी कि स्थानिकों ने आकर बचा लिया। मूसा- पेट मंडल में यह घटना बुधवार दिन-दहाड़ें रोशनी में आयी। वार्ड कार्यालय के समीप में यादव बस्ती के मध्य में अनुपयोगी प्रजा शौचालय सम्बंधित खाली जगह थी। अनुपयोगी वहाँ पूरी तरह गन्दगी भरी हुई थी। इससे कुकटपल्ली सर्किल के सफाई महिला कर्मचारियों ने वहाँ 1.30 बजे के आस-पास परिसर की सफाई करते थे। वहाँ कचरे के ढ़ेर के पास लगभग कई कुत्तें झुंड में खड़े थे उसी जगह से मोतीबाई और नरसम्मा को एक नन्ही जान का रोना सुनाई पड़ा। वे वहाँ जाते ही तब तक वहाँ खड़े कुत्तों के झुंड ने उन पर हमला करने आगे बढ़ें। इससे वे डर कर भागे। खतरा भाँप कर जोरों से चिल्लाते हुए थोड़ी ही दूर में खड़ी दूसरी कर्मचारी पी. निलम्मा को यह बात बताई। तुरन्त स्थानिकों की सहायता से कुत्तों को भगा कर थैली के अन्दर रोती हुई बच्ची को बाहर निकाला। वार्ड कार्यालय के पास लाकर सबने मिल कर बच्ची को नहला-धुला दिया। स्थानिकों ने दिए समाचार से 108 के लोगों ने वहाँ पहुँच कर प्राथमिक चिकित्सा की। बच्ची खतरे से बाहर है डॉक्टरों ने धृविकरण करने से सबने ठंऔं साँस ली। विषय को जान कर परिसर लोगों का ताँता लग गया, लोगों ने बच्ची की दयनीय स्थिीति पर सहानुभुती जताई ।अंत मे, सनत नगर की पुलिस ने 108 के वाहन में ही निलोफर अस्पताल ले गए।

मृत्युजंय हुई बच्ची

(ईनाडू , न्यूस ,5,8,2008)

*माँ की ममता से दूर , **अस्पताल में बच्ची,***

बोडूप्पल; मातृत्व को भूला कर एक माँ ने अपने कलेजे के टुकड़े को कचरे के ढ़ेर के हवाले किया। इसे हुए सप्ताह भर भी न बीता , एक और बच्चा कचरे के ढ़ेर मे देखा गया। ह्रदय को चीर देने वाली इस घटना ने स्थानिय लोग दुखी हो गए। उप्पल डिपो श्री राम नगर कॉलोनी , अनीता नर्सींग होम के समीप मे बंडी गॉर्डेन को जाने वाले रास्ते मे हुई इस घटना ने सभ्य-समाज का सिर नीचे झुका दिया। सोमवार सुर्योदय से पहले वाकिंग के लिए या दूध तथा पेपर के लिए जाते लोगों से भीड़-भाड़ थी। इतने में एक इस्त्री के पास बिना कपड़ा के एक नंगा बच्चा जोरों से रो रहा था। उधर जाकर देखा तो कचरे में बच्चा रो रहा था। एक तरफ बारिश हो रही थी और दूसरी तरफ ठंड़ी हवा से बच्चा हाथ-पैर मार कर रो रहा था। अस्पताल के अधिकारियों ने स्थानीय पुलिस को सुचित करते ही पुलिस वहाँ पहुँच कर बच्चे को अनीता नर्सिंग होम में भेज कर चिकित्सा करवाई ।ऐन वक्त पर चिकित्सा करवाने पर वह बच्चा बच गया। बच्चा 2.3 किलो का था अनीता नर्सिंग होम के बड़े डॉक्टर मर्रीराम रेड्डी ने बताया। डॉक्टर ने बताया बच्चे को गोद लेने के लिए अनेक लोग उत्सुक है। उप्पल पुलिस तफसील कर रही है।

छोट –सी –जान को दफनाया गया

उस नन्ही- सी- जान की गलती क्या थी. . लड़की होना । इतने सारे औरतों में लड़की होकर जन्म लेना । अपनाने के लिए डरपोक. . . माता के गर्भ से जन्म लेना । दुत्कारने वाले नाना ,नानी के नातिन होकर जन्म लेना।

दो दिन तक मादा शिशु की सजीव समाधि में रोना सुन कर राहगीरों ने बचाया

नारायण पेट, न्यूसटुडेः वो, दो दिन उस नन्ही -सी -जान के लिए श्राप था। अंतत; उसे सजीव समाधि कर दिया। धरती पर अभी और दाना-पानी बचा था. . . मोटी चमड़ी की थी इसलिए. . . जीवित हो गई, वर्ना राज्य में एक और मादा शिशु का नामों-निशान मिट जाता । कम से कम एक बूंद आँसूं की भी हकदार न होकर मिट्टी में मिल गई होती।दिल को दहला देने वाली यह दर्द भरी घटना महबूब नगर जिला उटकूर में हुई । यहाँ गदवाल गली में रंग्रेज अब्दुल रहमान , कुब्रा बेंगम दंपति निवास करते थे। इनकी सात बेटियाँ थी ।दूसरी बेटी नाम मेहरुन बेंगम 19की थी। छ; महीने पहले बिना विवाह के गर्भवती हो गई। माता-पिता ने इस बात को छुपा कर महाराष्ट्र के निवासी अब्दुल घनी से विवाह करवा दिया। दो महीनें पहले घनी को यह मामला मालूम हुआ। उसने उसे यहाँ छोड़ कर चला गया। तब से मेहरुन यहीं रह रही थी, पूरे महीनें होने पर , मंगलवार सुबह मादा शिशु को जन्म दिया। घर में सब लड़कियाँ होना. . .इस पर नजायज संबंध. . . उस नन्ही जान से छुटकारा पाने के लिए उस परिवार ने सोचा। मंगलवार रात्रि ही उस बच्ची को बाहर ले जाकर दफनाने के लिए रहमान तथा उसके भाई ने कोशिश किया।लेकिन कई ग्रामवासियों को चौकसी करता देख रुक गए, उस वक्त पीछे हटने पर भी उनके निर्णय

में बदलाव न आया। बृहस्पतिवार भोर के चार बजे बिना आहट किए, उस शिशु को लेकर घर से निकल पड़े। श्मशान के निकट में कुंटीमारी लक्ष्मण के खेत में पहुँचे। उस शिशु को कपड़े से लपेटा। खेत में दो फुट गहरा गडढ़ा खोदा, उसमे लिटा दिया। हाल ही में कुटूंब-पोषण योजना के अंतर्गत सड़क बनाया जा रहा था। उस सड़क के उपयोग में आने वाली मिट्टी को लाकर, जल्दबाजी में गड्ढ़े को भर दिया। उस नन्ही सी जान को सजीव समाधि कर वहाँ से चले गए।

तीन घंटे बीत गए। बच्ची उस समाधि में ही थी। सुबह साढ़े सात बजे थे। भींषप्पा नामक युवक अपने खेत में उसी रास्ते से गुजर रहा था। उस निर्जन प्रदेश में, उसे कहीं से बच्चे का रोना सुनाई पड़ा । आश्चर्य होकर उसने शंका से इधर-उधर ढुंढना शुरु किया। इतने में खेत जोतने के लिए उसी रास्ते से ट्रॉक्टर पर राम कुमार आता हुआ दिखाई दिया । बच्ची रोने की आवाज उसने भी सूना । दोनों मिल कर खोजने लगे , रोने के आधार से, उस गड्ढ़े तक पहूँचे। मिट्टी के अन्दर से थोड़े बाहर छोटी-छोटी मुलायम उँगलियाँ निकली दिखाई दी। मिट्टी को हटाया , कपड़े से लपेटा चेहरा दिखाई पड़ा। रोना उस बच्ची का ही था पता चला। तुरन्त गडढ़ा में से बच्ची को निकाला। पुलिस को सुचना भिजवाई। स्थानीय लोगों की सहायता से प्राथमिक स्वास्थय केन्द्र में चिकित्सा करवायी। परिस्थीति सीरियस होने के कारण जल्द ही नारायण पेट अस्पताल ले जाया गया। वहाँ के डॉक्टर असगर अली और विद्यावती ने फौरन चिकित्सा शुरु किया बच्ची खतरे से बाहर थी। बाद में पुलिस ने बच्ची को महबूब नगर अस्पताल भेजा। वहाँ पूरी चिकित्सा से बच्ची खतरे से बाहर थी। रंग्रेज परिवार पर पहले ही शक था, बच्च *के नाभि से बंधी धागे के आधार से पुलिस ने तफसील किया । बच्ची की माता की पहचान हुई।* बच्ची की माता और नाना पर दफा 307 के अंतर्गत केस दर्ज किया गया।

माता के स्पर्श से पुर्नजन्म !

बच्चा मृत समझा गया परन्तु जीवित हुआ आस्ट्रेलिया में एक घटना रोशनी में आयी

सिडनी : डॉक्टरों ने भी मृत माना एक बच्ची को , माता के स्पर्श से जीवित हो गई । आस्ट्रेलिया के सिडनी में पाँच महीने पहले की घटना देरी से रोशनी में आया। केट नामक महिला ने महीनें पूरे होने से पहले ही स्थानीय अस्पताल में एक बच्चे को जन्म दिया।डॉक्टरों ने बच्चा मर गया है कहते ही केट घबरा गई । निस्तेज पड़ा हुआ बच्चे को अपने हाथों में लेकर, हृदय से लगा लिया। बहुत देर तक वैसे ही रह गयी। दो घंटों बाद बच्ची धीरे से हिलते हुए श्वास लेना प्रारंम्भ किया । कुछ ही देर में आँखें खोली। इस परिणाम से आनन्द-विभोर हो उठी। इस अद्‌भुत घटना के बारें में उन्होंने एक T.V चैनल के एक इन्टरव्यू में सारी बातें बताई। बच्ची जेमिया ओक फिलहाल स्वस्थ है।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण आप जन्म सिद्धांत के अंर्तगत देख सकते हैं ।

इस विषय में मैं आपको कुछ प्रश्न दे रहा हूँ , जिनका उत्तर आप दें पायेंगें देखिए

1) पिछला जन्म याद आया कहने वालों को इस धरती पर देख सकते हैं । लेकिन गर्भ के स्थिति के बारे में कहने वाला कोई है क्या ? असल में आप को इसकी याद भी है ।

2) ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार माता के गर्भ से बाहर आने के समय को गिन कर दशा शेष बताते हैं । दशाओं को माता के गर्भ ठहरने से लेकर क्यों नहीं गिना गया । दशा भूक्ति को गत

जन्म भूक्ति क्यों लिखा जाता है ? (गर्भ भूक्ति कुछ लोग कहते हैं। गर्भ में सालों साल लगातार नही रहता इसलिए गर्भ भूक्ति न कह कर गतजन्म भूक्ति कहना चाहिए)।

3) माता के गर्भ से बाहर निकले शिशु में कुछ मिनटों , कई घंटों तक श्वास , रक्त का संचार, हरकत तथा चैतन्य क्यों नहीं रहता है ।

4) दाईयाँ मावा में प्राण होता है , शिशु के अंदर आने को कहती रहती है । दरअसल गर्भ में आया प्राण, मावा में आया था या शिशु में आया था ?

5) कुछ अस्पतालों में प्रसवित होने के बाद शिशु मर गया डॉक्टरों द्वारा निर्धारण करने के कुछ देर में ही प्राण कैसे आया ?

6) गर्भस्थ शिशु बिना प्राण के बढ़ता नहीं, शिशु माता के शरीर के अन्दर में मर जाने से माता को खतरा होता है कहते हैं । गर्भ ठहरने से लेकर बिना प्राण के छः महीने तक कैसे बढोत्तरी हुई । उस छः महीने के समय में शिशु में अगर प्राण नहीं था तो माता को खतरा क्यों नहीं हुआ ?

7) योगशास्त्र गीता में जीव शरीर धारण करने से लेकर बाल्य ,यवन, कौमार्य, वृद्धावस्था तथा मरणावस्था कहा गया लेकिन गर्भावस्था क्यों नहीं कहा गया ?

8) गीता में पुराने शरीर को छोड़ नये शरीर को जीवात्मा धारण करता है कहते हैं । नया अर्थात पूर्ण रुप से तैयार हुआ या छः महीने का असम्पूर्ण शरीर ?

9) भगम (योनि) से प्राणसहित जन्म लिए सभी लोग भगवान होते हैं तो फिर सब लोग भगवान क्यों नही हैं ।

यहाँ हमारे कुछ कहें जवाब ऐसे है हमारे शरीर में पंच महाभूतों में से एक वायु है । वह पाँच भागों में बँटी है । वायु को प्राण भी कह सकते है । इस वजह से पंचवायु को पंचप्राण भी कह सकते हैं । हमारे नाक के छेदों में हवा के रहने से प्राण का होना , हवा के न रहने से प्राण का न होना कहा जाता है । शरीर में प्राण के होने से जीव भी रहता है । प्राण के न रहने से जीव नही रहता है। नाक के छेदों में श्वास न चलने तक शिशु में प्राण न होना समझें । माता के गर्भ में मावा थैली के अंदर द्रव में शिशु डूबा रहता है । इस वजह से श्वास चलने की संभावना नहीं होती । असल में जीव भी नही रहता है । जनन के बारे में हमारे पूछे गए प्रश्नों का जवाब आप खोजें । सत्य और असत्य का आपको ही समझ में आएगा । इस तरह परिशोध की दृष्टि से आप हमारी सनसनी भरी तथा विपल्वात्मक जन्म रहस्यों को जानकर संतोष होने वाले उसी उत्साह से , कहीं किसी के द्वारा न कहने वाली मरण रहस्य को भी पढेगें उम्मीद है ।

* * *

मरण

शरीर रुपी यंत्र बिना काम किए बंद हो जाने को मरण कहते हैं। **मर** का अर्थ है यंत्र। मरण अर्थात् यंत्र में कमी आकर बंद हो जाना। यंत्र में जितने भाग होते हैं शरीर में भी उतने ही भाग होते हैं। यंत्र का चालक ड्राइवर कहलाने वाला जिस प्रकार से विशिष्ट होता है उसी प्रकार शरीर को चलाने वाला भी विशिष्ट होता है। जिस तरह यंत्र को चलाने वाले को ड्राइवर कहते है उसी तरह शरीर रुपी यंत्र को चलाने वाले को आत्मा कहते हैं। शरीर रुपी यंत्र को चलाने वाली आत्मा शरीर में ही रह कर शरीर चलाने को जीवन कहा जाता है। शरीर रुपी यंत्र में कमियाँ होने से काम न कर सकने की स्थिति में पहुँचे तो आत्मा शरीर को छोड़ कर दूसरे नये शरीर को ढूँढ़ती है। आत्मा शरीर का साथ छोड़ना शरीर रुपी यंत्र को काम न कर सकने की वजह से ही होता है। शरीर रुपी यंत्र बंद हो जाने पर मरण जो एक चिन्ह के रुप में रखा गया है। यंत्र याद आने से उसे चलाने वाला चालक भी कोई होगा मालूम होने के लिए मरण नामक नाम का निर्णय पूर्वजों ने लिया।प्राचीन काल में मरण शब्द शरीर रुपी यंत्र में चालक के न होने के अर्थ से इस नाम को सुझाया गया। इस विषय में इस विधान से आध्यात्मिक अर्थों में कहा गया, परन्तु पुराणों में कुछ अलग ही तरीके से कहा गया है। यमलोक होता है, वहाँ यमराज रहता है, मनुष्य की आयु समाप्त होते ही यमराज अपने यमदूतों को भेजकर मनुष्य का प्राण निकाल कर ले जाते हैं। इस तरह एक शरीर से जीव को अलग कर अपने लोक में लेकर चले जाना कहा गया है। इन विषयों में शास्त्रबद्धता नही है, इसमें वास्तविकता न होने का जिक्र हमने कई बार किया। मानवों को भयभ्रान्त करने के लिए यमलोक तथा वहाँ की सजा होने की सृष्टि की गई। लेकिन पापों की सजा धरती पर ही भोगना पड़ता है, समझा नहीं सके।

मरण समय में जीव को बहुत पीड़ा होना, मरण का दर्द हजार बिच्छुओं के काटने जैसा होना, जीवन की सारी पीड़ाओं से बडी मरण की पीड़ा होना, पुराणों में कहे जाने के कारण अनेकों लोग मरण से ही डरने लगे हैं। कुछ लोगों के कहे अनुसार मरण समय में यमदूत आयेंगें, वे डरवाने लगेंगे, मरण आने से पहले ही लोग भयभ्रान्त हो गए। कुछ लोग तो यमलोक में दी जाने वाली यातनाओं को पहले से ही सोचकर चिंतित होते हैं। इतनी भ्रमों भरी बातें मरण के बारे में कहना, इसे शास्त्रबद्ध रुप से जानना सही होगा। हेतुबद्धता से मरण के बारे में लिखाना हो तो उस समय शरीर में जो हो रहा था, परखना होगा। मरण के बारे में लिखना हो तो, एक बार मर कर जो उस समय हो रहा था देखने वाला ही लिख पायेगा। वैसे भी लिखने के लिए मर कर दोबारा जन्म ले भी ले उनको मरण के विषय में कुछ याद नहीं रहता। जीव स्वयं शरीर धारण करना, जन्म कैसे हुआ इस विषय में उसे कुछ याद नहीं रहता। मरने के बाद लिया गया जन्म के विषय से ही अनभिज्ञ जीव, जन्म से पहले हुए मरण के विषय को कैसे बता पाएगा? जन्म और मृत्यु के बारे में जीव के लिए कहने की संभावनाएँ नही है। इसलिए जनन - मरण दोनों को रहस्यमयी विषय ही कह सकते हैं। अगर वे रहस्यमयी रहे गए तो मनुष्य अपने मन मर्जी से कल्पनाएँ करने लगेगा।

धरती पर अनहोनी नये विषय, मनुष्य के लिए अविज्ञ नये विषय, मनुष्य के लिए कल्पनाएँ करने की काबिलियत न रखने वाले अनेक विषयों को मनुष्य द्वारा ही आविष्कार किया गया। उदाहरण के लिए दूरदर्शन (TV), दूर संचार, कमप्यूटर, रेलें, हवाई जहाजों न जाने अनेक विषयों का मनुष्य द्वारा ही आविष्कार किया गया। अनेक अद्भुत विषयों को मनुष्य द्वारा ही खोज किया गया है। ये

सब शास्त्रबद्ध और हेतुबद्ध विषय हैं । अगर ऐसा है तो रहस्यमयी अविज्ञ जनन - मरण को शास्त्र बद्धता से नही जान पायेंगें । जान सकते हैं । मनुष्य द्वारा खोजे गये सारे नये सूत्र को मनुष्य ने कैसे खोज किया अगर विशद कर देखा जाए जो उसी के अनुसार अन्य विषयों को भी खोज कर सकता है, सिद्ध होता है । मनुष्य के शरीर में जीव , आत्मा, तथा परमात्मा रहते हैं। एक शरीर में तीनों होने का विषय कुछ नया लगने के बावजूद सबके लिए अनजान वास्तविकता कह सकते हैं । शरीर में तीनों रहने का विषय शास्त्रबद्ध है । ब्रम्हविद्या शास्त्र भगवद गीता में स्वयं भगवान ने इस विषय के बारे में कहा था ।

मनुष्य अनेक नये विषयों की खोज करके उसे एक सिद्धांत का नाम देना , वह सिद्धांत अपनी खोज समझ कर सिद्धांत के आगे अपना नाम को रखा जाता है । उदाहरण के लिए न्यूटन का सिद्धांत , डारवीन का सिद्धांत इसी तरह के हैं । हम सहमत है कि एक मनुष्य एक नये विषय की खोज करता है । अगर हम अच्छी तरह विचार करें यहाँ एक प्रश्न उठ सकता है । ऐसा है कि शरीर में तीन वास करते हैं । अगर एक नया विषय मनुष्य द्वारा बर्हिगत हुआ तो उस विषय को उन तीनों में से किसने कहा ? हम नही कह सकते कि यह प्रश्न नहीं है। एक घर में जब तीनों निवास करते हैं , उस घर से एक बड़ी सहायता जब बाहर वाले को पहुँचती है , तब उस घर से किसके द्वारा वह सहायता मिली जानना बाहर वाले का काम है । इस सहायता को पहूँचाने वाला कौन है। जब यह प्रश्न आये तो एक ही घर में रहनेवाले तीनों पर दृष्टि पड़ सकती है । अंत में किसने भेजा सिद्ध होगा । घर में रहने वाले तीनों में से किसकी हैसियत है , किसमें सहायता करने की शक्ति है, पता चलें तो तीनों में से सहायता करने वाले की आसानी से पहचान की जा सकती है ।

शरीर रुपी गृह में जीवात्मा , आत्मा तथा परमात्मा तीनों निवास करते हैं । जब शरीर रुपी गृह से एक रहस्य बर्हिगत होने से शरीर के अन्दर वास तीनों का विशद रुप से परिशीलन करने की आवश्यकता है । अगर तीनों होने का विषय ही मालूम न हो तो असल में किसने कहा था मालूम नही होगा । इस वजह से तीनों होने के विषय को पहले ज्ञात करें फिर तीनों के बारें में विस्तार से जानना चाहिए । शरीर के अन्दर में वास तीनो में से पहला है जीवात्मा । शरीर में जीव कहलाने वाला यानि मैं। शरीर के अन्दर मैं की भावना में रहने वाला जीव है । शरीर के अन्दर कोई भी कार्य हो सभी को मैंने किया सोचने वाला ही जीव है। वास्तव में यह जीव कौन है ? शरीर में इसका कर्तव्य क्या है ? शरीर में रहता क्यों है ? इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर जानना चाहें तो जीव के बारे में विस्तार में जानकारी करेंगे ।

प्रपंच में अनेकों स्थितियों में गुजरता हुआ मनुष्यों में जीवात्मा रहते हुए स्वयं को बाहरी स्थिति के अनुसार, ओहदे के अनुसार मैं मंत्री हूँ, मैं आफिसर हूँ, मैं धनवान हूँ , मैं गरीब हूँ , सोचता है । वास्तव में , जीव को बाहरी स्थिति से कोई संबंध नहीं है । शरीर में जीव पूरे शरीर में न रह कर केवल एक स्थान में रहता है । शरीर में जीव का परिमाण मनुष्य के शरीर का 31,104 वाँ भाग होता है । (इस हिसाब को जानना हो तो हमारी रचना **निगुढ़ तत्वर्धबोधनी** नामक पुस्तक में 93 दोहे के भाव में देख सकते हैं) मनुष्य के शरीर से कई हजारों गुना छोटा जीव को कई संदर्भों में **तुम रत्ती भर भी नहीं हो** कहा जाता रहा है । इतने छोटे आकार वाला जीव शरीर में कोई काम नहीं कर सकता । उनका शरीर में रहना केवल शरीर में हो रहे कामों को भोगना मात्र है । सुखों और दुखों को अनुभव करने के लिए ही मात्र जीव शरीर में रहता है । जीव को बाहरी ओहदे से संबंध नहीं रहता है । शरीर में कोई

काम न करना, किसी ओहदें से संबंध न होने पर भी जीव बाहरी ओहदा उन्हीं का, सारे कार्यों को उन्हीं के द्वारा किया जाना समझता है। शरीर में जीव खुद भी सोचता रहे होने वाले कार्यों में या बाहरी आहदें में या विचार करने में या खोजे गए रहस्यों से बिना संबंध के रहता है। मेरी स्थिति यह है, मैंने कुछ नहीं किया, कोई काम हो, कहा गया विषय या मुझे संबंध नही है जीव सोचता नही है। जीव की अपनी अज्ञानता की वजह से अपनी स्थिति से या, अपने परिमाण से, शरीर के अन्दर अपने निवास-स्थल से अज्ञात होकर रह गया। कर्म को भोगने के लिए ही शरीर में रहना, अन्य सभी से उनका कोई संबंध नही ज्ञात नही होने के वजह से हो रहे कार्यों को मैंने किया, सोचता रहता है। उसी तरह से खोज होकर बर्हिगत हुए रहस्यों को उन्होंने कहा वह सिद्धांत उन्हीं का है गलतफहमी में जी रहा है। सच्चे ज्ञान के अनुसार जीव शरीर में अस्वतंत्र है, बेनामी है, कर्मबद्ध होकर कर्म का भोगी है।

पहली आत्मा अर्थात् जीवात्मा शरीर के अन्दर हो रहे कार्यों से कोई संबंध न होना, उन तक लाए गए को भोगने के अलावा और कोई कार्य नहीं है, मालूम हुआ। पहली वाली जीवात्मा का वैसा होना तथा आखिरी परमात्मा भी लगभग जीवात्मा की तरह ही कुछ किए बगैर रहती है। जीवात्मा प्रारब्ध को भोगते हुए अहं से आगामी कर्म उर्पाजन करती है। परमात्मा कर्म को न अनुभव करता है, न उपार्जन करता है। जीवात्मा शरीर में केवल एक ही स्थल में रहता है, परमात्मा पूरे शरीर में तथा शरीर के बाहर भी व्याप्त रहता है। जीवात्मा का आकार और परिमाण होता है, परमात्मा का आकार तथा परिमाण भी नहीं है। शरीर में परमात्मा बिना किसी कार्य के खामोश रहना कह सकते हैं। जीवात्मा की तरह होने वाले कार्यों का कर्ता मैं ही हूँ सोचने वाला नहीं है। न जीवात्मा करें न

परमात्मा करें तो मनुष्य कैसे कार्य कर रहा है। अनेक लोगों के मन में प्रश्न उठ सकता है। इसका समाधान यह है कि ! अब तक आध्यात्मिक विद्या में प्राचार में न रहने वाली आत्मा भी शरीर में रहती है। वही पहली जीवात्मा तथा तीसरी परमात्मा के मध्य में दूसरी आत्मा रहती है। अनेक लोगों को एक जीव तथा एक परमात्मा होना तो मालूम है लेकिन दोनों के मध्य में एक आत्मा का होना मालूम नहीं है। कुछ लोगों ने अपने तर्क में परमात्मा अकेले का होना बताया है। कोई कुछ भी कहें शरीर के अन्दर कुछ न करने वाला जीवात्मा, परमात्मा दोनों के होते हुए सब कुछ करने वाला आत्मा भी वास करता है। शरीर में सब कुछ करनेवाला आत्मा को न पहचान पाना हम सब की बड़ी अज्ञानता है। कहीं से भी आत्मा का नाम सुनाई पड़े तो आत्मा तुम, तुम ही आत्मा हो का संबोधन किया जाता है। जीवात्मा अलग, आत्मा अलग तथा परमात्मा अलग का ज्ञान हम लोगों के पास न होना बहुत बड़ी कमी कह सकते हैं।

दूसरी आत्मा इधर जीवात्मा तथा उधर परमात्मा के मध्य में रहकर परमात्मा की प्रतिनिधि तथा जीवात्मा की अधिपति होती है। शरीर के अंदर आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त होकर सारे कार्यों को स्वयं ही करती है। शरीर के द्वारा बाहर होने वाले कार्यों को या हर समय शरीर के अंदर होनेवाले कार्यों की अधिपति आत्मा ही है। शरीर के अंदर के अव्यवों को हरकतें करवाना, बाहरी अव्यव यानि हाथों पैरों को चलवाना ऐसे अनेक कार्यों को आत्मा करती रहती है। इन सारे कार्यों का कारण मैं हूँ कहीं भी न कहने की वजह से किसी के लिए भी आत्मा को पहचान पाना नमुमकिन हो गया। कुछ न करने वाला जीवात्मा सब कुछ मैं ही करता हुँ सोचने की वजह से आत्मा का पात्र किसी को ज्ञात नहीं हो सका। हमें मालूम

हो या न हो आत्मा तो होती है । शरीर के अंदर में तथा शरीर के बाहर के कार्यों को करना ही नहीं बल्कि शरीर के प्रति अव्यवों को शक्ति प्रदान करती है । आप ही चैतन्य होकर शरीर में पूरा व्याप्त हो कर ही नहीं बल्कि सभी कारणों के आदि बन कर रहती है । जीवात्मा और परमात्मा दोंनों कुछ न करने के बावजूद जगत की अभिवृद्धि और तरक्की के लिए आवश्यक यंत्रों का, अनभिज्ञ सिद्धांतों का , विज्ञान शास्त्र का शोध करना आत्मा ही स्मृति द्वारा पहुँचाती है ।अनभिज्ञ विषयों को स्वयं जानकारी दिलवाती है । आज के दिन में भूमि पर कमप्यूटरों जैसे अनेकों विज्ञान के सारे उपकरणों का आत्मा से स्मृति द्वारा जानकारी होना सिद्ध होता है । इस विषय में शास्त्रबद्ध होने के आधार भी हैं । भगवद गीता शास्त्र में पुरुषोत्तम प्राप्ति योग के अध्याय के 15 वें श्लोक **"सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्त; स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च,"** में आत्मा के विधान का वर्णन किया गया है । स्मृति, ज्ञान और अनुमान लगाना सभी आत्मा द्वारा ही महसूस होता है, सारे कार्य आत्मा की वजह से ही होता रहता है, अज्ञानता से जीव स्वयं ने किया समझता है । आत्मा अपना काम को स्वयं करती रहती है । आत्मा के किए कार्यों को ही नहीं बल्कि आत्मा द्वारा पहुँचाई गई शोध ज्ञान को भी मनुष्य स्वयं ने किया समझता है ।

अनेक शरीरों में जीवात्मा के साथ आत्मा भी रहते हुए उस शरीर के जीवन विधान को आभाष करवाती है । हर एक शरीर में हर एक आत्मा वास करते हुए सारे शरीरों में एक ही आचरण का सूत्र लागू रहता है । आत्मा का अंश एक होने के बावजूद सारे शरीरों में सारी आत्माओं का होना कह सकते हैं । अलग - अलग शरीर में आत्मा अलग - अलग तरीके से बाहरी प्रपंच के लिए उपयोगी सिद्ध होती है । अलग - अलग मनुष्यों को अलग - अलग

क्षेत्रों में दक्ष बनाती है । सारे प्रपंच में अनेक क्षेत्रों में कितने ही महान व्यक्तियों जैसा बनना उनके अंदर की आत्मा द्वारा किया गया है । अनेक रहस्यों को जानकारी में लाकर मानवों के अनुभव करने के लिए अनेक सुविधाएँ उपलब्ध करायी गई। मानवों के सुखों के नेपथ्य में अनेक विषयों को शोध द्वारा जानकारी से हवाई जहाज , TV कम्प्यूटर जैसे उपकरणों की उपलब्धी दिलाई । मनुष्यों को प्रपंच से संबंधित शोधों के रुपों में आत्मा द्वारा उपलब्ध करवाने को उसको मैंने ही खोज किया , मनुष्य के अंदर का जीव सोचता है । हर नये विषयों का हर नये शोधों को मेरे द्वारा ही हो रहा है सोचना मनुष्यों की आदत हो गई है ।

हर शरीर के अंदर की आत्मा उस शरीर को सब तरह से संचालन करती है । कुछ शरीरों में मात्र ही उन शरीरों के अंदर की आत्माएँ विशेष रुप से काम करती है । सचिन तेंडुलकर में क्रीडा प्रावीणता होना, या अब्दुल कलाम में शोध सामर्थ्य या महागायक एस. पी. बालसुब्रहमण्यम में गात्र के प्रवीणता. ये सारे उनकी आत्माओं की विशेषता है उनकी नहीं है । प्रपंच दृष्टि से सारे क्षेत्रों में अभिवृद्धि के लिए आत्मा ही नयापन , प्रवीणता, तथा शोध करने की युक्ति पहुँचाती है । विश्व में , प्रपंच और परमात्मा दो वर्ग होते हैं । प्रपंच वर्ग में अनेक शोधों के रुप में सफल बना कर आत्मा मनुष्य को सुखों और दुखों के सागर में डुबाती है । प्रपंच की प्रगति में आगे बढा मानव सभी उन्हीं के प्रवीणता से हुआ समझता है । प्रपंच संबंधित अनेक रोगों की दवाईयों का अनेक सुखों के उपयोग में आनेवाली वस्तुओं का आत्मा द्वारा ही पता लगा है । ये सब प्रपंच वर्ग से संबंधित विषय है । प्रपंच वर्ग से संबंधित अनेक विषयों का सबके द्वारा उपलब्ध न कर कुछ लोगों के शरीरों द्वारा उपलब्धी कराई गई । प्रपंच विषयों को सावधानी से

कुछ लोगों के आत्माओं द्वारा बर्हिगत हुआ है, परमात्मा वर्ग से संबंधित विषय कुछ लोगों के शरीर से बर्हिगत न हो कर बल्कि एक विशिष्ट शरीर से बाहर कहलवाया जाता है । प्रपंच संबंधित विषयों का रहस्य कुछ खास लोगों द्वारा ही बर्हिगत होना तथा परमात्मा संबंधित विषयों का एक शरीर के आत्मा द्वारा बर्हिगत होने को भूलना नहीं चाहिए । परमात्मा के विषयों तथा रहस्यों को बताना उस विशेष आत्मा वाले व्यक्ति को भगवान कह सकते हैं। परमात्मा के विषयों को एक भगवान के अलावा और किसी को ज्ञात नहीं होता है। तीसरा पुरुष अर्थात् परमात्मा के विषयों को एक भगवान की आत्मा ही बतलाती है । भगवान के अलावा अन्य मनुष्यों की अंदर की आत्मा प्रपंच के अनेक मुख्य विषयों को बता सकती है ।

जगत में भगवान बनकर आए श्रीकृष्ण जी परमात्मा के स्वरुप में धरती पर जब जन्म लेते है उस जन्म को भगवान कहते हैं । पुराणों के अनुसार राम को भी भगवान ही माना जाता रहा है। यहाँ शास्त्रों के अलावें पुराणों को न मानें, अनुरोध है। परमात्मा ने कृष्ण से पहले कौन सा जन्म लिया इसकी किसी को जानकारी नहीं है। दशावतार श्री महाविष्णु के लिए कहे गए हैं । आकार तथा नाम से विष्णु के जन्मों के बारे में कहने के साथ-साथ, निराकार तथा बिना नाम वाले परमात्मा के बारे में उनके जन्मों के बारे में हम कह रहे हैं । पूरे प्रपंच में व्याप्त सभी के अंदर में वास परमात्मा ने स्वयं भगवद गीता में अनेक आध्यात्मिक रहस्यों का वर्णन किया है। मानवों के लिए अनभिज्ञ अनेक रहस्यों को भगवान की आत्मा द्वारा बर्हिगत हुआ है।वे रहस्य मनुष्य के जन्म और मृत्यु के बारे में हैं, उनमें से मरण रहस्य को मरण सिद्धांत के रुप में , जन्म के रहस्य को जन्म के सिद्धांत के रुप में प्रस्तुत कर रहे हैं । जन्म लेते समय स्मरण हो तो जन्म का रहस्य , मरते समय स्मरण हो तो मरण का

रहस्य बता सकते हैं । किसी के याद में न रहनेवाली , किसी को मालूम न होने वाली को आप कैसे लिख रहे हैं दूसरों द्वारा पूछे जाने से पहले जन्म के सिद्धांत का भगवद गीता के संख्या योग के 22 वें श्लोक में "**वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति, नरोऽपराणि तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवाति देही "।** इसके अनुसार लिखा गया है । उसी प्रकार से मरण का सिद्धांत भी अक्षर परब्रम्ह योग के छठवें श्लोक में **यं यं नापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम** , **तं तमैवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावित :** इसके अनुसार हमने लिखा है कह रहे है।

आत्मा , कितनी भी बड़ी रहस्य क्यों न हो सूचित करवाती है । विशिष्ट रुप मे भगवान की आत्मा , परमात्मा के विषयों को सूचित करती है । भगवान की आत्मा द्वारा सूचित किए विषयों को इसके पहले भी हमने कई बार बताया है। अब भी भगवान की आत्मा द्वारा सूचित किए विषयों की ही जानकारी दी जा रही है बिना असूय के समझ सकेंगे मुझे उम्मीद है । मुख्य रुप से भगवान द्वारा सूचित किए विषयों को माया - मोह में फँसा व्यक्ति इतनी आसानी से विश्वास नहीं करेगा । जन्म - मरण का रहस्य भी उसी तरह के है इसलिए सावधानी से परिशीलन कीजिए अनुरोध कर रहे हैं । कुछ पन्नों को पढ़ कर तुरंत निर्णय न लें पूरा पढ़कर भाव को समझिए । जन्म - मरण का विवरण रहस्यमयी है इसलिए इसका नया लग कर अविश्वास हो सकता है। इसलिए यह विवरण कहना पडा । जन्म - मरण के विषय भगवान की आत्मा से बर्हिगत हुए विषय है, न कि जीवात्मा अर्थात् मेरा नहीं । अब मरण के बारे में विवरण देखेंगें ।

मनुष्य के लिए मरण दो तरह के हैं । पहला अकाल मरण तथा दूसरा काल मरण कहते हैं **। पूरे शरीर को न छोड़कर शरीर**

के दस भागों को मात्र छोड़ने वाले मरण को अकाल मरण कहते हैं। अकाल मरण को प्राप्त होने वाले अन्य चौदह शरीर भागों में जीवित रहते हैं। पूरे चौबीस भागों को छोड़ने वालों का काल मरण होता है ।_ अकाल मरण को प्राप्त होने वाले बिना दिखाई पड़े जीवित होते हैं । इसलिए वह नाम मात्र का मरण है परन्तु पूरा मरण नहीं मालूम रहें । काल मरण को पाने वाला ही मात्र पूरे शरीर को छोड़ दूसरे जन्म में जाता है । इस प्रकार के मरण के बारे में अभी पूरी जानकारी करेंगें । मरण का अर्थ पहले ही ज्ञात हो चुका है । मरण के समय में क्या होता है, उस समय में जीव को कौन सी अनुभूति होती है , परिस्थिति कैसी होती है , जीव शरीर को किस प्रकार से छोड़ कर जाता है, मालूम करना होगा । शरीर जीव के साथ कुल 25 भागों में बँटा हुआ है। जीव के अलावा 24 भागों को शरीर में आत्मा ही शक्ति देकर संचालन करती है । शरीर के अंदर आत्मा और परमात्मा को भागों में गिना नहीं जाता । शरीर के भागों में गिने जाने का एक सूत्र होता है । शरीर में विशेष कार्यों को करने के लिए जीव के साथ कुल पच्चीस भाग होते हैं । आत्मा सारे भागों को शक्ति देकर हरकतें करवाना तथा पूरे शरीर में व्याप्त होने की वजह से उसे भाग के रुप में पहचान पाना असंभव है । 25 **भागों के शरीर को "सजीव शरीर" कहते हैं** 1 25 **भागों में से** 10 **भागों के ऊपरी शरीर को "स्थूल शरीर" कहते हैं ।** 15 **भागों के अंदर के शरीर को "सूक्ष्म शरीर" कहते हैं ।** शरीर स्थूल तथा सूक्ष्म दो तरह के होते हैं । धरती के ऊपर बिना स्थूल शरीर के सूक्ष्म शरीर रह सकता है , लेकिन बिना सूक्ष्म शरीर के स्थूल शरीर नहीं रह सकता है। स्थूल शरीर को ऊपरी शरीर तथा सूक्ष्म शरीर को आँतरिक कह सकते हैं । आँतरिक शरीर में ही जीवात्मा वास करता है । जीवात्मा वास करने वाले आँतरिक शरीर

खत्म होते ही बाहरी शरीर मृत देह हो जाता है । आँतरिक शरीर रहने तक ही बाहय शरीर का मान रहता है । आँतरिक शरीर नहीं रहने से बाह्य शरीर मृत शरीर होकर सड़ जाता है । स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर रुपी सजीव शरीर के बारें में जानकारी के बाद मरण के बारें में सुलभता से जान सकते हैं।

घर के अंदर पंखे से हवा बहती है । बल्ब रोशनी देती है , TV सिनेमा दिखा सकती हे , ये सब उनके कामों के चलते अलग - अलग उपकरणें होने के बावजूद इन सब में एक शक्ति की आवश्यकता होती है । वह है विद्युत शक्ति । ठीक उसी तरह शरीर रुपी घर में 25 उपकरण लगे होते हैं । सब अलग - अलग कार्यों को करने के बावजूद सबमें एक शक्ति की आवश्यकता होती है, वह है आत्मशक्ति । आत्मशक्ति सारे अव्यवों में प्रसार होकर उन से विविध कार्य करवाती है । शरीर के बाह्य अव्यवों में तथा आँतरिक अव्यवों में आत्मशक्ति आधार रहती है । यही सजीव शरीर का विधान है । शरीर की आयु समाप्त होते ही मरण आसन्न हो जाती है। मरण आने के समय तक शरीर के सारे अव्यव काम करते हैं । शरीर के हर काम को आत्मा ही करवाती है इसका जिक्र हमनें पहले भी किया । एक शरीर में एक कार्य के होने में उस कार्य से कष्टों या सुखों को उस शरीर में वास जीव अनुभव करने के लिए होता है । उदाहरण के लिए रास्ते में किसी को दस kg चावल की बोरी मिली सोचते हैं , बोरी को उठाकर ले जाते समय बोझ की पीड़ा को भी अनुभव करता है । इस कार्य में जीव कुछ सुख तथा कुछ पीड़ा दोनों का अनुभव करता है ।यह कार्य होने के लिए उपयोग होने वाले शरीर के सारे भागों को आत्मा - शक्ति आधार है । आत्म - शक्ति से उस कार्य को करवाने में जीव का कुछ प्रारब्ध कर्म का अनुभव करना , कुछ आगामी कर्म का उपार्जन

करना होता है । किए गए कार्य सब को दिखाई पड़ने के बावजूद , कार्य होने की वजह प्रारब्ध किसी को दिखता नहीं है । उसी तरह कार्य से उत्पन्न आगामी कर्म भी किसी को दिखाई नहीं देता है । आत्मा ही सारे कार्य को करवाने के बावजूद आत्मा उस प्रकार से करवाना भी प्रारब्ध कर्म ही कारण होता है । इसलिए आत्मा मनुष्यों से विविध कर्मों को विविध प्रकार से कार्य करवाती है । ऐसा करवाने की वजह से जगत सारा अजीबों गरीब कार्यों से दिखलाई पड़ता है ।

अनेक प्रकार के कार्यों का होते रहना जगत में करने वाला आत्मा हो, या करवाने वाला कर्म हो, किसी को दिखलाई नहीं देता है । अनुभव करनेवाला जीव अपने स्थिति से बेखबर होकर सारे हालातों का कर्ता खुद को ही समझ रहा है । शरीर से कर्म करवाना, आत्मा करना , इन सब से बेखबर जीवात्मा खुद को कर्ता मानने का, एक ऐसा ही उदाहरण को विशदपूर्वक देखेंगे । इससे पहले दस किलो चावल की बोरी के विषय में हम कह रहे थे । उसी विषय में आगे बात करेंगें। एक आदमी मेहनत मजदूरी कर कुछ पैसों को कमा कर पास के गाँव में सरकारी स्टोर्स से दो रुपये किलो के हिसाब से 10 किलो चावल को खरीद कर अपने गाँव जा रहा था । रास्ते में बर्हिभूमि यानि शौच के लिए जाना पड़ा । चावल की बोरी को साथ क्यों ले जाए सोच कर रास्ते में रखकर थोडी दूर झाड़ियों की ओठ में गया । इतने में कोई उस रास्ते से आया, उस बोरी देखा , उनके शरीर से आँखों की दृष्टि उस बोरी पर पड़ते ही आँखों तक व्याप्त मन उन विषयों को लेकर अंदर के बुद्धि को पहुँचाती है । बाहरी विषयों को महसूस कर बुद्धि अंदर ही अपने चारों ओर के गुणों से विचार करना शुरु किया । गुण अच्छा और बुरा दो प्रकार के होते हैं । इसलिए बुद्धि ने दो प्रकार से विचार किया । वे इस प्रकार हैं।

सद्‌गुण – **किसी की होगी बोरी जो नीचे गिर गई ।**

दुरगुण - किसी की भी हो, यहाँ तो कोई है नहीं। उठा लो

सद्‌गुण - बोरी गिरने का विषय जान वापस आकर ले जाएगा। हम क्यों लें ? नहीं

दुरगुण - जब यहाँ कोई है ही नहीं तो मिला माल अपना है उठा लो।

सद्‌गुण - खोने वाला आकर देखेगा किसी ने ले लिया सोच कर दुखी हो जायेगा न।

दुरगुण - खो देना उनकी गलती, मिले तो नहीं ले सकते क्या।

सद्‌गुण - खोने वाला मेरा माल गुम हो गया सोचकर दुखी होगा।

दुरगुण - किसी के दुखी होने से क्या होता है जो मिला उसे छोड़ेंगे क्या ?

सद्‌गुण - यह गलत काम है मत लो।

दुरगुण - अच्छे - बुरे का सोचें तो जीना मुश्किल होगा पहले उठा लो।

इस तरह से दो प्रकार के गुणों की वजह से बुद्धि का सोचना उस कार्य का होना या न होना कर्म के अनुसार निर्णय होता है। प्रारब्ध कर्म के अनुसार उस बोरी को ले जाना था। दो प्रकार के सोचों को बुद्धि सोच कर कोई निर्णय नहीं ले सकती। बुद्धि गुणों से सोचती है निर्णय नहीं लेती। निर्णय लेना बुद्धि के पास ही चित्त का होता है। बुद्धि द्वारा सोचें गए विषयों को चित्त ही निर्णायक है।

चित्त अर्थात् निर्णय लेना या मानना है । चित्त अच्छें या बुरें किसी एक का निर्णय में लेती है । जीव के गत जन्म में किया गया प्रारब्ध कर्म के अनुसार जो होना होगा या न होना होगा उसी के अनुसार चित्त निर्णय लेती है । उस बोरी को उठा कर थोड़ा संतोष से, दो किलो मीटर ढ़ोते हुए थोड़ा बोझ की पीड़ा को अनुभव करना था इसीलिए उनके अंदर के चित्त ने उस बोरी को उठा लेने का निर्णय दिया और तब उस समाचार को चित्त से मन तक पहुँचा मन से बाध्य कर्मेन्द्रियाँ हाथों तथा पैरों तक पहुँची । मन से आये समाचार को हाथ और पैर आचरण करते हैं । इन सब में जीव का प्रमेय कुछ भी नहीं होता । कार्य के शुरु में उनको बहुत बड़ा लाभ होने का सोच कर थोड़ा संतोष होना , ढ़ोते समय पीड़ा अनुभव करना जीव के लिए था । इस तरह से किए गए कार्यों में पीड़ा और सुखों को अनुभव करने के सिवा कार्य के होने में किसी भी तरह से जीव का हस्तक्षेप नही होता है । इस कार्य के कर्ता प्रारब्ध कर्म और अव्यवों को शक्ति देकर संचालन करने वाली आत्मा है । शरीर के बाहय कर्मेन्द्रियाँ हाथों और पैरों का इस कार्य में उपयोग हुआ । इतना ही नहीं किए गए कार्य का मैं ही कर्ता हूँ सोचना जीव के अहं द्वारा हुआ। अहं, चित्त के बगल में ही होती है । अहं के भाव से प्रेरित होकर जीव का नाम मात्र भी संबंध नहीं होने पर भी उसे मैंने किया सोचने की वजह से कार्य के नये कर्म अर्थात् आगामी कर्म जीव के साथ जुड़ जाता है । शरीर के अन्दर जीव, बुद्धि , चित्त तथा अहं के आकार को चित्र में देख सकते हैं ।

रास्ते में चावल की बोरी का दृश्य बुद्धि को पता चलने पर सिर के अंदर गुणों ने कार्य किया । अंदर गुणों में अच्छे-बुरे वर्ग दो प्रकार के होते हैं । बुरे वर्ग में लोभ गुण में चावल की बोरी के लिए विचार देना उसके विपरीत वर्ग अच्छे गुणों से विचार किया
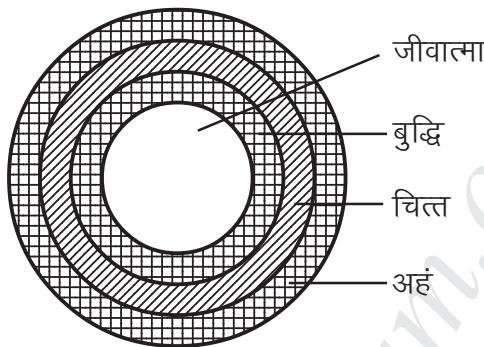
गया। उस समय के कर्मानुसार निर्णय हुआ। यहाँ इस कार्य में लालच गुण ने कार्य किया। अनेक संदर्भों में अलग - अलग कार्यों में उस कार्य के अनुसार अलग - अलग गुण कार्य करती रहती है। गुणों में ही जीव, बुद्धि, चित्त और अहं सदा निवास करते रहते हैं। गुणों में जीव का होना चित्र में देखिए।

जीव शून्य होकर शून्य में होना, उस शून्य को बुद्धि की परत लिपटी होती है। बुद्धि की परत के बाद चित्त की परत चढ़ी रहती है। चित्त के परत के बाद अहं की परत होती है। इस तरह से तीन परतों के मध्य शून्य होकर जीव रहता है। तीनों परतों
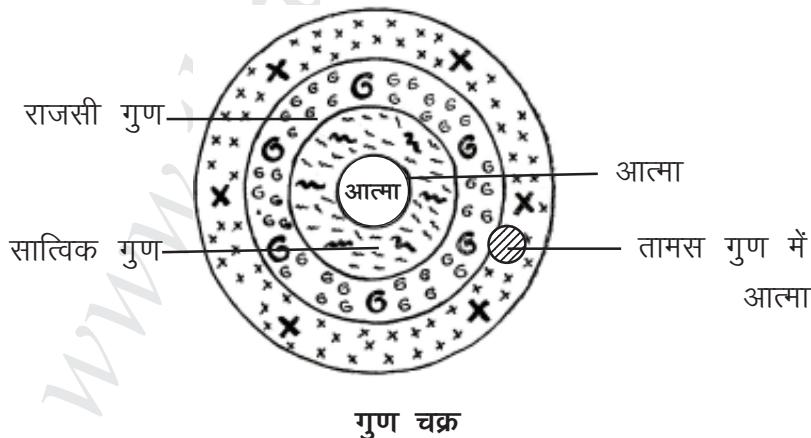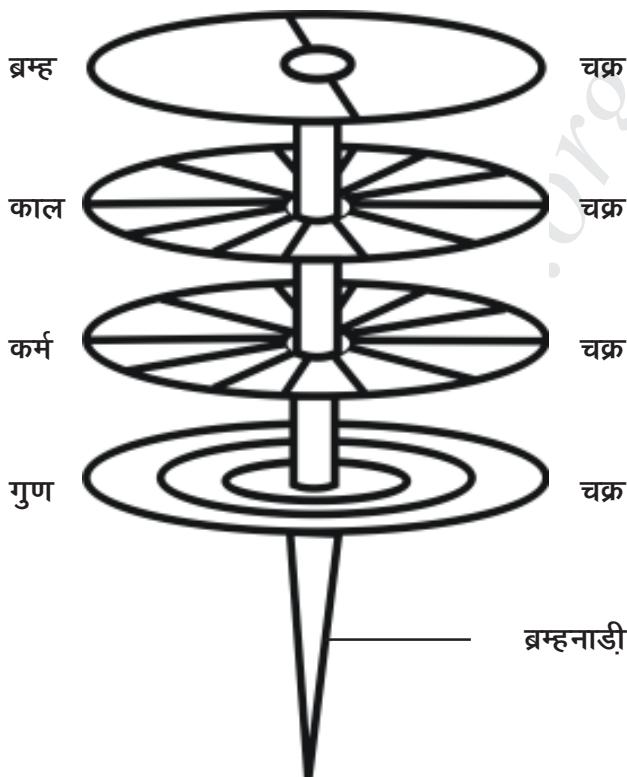
गुण चक्र

<u>ब्रम्ह काल कर्म गुण चक्रों का चित्र</u>

के बीच में रहने के कारण परतों के साथ जीव का भी आकार बन गया। गोलाकार में बुद्धि चित्त, अहं के साथ ही जीवात्मा तीन गुणों में से किसी एक गुण में रहता है। जीव को अपने साथ ही रख तीन गुणों का वृत्ताकार चक्र की तरह होता है। तीनों गुणों के मध्य आत्मा धुरा में रहती है। आत्मा तीन गुणों के चक्र के अलावा आत्मा कर्मचक्र में तथा कर्म चक्र के ऊपर काल चक्र में उसके ऊपर ब्रम्हचक्र में भी होती है। ब्रम्ह, काल, कर्म, गुण चक्रों को चित्र में देख सकते हैं।

इस प्रकार से चार चक्रों का चक्र के ललाट भाग के समानान्तर से सिर के मध्य भाग में होता है। निचले चक्र के अंदर जीव वहाँ गुणों में फँसा होता है, ऊपर के कर्म चक्र से कर्म नीचे की ओर प्रसार होता है। जो कर्म होने का सूचित करता है। इस प्रकार से काल के अनुसार कर्म, कर्म के अनुसार गुणों, गुणों के अनुसार कार्य होता है। ब्रम्हनाड़ी को केन्द्र में कर चारों चक्रों के धुरा में आत्मा, गुणों के चक्र के अन्दर में गुणों का शरीर के भागो में गिनती नहीं होती।

रास्ते में चावल की बोरी मिलने का समय, काल (समय) चक्र का अनुसरण कर दोपहर बारह बजे का समय था। अनुभव करनेवाला कर्म, कर्म चक्र का अनुसरण करते हुए थोड़ा संतोष हुआ उससे अधिक पीड़ा का अनुभव हुआ। गुणों का कार्य करना गुण चक्र में लालच का होना। जीव को आगामी कर्म पाप मिली। इस कार्य में कार्य किए शरीर के बाहरी भाग पैरों, हाथों, आँखों, आँतरिक मन, बुद्धि, चित्त अहं, और जीव। इस तरह से अनेक समयों में अनेकों प्रारब्ध कर्म को शरीर द्वारा अनुभव कराया जाता है। जीव भोगते हुए अहं से फिर नये कर्म का उपार्जन करता रहता है। यह विधान सबके साथ होता है। पुराने कर्म को अनुभव करते हुए नये कर्म को उपार्जन करने के कारण जीव को मरने के बाद भी दोबारा नया जन्म लेना पड़ता है। जनन और मरण कर्मों के कारण ही होता रहता है। यही जीवन काल में होने वाला नियम है।

मरण समय में शरीर की अवस्था जानने के लिए जीवन काल कैसा होता है जानने की आवश्यकता है। इसलिए अब तक सजीव शरीर के अंदर काल, कर्म, गुणों के कार्यों की जानकारी

किया गया। जीव, आत्मा, अव्यवों के विषय भी मालूम हुआ। अब मरणावस्था के विषय को ही जानना है । जितने दिनों तक जीवित रहते है जीव शरीर में सुखों और दुखों को अनुभव करना रहता है, निद्रा के समय को छोड़ जाग्रत में स्वप्न में प्रारब्ध कर्म अनुभव में आता रहता है। पैर में काँटा चुभने का दर्द मन द्वारा बुद्धि को बुद्धि द्वारा जीव को अनुभव में आता है। हर अनुभव को बहुत तीव्र गति से जीव के पास पहुँचने की यांत्रिक व्यवस्था शरीर में होती है। इस शरीर रुपी यंत्र मरण समय में स्तंभित होना शुरु हो जाता है। उस समय को " अवसान दशा " कहते हैं। जीवन में शरीर की पाँच दशाएँ होती है। 1. बाल्य 2. यौवन 3. कौमार्य 4. वृद्धावस्था 5. अवसार दशा। बाल्य दशा, यौवन दशा, कौमार्य दशा वृद्धावस्था कुछ सालों तक रहता है लेकिन अवसान दशा केवल पाँच मिनट से आधे घंटे तक रहता है, कुछ लोगों में कुछ अधिक - कम भी हो सकता है। पहली बाल्य दशा से शुरु होकर वृद्धावस्था तक शरीर के आँतरिक तथा बाह्य सारे अव्यव, कर्म गुण सभी एक तरह से अपना-अपना कार्य करती रहतीं हैं। अवसान दशा में सिर्फ शरीर के आँतरिक, बाहय अव्यवों में बदलाव आकर सारे कार्य न कर रुक जाते हैं।

शरीर की सारी दशाओं में पूरे शरीर में व्याप्त होकर शक्ति देकर सारे अव्यवों को कर्मानुसार चलवाकर आत्मा अवसान दशा में पूरे शरीर में न रहकर धीरे-धीरे मुकुलित होती है। अवसान दशा में आत्मा मुकुलित होने के कारण पहले बालों के चर्म से स्पर्श महसूस नहीं होती है। उस समय में चीटिंयाँ का काटना, बिच्छु का डंक मारना महसूस नहीं होता है। जिन्दा रहने के दिनों में सारी दशाओं में चर्म द्वारा पीड़ा का महसूस होता है, परन्तु अवसान दशा में महसूस नहीं किया जाता है। इस प्रकार से देखा जाय तो जीव के लिए सारी

दशाओं में से अवसान दशा बिना पीड़ा के होना कह सकते हैं। पूरे शरीर में आत्मा सिकुड़ते रहने की वजह से कर्मेन्द्रियाँ अर्थात् हाथों और पैरों में काम करने की क्षमता क्षीण हो जाती है और तब मनुष्य का हिलना-डुलना बंद हो कर बिस्तर में ही पड़े रहता है। जबान को हिलाने की शक्ति भी क्षीण हो जाने की वजह से मनुष्य बातें भी नहीं कर पाता है। केवल कर्मेन्द्रियाँ कार्य नहीं कर पाती, कुछ मिनटों तक ज्ञानेन्द्रियाँ कार्य करने की वजह से उनके पास आये मनुष्य दिखलाई पड़ते हैं, उनकी बातें भी सुनाई देती है। उनका किसी से बात न कर पाने की स्थिति होती है। जबान हाथों और पैरों को हिला न पाने की वजह से अपने आप में बेचैनी महसूस करता है। उस समय में शरीर के बाह्य दर्द महसूस नहीं होता है। पैरों का दर्द भी नहीं रहता। शरीर के अंदर अगर कोई दर्द वगैरह हो तो सिर्फ वह ही महसूस होता है। कुछ देर के बाद उस समय तक कार्य कर रहे ज्ञानेन्द्रियाँ यानि आँखें, कान भी शक्तिहीन हो जाती है। नाते- रिश्तेदारों का कहते है देखों तुम्हारा छोटा बेटा आया है, धन को कहाँ छुपाए रखे हो, कुछ इस प्रकार की बातें करते हैं, लेकिन अंदर जीव को इस विषय की जानकारी नहीं रहती है। आँखें खुली होने के बावजूद दृष्टि के न होने से पलकों को बिना झपकाऐ आँखों फाडकर देखते रहना, बाहरी लोगों को दिखता है। उस समय में यमदूतों का आना उन्हें देखते रहना, दूतों के दर्शन से लोगों पर से ध्यान हट गया ऐसा लोग सोचते रहते हैं। अवसान दशा में जब दृष्टि ही नहीं होती, इस बात से अनभिज्ञ लोग, यमदूतों को देखते रहते है, कहना गलतफहमी है।

शरीर के बाह्य ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ काम न कर पाने की वजह से बाह्य पीड़ाओं से मुक्ति पाना हुआ। बाह्य प्रपंच के साथ मन का भी बाहय प्रपंच से संबंध- विच्छेद होकर आँतरिक

इन्द्रियाँ ही काम करती है। आत्मा के साथ- साथ मन का भी बाह्य इन्द्रियाँ से संबंध टूट जाने की वजह से बाह्य विषय बुद्धि तक नहीं पहुँच पाता। बुद्धि तक बाहरी विषय पहुँच न पाने की वजह से विचार नहीं कर पाती। बुद्धि विचार न कर पाने के कारण चित्त काम न करना। कोई कार्य न होने की वजह से अहं भी कार्य नहीं करता। उस समय तक आत्म- शक्ति मिलते रहने की वजह से मन अपने आदतानुसार बीतें कार्यों को स्मरण में लाती है। धीरे -धीरे मन भी कमजोर हो जाता है। उस समय तक मन तक पहुँचने वाली कुछ यादों के अलावा कोई और पीड़ा या चिंता नही रहती। अनेकों शारीरिक पीड़ाएँ, मानसिक वेदनाओं से भरी अशान्त जिन्दगी को अवसान दशा में जीवात्मा पीड़ा रहित स्थिति का अनुभव करता है। न कोई पीड़ा, न कोई चिंता, की स्थिति के बारे में जीवित लोगों को मालूम न होने से मरते समय जीव बहुत पीड़ा को अनुभव करता है मान बैठे हैं। अंत में मन भी शक्तिहीन होकर छोटे - छोटे विषयों को भूल जाता है, उनकी स्मरण शक्ति कम हो जाने से बहुत ही मुख्य विषय जो मन के तह तक पहुँचे होते है उसे याद करता है। इस विषय को बुद्धि ग्रहण कर जीव को सूचित करती है। मन अंत तक यादों के स्मरण में रहता है। अंत में मन सारे विषयों को भूल कर आखिरी विषयों में से किसी एक विषय की याद में रहता है। वह ही मन की आखिरी याद है। उस विषय से बढ़कर दूसरी और कोई बात मन में नहीं होती। उस आखिरी विषय को बुद्धि द्वारा जीव ग्रहण करता है जीवन काल में जिस किसी को महत्वपूर्ण समझा हो, वह विषय मनुष्य के लिए प्रमुख होता है, जिस विषय को जीवन का ध्येय मान कर, जीवन के सारांश के रुप में सोच कर जी रहा था, वह विषय ही सबसे आखिरी याद होगा। इन आखिरी विषयों को मन के फलक पर बुद्धि

द्वारा जीव देखते रहना, आत्मा अपनी शक्ति को बुद्धि और मन से भी मुकुलित होने के कारण सारे अव्यव रुक कर अचेत हो जाते हैं। शरीर में उस समय तक सारी दशाओं में कार्य कर रहें चौबीस भागों का अंत हो जाता है। अंत में जीव अकेला रह जाता है। आत्मा शरीर पूरे से सिमट कर अपने निवास केन्द्र ब्रम्हनाड़ी में पहुँचती है। पूरा शरीर मृत होकर सिर के मध्य में ब्रम्हनाड़ी में आत्मा तथा गुण चक्र में जीव रहता है। उस स्थिति में कुछ ही सेकेंड रहकर आत्मा ब्रम्हनाडी को छोडकर अपने साथ के चार चक्रों को लेकर शरीर को छोड़ देती है। उसी समय पूरा मरण होता है। अवसान दशा में आत्मा सिकुड़ कर शरीर के भागों को छोड़ कर अंत में अपने साथ जीव को, उनके चारों ओर लिपटी गुण चक्रों को, उसके ऊपर के कर्म, काल ब्रम्ह चक्र को लेकर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। इस विषय में भगवद गीता के पुरुषोत्तम प्राप्तियोग के आठवें श्लोक में ***"शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः गृहीत्वैतानि संयाति वायूर्गन्धानिवाशयात् ।"*** आत्मा जिस शरीर से निकल कर दोबारा जिस किसी शरीर में प्रवेश करती है वहाँ अपने साथ गुणों, कर्मों, जीव तथा हवा के सुगंध को लेकर जाती है।

मृत शरीर से आत्मा चार चक्रों के साथ प्रस्थान करती है। आत्मा चार चक्रों के मध्य धुरा में होने की वजह से आत्मा जहाँ जाए उससे लगी हुई चारों चक्र भी जाते हैं। एक मनुष्य को ही नहीं बल्कि हर जीवों में इन चार चक्रों में व्यवस्था होती है। कोई भी प्राणी का शरीर मरण को प्राप्त करने से उसमें से आत्मा चार चक्रों के साथ बाहर निकलकर अदृश्य हो जाती है। जिस तरह से हवा में सुगंध का अदृश्य होकर दूसरी जगह बहना, उसी तरह आत्मा भी सूक्ष्म रुप में जाती है, आत्मा, जीवात्मा, गुणों और कर्म कुछ भी दिखाई नहीं देते हैं। इसलिए हमारे सामने ही उनका

मृत शरीर से जाना हम पहचान नहीं पाते है। आत्मा के आधार से चार चक्र आत्मा के साथ जाने की वजह से नीचे चक्र में गुणों के साथ जीवात्मा भी चली जाती है । आत्मा और जीवात्मा दोनों जोड़ी आत्माएँ है । इसलिए एक के जाते ही दूसरे को भी जाना पड़ता है ।

प्राचीन काल से ही मनुष्यों के लिए मरण काल में अविज्ञ रहस्य इस प्रकार है। आत्मा का चार चक्रों के साथ बाहर जाने का विषय अब तक किसी को ज्ञात नहीं है । किसी गुरुओं द्वारा भी बोध नहीं किया गया , किसी पुस्तक में भी लिखा नहीं गया , किसी भी युग में भी चार चक्रों का विवरण किसी के न कहने की वजह से इस विषय में नयापन लग सकता है । इसलिए इसे सावधानी से पढ़कर समझें । तेरा मेरा का भेद न करके हर प्राणी के शरीर के सिर में ब्रम्ह ,काल। कर्म और गुण चक्र रहते हैं । इस सूक्ष्म रुप का ज्ञान दृष्टि को ही दिखाई देता है । इसे ज्ञान से जान सकते हैं । आध्यात्मिक विद्या में अति रहस्यमयी चार चक्रों को अगर समझ सकें तो जनन- मरण का रहस्य आसानी से समझ में आ जाएगा । पाठकों को समझने के लिए सूक्ष्म रुपी चार चक्रों तथा गुणों के चक्र में जीवात्मा को चित्र के रुप में दिखाया गया है ।

चारों चक्रों यानि काल, कर्म , गुण के चक्रों के विषय में अब तक कुछ समझ गए होंगे । सबसे ऊपर ब्रम्ह चक्र विश्व की आयु से संबंधित है । इसलिए उस विषय में अभी चर्चा करना व्यर्थ है । जैसे फूलों में सुगंध न दिखाई देना , सुगंध हवा में मिलकर दूसरी जगह में जाना , ठीक उसी तरह से मरण के बाद चारों चक्रों की व्यवस्था क्षणों में दूसरे शरीर में प्रवेश करता है । वास्तव में देखा जाए तो एक या दो सेकेण्ड में ही दूसरे शरीर में प्रवेश होता

काल चक्र

है । अब विस्तृत कर देखा जाए तो मरने वाला व्यक्ति के शरीर में श्वास का लेना - छोड़ना चलता रहता है लेकिन अवसान दशा में नसिका के रंद्रों से लिया गया श्वास मरण से आखिरी बार छोड़ता है । बाद में दोबारा नहीं लेता है । छोड़ा गया श्वास दोबारा नसिका के रंद्रों में जाना सहज कार्य होने के बावजूद, मृत शरीर में न जाकर आत्मा का प्रवेश जिस किसी शरीर में होता है उसी शरीर में श्वास का प्रवेश होता है । यहाँ छोड़ा गया श्वास यहीं न लेकर यहाँ से जरा भी देर किए बिना दूसरे शरीर से श्वास ऊपर लिया जाता है । इससे यह सिद्ध होता है कि श्वास का लेना और छोड़ना जारी रहता है । मरण के बाद श्वास पुराने स्थान यानि शरीर में न जाकर नये शरीर में ऊपर की ओर लिया जाता हे । मृत शरीर से निकल कर नये जन्में शरीर में हजारों मीलों की दूरी होने के बावजूद क्षण काल में ही आत्मा वहाँ पहुँचती है । मृत्यु के पश्चात् जीव तुरंत दूसरे शरीर में प्रवेश करता है यमराज

या यमलोक जैसी कोई जगह ही नहीं है। ऐसे में कुछ लोग सवाल कर सकते हैं कि यमराज की नौकरी का क्या होगा ? आपके द्वारा सोचा गया यमलोक और यमराज केवल कल्पना मात्र है । हम लोगों के सारे पाप - पुण्य इस धरती पर जन्म लेकर ही भोगना पड़ता है । पुण्य करने वालों का तथा पाप करनेवालों का भी स्वर्ग-नर्क यहीं पर होता है ,मालूम होना चाहिए।

कर्म चक्र
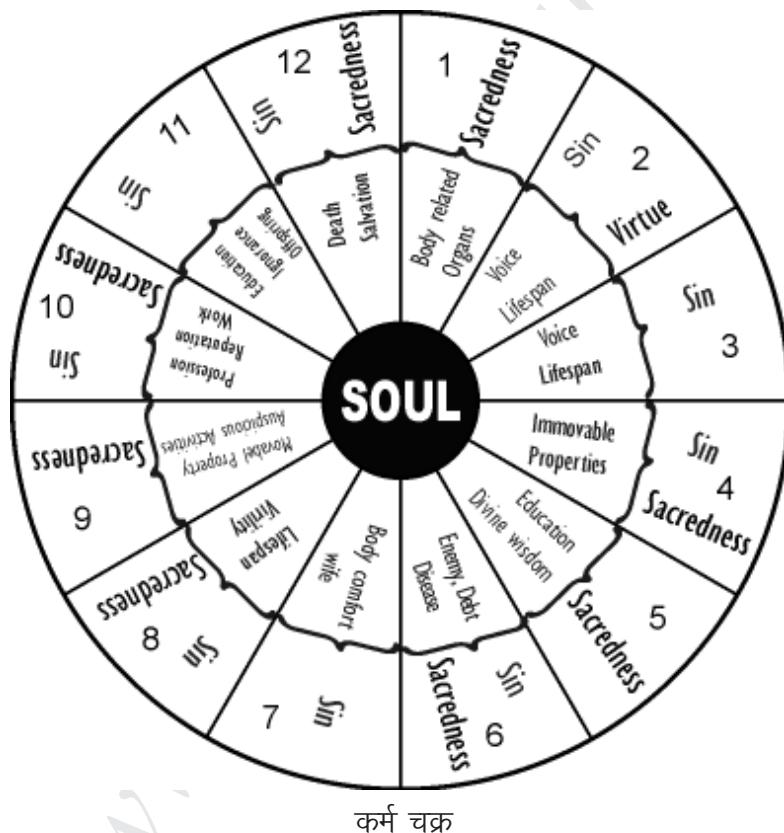
कितनी भी दूर क्यों न हो 1 या 2 सेकेण्ड के समय में आत्मा जीवात्मा के साथ धारण करने वाला शरीर फलां प्रदेश में होने

का क्या अभास होता होगा ?ऐसा प्रश्न कुछ लोगों में उठ सकता है । इसका जवाब देखते हैं । मरण से पहले अवसान दशा में मन की्‌ जो आखिरी याद होती है उसी से संबंधित जन्म होना भगवद गीता में कहा गया है । अंतिम स्मरण को दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है । परमात्मा संबंध सारे स्मरण एक प्रकार का , सारे प्रपंच संबंधी दूसरी प्रकार का कह सकते हैं । अंतिम स्मरण जिस प्रकार का हो , जिस स्थाई का हो उसी के अनुसार नया जन्म होता है । इसके बारे में भगवद गीता के अक्षर परब्रम्ह योग में " **यं यं वापि स्मरनभावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्, तं तमेवैति कौन्तेय** " कहा गया । इसके अनुसार अंतिम क्षण में जो स्मरण रहता है उसी से संबंधित जन्म लब्ध होता है । अंतिम क्षण में अगर प्रपंच संबंधित स्मरण रहें तो उसी भाव से औसतन , जन्म किस स्थल में होना हो , किस घर में होना हो, उसी घर में जन्मा शिशु में आत्मा पहुँचती है । शरीर को छोड़ते ही तुरंत आखिरी मनोभावों के अनुरुप योग्य शरीर जहाँ जन्म लेता है , वहीं आत्मा सीधे जा सकती है । जीव के प्रारब्ध कर्म के अनुसार जिस किसी शरीर में प्रवेश करना हो उस शरीर के अंदर आत्मा का प्रवेश करने का उचित कारण होता है । अनुभव कराने वाले कर्मों के लिए , जानकारी करवाने वाले ज्ञान के लिए , प्रवेश होने वाला जीवात्मा के लिए , शिशु शरीर के मस्तिष्क में व्यवस्था रहती है । मृतक के अंतिम स्मरण का नये शरीर में उचित व्यवस्था का शरीर ही आत्मा को दिखाई पड़ता है , यही गम्य स्थान है । जिस तरह पानी ढ़लाव की तरफ बहता है वैसे ही आत्मा, मन के अंतिम स्मरण के योग्य शरीर में प्रवेश करता है । कछुआ समुद्र से बाहर निकलकर बालू के गडड़े में अंडे देता है । कुछ दिनों में बालू के अंदर अंडे बच्चे के रुप में बालू से बाहर निकल कर समुद्र की तरह जाते हैं ।

समुद्र किस तरफ है न दिखाई पड़ने के बावजूद उसी तरह बढ़ता चला जाता है। रास्ता भटकने पर भी वह उसी तरह बढ़ता जाता है। समुद्र न मालूम होना, रास्ता भटक कर, फर्लांग लंबी एक बड़ी सी दीवार का बना रहना, कछुए का बच्चा दूसरी दिशा में न जाकर लंबी दीवार के साथ लग चल कर वापस समुद्र की तरफ चल पड़ता है। वैसे ही एक कबूतर हजारों मील दूर से भी अपने निवास स्थान की तरफ ही सफर करता है। नये जन्में कछुए का बच्चा की राह में कितनी बाधाएँ क्यों न हो आखिरकार समुद्र की दिशा को पहचान ही लेता है। उसी तरह रास्ता और दिशा से अनजान कबूतर भी अपने निवास स्थान को आसानी से पहचान लेता है। इस तरह से पहचानने की शक्ति उसके शरीर के अन्दर वास आत्मा की होती है। इसी तरह प्रारब्ध कर्म के योग्य शरीर का तथा अंतिम विचार के अनुकुल तह किए हुए मस्तिष्क के शरीर को आत्मा पहचान लेती है।

मनुष्य का उपार्जन किया आगामी कर्म, संचित कर्म में मिल जाता है। तो फिर मनुष्य के मृत्यु के समय में संचित कर्म से प्रारब्ध कर्म में कैसे बदलता है? कुछ लोग सवाल कर सकते हैं। इसका जवाब है, मृत्यु के समय में शरीर पूरा शक्तिहीन होकर सारे अव्यव कार्य न करने की स्थिति में आत्मा फेफडों द्वारा कम मात्रा में श्वास को चलाते हुए अंत में मन के कार्य का भी ठहराव करती है। उस समय के अंत में जो होते रहता है उसे जीवात्मा देखती रहती है। एक श्वास के अलावा, मन का ठहराव होने के बाद आत्मा ब्रम्हनाड़ी में पहुँच कर चार चक्रों के साथ एक क्षण भी देर किए बिना इसका जिक्र पहले भी किया गया था। उस क्षण के अंतिम मनोदृश्य से संचित से प्रारब्ध का, आत्मा द्वारा चुना जाता है। जीव को अंतिम दृश्य महसूस होने तक प्रारब्ध का निर्णय नहीं

होता है। अंतिम दृश्य के अनुसार प्रारब्ध का, प्रारबध के अनुसार दूसरे जन्म के शरीर का निर्णय होता है। किस शरीर को प्राप्त करना हो उसका निर्णय प्रारब्धं से होता है, प्रारब्ध जीव द्वारा देखें अंतिम मनोदृश्य से निर्णय होता है। अंतिम क्षण में संचित से जब प्रारब्ध का निर्णय होता है उस समय में ही तब तक उपार्जन आगामी कर्म संचित कर्म में मिल जाते हैं। संचित से प्रारब्ध तैयार होना तथा संचित में आगामी कर्म मिलना दोनों एक ही समय में होता है।

मनुष्य अपने जीवन में जिस विषय से अत्यधिक जुड़कर जी रहा हो, जिस विषय पर उनकी इच्छा अत्यधिक हो, जिस विषय को हमेशा याद करता रहता हो, उस विषय का स्मरण ही अवसान दशा में अंतिम बार मन में आकर जीव तक पहुँचता है। हमेशा स्मरण करते रहने से शरीर को छोड़ते समय उसी का स्मरण में आना बाद में उसी स्थिति को प्राप्त करना गीता में कहा गया। **इतना ही नहीं सदा मेरे ही स्मरण में रहो अंतिम बार मेरा ही याद आकर मेरे में ही लीन हो जाओगे।** परमात्मा द्वारा कहा गया ।इन विषयों का गीता के अक्षर परब्रम्ह योग अध्याय के सातवें तथा आठवें श्लोक में *"तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च, माय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः।" "अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्"* इसका भावार्थ है तेरा मन, बुद्धि सभी को मुझे समर्पित कर सर्वकाल में मुझे ही स्मरण करते रहो जरुर मुझमें मिल जाओगे। ध्यान और अभ्यास से मन में मुझे ही स्मरण करते रहो अवश्य मुझमें मिलोगे।ध्यान तथा अभ्यास द्वारा मन में मुझें स्मरण करते रहने से परम तथा दिव्य अर्थात् मुझमें लीन हो जाओगे। गीता में उपाय भी बताया गया है।

जीव का दूसरा जनम कोई भी हो सकता है लेकिन मृत्यु के समय में शारीरिक तथा मानसिक सारे यातनाओं से मुक्ति पाकर किसी भी वेदना का महसूस न होना कह सकते हैं। अब तक दूसरे जन्म में जाने वाले का कोई भी वेदना नहीं होती कह सकते हैं । अब तक दूसरे जन्म में जाने वाले का अवसान दशा में होनेवाले सारे विषयों को विस्तार से जान चुके हैं । यह साधारणतया सबके साथ होने वाली पद्धति है। जीवन में कर्मरहित तथा संचित रहित होने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है । कर्मशेष के बिना मनुष्य का अवसान दशा कैसा होता है जानकारी करते हैं ।

इस जगत में योगियों को ही परमात्मा में लीन होने का अवसर मिलता है । योगियों में तीन प्रकार है । ब्रम्हयोगी, कर्मयोगी और भक्तियोगी , योगियों का अंतिम गम्यस्थान परमपद है । यारों ओर व्याप्त परमात्मा में लीन होने को मोक्ष कहते हैं । ब्रम्ह योगी शरीर में मन को निग्रह कर योग का आचरण करते हैं । कर्मयोगी अहं को दबाकर योग का आचरण करते हैं । भक्तियोगी चित्त का विवरण समझ उससे भाव रहित रहते हैं । इन विधानों से वे परमात्मा में विलीन होने का मार्ग बनाते हैं । कर्म रहित होकर योगीं अंतिम मरण प्राप्त कर परमात्मा में विलीन हो जाते हैं । योगी मरण की प्राप्ति के पश्चात् दोबारा जन्म नहीं लेते । योगियों का मरण दोबारा जन्म लेने साधारण मनुष्य के मरण जैसा नहीं होता । तीनों प्रकार के योगी परमात्मा में विलीन होते है परन्तु उनके मरण में शरीर में कुछ अंतर से बदलाव होकर परमात्मा में विलीन हो जाते हैं । पहला ब्रम्हयोगी अपने जीवन में अपने मन को दबा के रखने की वजह से किसी भी विषयचिन्तनों को मन में न आने देकर दबे रखने की आदत हो जाती है । मनोकार्यों को दबाए गए समय को ब्रम्हयोग का काल कहते हैं । जीवन में बहुत समय तक

ब्रम्हयोग का अभ्यास करते रहना उनके मरणकाल के अवसान दशा में सारे बाह्त्य अव्यवों का ठहराव होकर मन आत्मा में लग्न होकर बुद्धि को आत्मविषय पहुँचाना , बुद्धि आत्म विषयों को जीव तक पहँचाती है । तब जीव आत्मा का साक्षात्कार करता है । मन से बुद्धि को बुद्धि से जीव को आत्म -साक्षात्कार करवाना , मन पहले बुद्धि में मिल जाता है ।मन बुद्धि से अलग न हो कर बुद्धि में लीन होना कभी न होने वाली अनुठी घटना है । जीवित ब्रम्हयोगियों के योगसमय में मन, आत्मा के विषयों को बुद्धि को पहुँचाने के बावजूद वे अलग - अलग ही रहते हैं । लेकिन अंतिम मरण में ही मात्र मन बुद्धि में मिल कर अंत्य हो जाता है । मन से मिलकर विशिष्ट रुप में तैयार हुआ बुद्धि आखिर में जीवात्मा में मिलकर रहित हो जाता है । तब मन , बुद्धि और जीव एक हो जाते हैं , इस विधान से मोक्ष की प्राप्ति मरण समय में सिफ ब्रम्हयोगियों को ही होती है । मन और बुद्धि से मिल कर जीव विशिष्ट रुप में तैयार होकर अंत में आत्मा में मिल उनका भी नाश हो जाता है इसलिए जीव को चर कहा गया है । भगवद गीता में भगवान द्वारा चर कहा जाना जीवात्मा के लिए मोक्ष को पाना मरण समय में चर होकर अपने होने का आभाष नाम मात्र भी नहीं होता है । अनेक युगों से जन्म और मृत्यु लगातार चलते रहना जीवात्मा का अंतिम मरण से उनका न के बराबर हो जाने की वजह से दोबारा जन्म लेने की गुंजाइश ही नहीं होती है । इस तरह से जीवात्मा का पर्दा गिर जाता है । जीवात्मा आत्मा में मिलकर नाश हो जाने पर तब तक की आत्मा , आत्मा न रहकर , विशिष्ट रुप में बदलकर शरीर में ही निवास परमात्मा में मिल जाती है । आत्मा और परमात्मा अनुसंधान होकर शरीर में रहित होने से परमात्मा ही रह जाता है। जैसे ही जीवात्मा आत्मा में लीन होता है तब ही बाहरी श्वास भी रुक जाती

है। इस प्रकार से ब्रम्हयोगियों का अंतिम मरण होता है । कर्मयोगियों का मरण नीचे देखते हैं ।

जीवन में कर्मयोग करने वाले योगी अपने अहं को दबा देते हैं । अहं के कार्य को जानने वाले उनका अनुसरण न करने वाले ही कर्मयोगी है। कर्मयोगियों के अंतिम मरण के अवसान दशा में बाह्य अव्यवों में आत्मशक्ति न होने की वजह से शरीर क्षमता खो देती है । उस समय में मन दैवचिन्तन में दैवत्व को बुद्धि तक पहुँचाना, बुद्धि उस विषय को जीव को पहूँचाती है । बुद्धि द्वारा आया विषय को जीवात्मा अनुभव में रखकर मन बुद्धि में मिलकर रहित हो जाता है । मन से मिलकर बुद्धि ब्रम्हयोगियों की तरह ही जीव से मिलकर अहं से मिल जाती है । मन, बुद्धि , अहं से मिलकर अहं का रुप बदलना फिर जीव में मिल जाता है । मन , बुद्धि और अहं को अपने में लीन कर जीवात्मा विशिष्ट रुप में बदलकर आत्मा में लीन हो जाती है । जीवात्मा को अपने में लीन कर आत्मा अंत में परमात्मा में लीन हो जाती है । यहीं कर्मयोगियों का मोक्ष है । परिवर्तित होकर जीव अंत में आत्मा द्वारा परमात्मा में लीन होकर पूरे विश्व में यानि अणु - अणु में व्याप्त हो जाता है । यहाँ ध्यान देने वाली विषय यह है कि ब्रम्हयोगियों का मन बुद्धि में, बुद्धि जीव में, जीव आत्मा में, आत्मा परमात्मा में लीन होता है, किन्तु अहं तथा चित्त का कहीं भी प्रस्तावना नहीं की गई । कर्मयोगियों में केवल कुछ परिवर्तन से अहं में बुद्धि का मिलना , अहं का जीव में मिलता है। यहाँ भी चित्त की प्रस्तावना भी नहीं की गई। इस विषय का जवाब बाद में देंगे। इस भूमि पर अनुठा भक्तियोगियों का मोक्ष की प्राप्ति कैसे होता है विस्तार से देखेंगे ।

मोक्ष प्राप्त करने के अंतिम मरण में भक्तियोग का अनुसरण करने वालों का पहले शरीर स्तंभित हो जाता है , उसके बाद मन परमात्मा के ध्यान पर ठहर उस विषय को बुद्धि तक पहुँचाता है । बुद्धि जीव तक पहुँचाकर उस अनुभव में जीव ठहर जाता है । उसी समय में मन बुद्धि में मिलकर अंत्य हो जाता है। उसके बाद बुद्धि अहं से मिलकर शून्य हो जाता है और तब विशेष रुप में बदला अहं चित्त में मिल कर रहित हो जाता है । विशेष रुप में अहं से मिल कर चित्त उनका भी दूसरी तरह से बदल कर जीव में मिल जाता है । ब्रम्हयोगियों में अंतिम जीवात्मा से भी तथा कर्मयोगियों में अंतिम जीवात्मा से भी चित्त को भी मिलाकर और भी विशिष्ट रुप में बदल कर जीवात्मा आत्मा में मिल कर नाश हो जाता है । भक्तियोगियों में जीवात्मा का नाश होने के बाद आत्मा परमात्मा में शरीर ही में मिल जाता है। इस प्रकार से भक्तियोगियों अंत में मोक्ष पाकर विश्वव्याप्त होकर हर अणु - अणु में व्याप्त होता है ।

ब्रम्हयोगियों में अंतिम मरण से पहले अहं और चित्त के बारे में वैसे ही कर्मयोगियों में अंतिम मरण में चित्त के बारे में कुछ लोगों द्वारा पूछा जा सकता है । इसका जवाब है । कर्मयोगियों में अहं पर , भक्ति योगियों में चित्त पर ध्यान रहने के कारण शरीर के अंदर वे ही बचे रहते हैं । उनसे ध्यान रहित होकर ब्रम्हयोगियों में बुद्धि जीव से मिलने पर अहं और चित्त दोनों रहित हो जाते हैं । वैसे ही कर्मयोगियों में अहं जीव में मिलने पर चित्त भी नाश हो जाता है । भक्तियोगियों में अहं और चित्त दोनों में बदलाव होकर नाश होते हैं । कर्मयोगियों में ही मात्र चित्त साधारण रुप में नाश होता है , अहं का जीव में बदलाव होकर नाश होता है । योगियों के अलावा साधारण जीवों में भी मरण समय में मन और बुद्धि के नाश होने से ही चित्त और अहं दोनों नाश होते हैं ।

दूसरे जन्म में जाने वालों का मरण में मन , बुद्धि, चित्त और अहं किसी भी प्रकार से बदलाव न होकर केवल शक्तिहीन होकर उसी तरह से रहते हैं । अब तक योगियों के शरीर में दोबारा जन्म रहित अंतिम मरण कैसा होता है जानकारी दिया गया । यहाँ कुछ और भी बातें जानने की जरुरत है वह इस प्रकार से है । क्या सारे योगियों का मरण इसी प्रकार से होता है ! का प्रश्न आ सकता है । इसका जवाब है । योगी होने के बावजूद इसी प्रकार से मरण प्राप्त करने की कोई गुंजाइश नहीं होती । क्योंकि जिन योगियों का कर्मशेष नहीं रहता उन योगियों को ही मात्र अंतिम मरण की गुंजाइश होती है । और तब ही योगियों को मोक्ष की प्राप्ती होती है । योगी होना मात्र से ही परमात्मा में लीन नहीं हो सकते , साधारण मरण की भी गुजाइश हो सकती है। जिन लोगों का कर्म शेष नहीं होता उनका मरण प्राप्त करते समय बाहरी लोगों द्वारा ग्रहण करने की गुंजाइश हो सकती है। सम्पूर्ण योगी , कर्म रहित लोगों का अन्तिम मरण समय कुछ इस प्रकार से है, दिन का होना , महीनों में शुक्ल पक्ष , वर्ष में उत्तरायण । दिन में शुक्ल पक्ष , उत्तरायण होने के बावजूद भी मृत्यु को प्राप्त करने वाले योगियों के शरीर पर सूर्य की रोशनी न पड़े तो उनका अंतिम मरण नही था , कर्मशेष बचा था , उनका दोबारा जन्म होगा कह सकते हैं । योगी न होने के बावजूद दिन, शुक्लपक्ष , उत्तरायण और सूर्य की रोशनी का होना , ऐसे समय में मृत्यु की प्राप्ति हो तो भी यह नियम उन लोगों पर लागू नहीं होता । इस नियम का योगियों पर ही लागू होना भगवद गीता के अक्षर परब्रम्हयोग के 23 वें श्लोक में *"यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः प्रयाता यान्ति तं कालं् वक्ष्यामि भरतर्षभ "* **"जिस काल में मरने से योगियों को मोक्ष प्राप्त होता है , जिस काल**

में मरने से दोबारा जनम होता हो , उस काल के बारे में कह रहे हैं कहा गया।

इस श्लोक में "योगिन :" शब्द पर विशेष रुप से ध्यान दीजिए । धूप का होना , दिन में , शुक्लपक्ष , उत्तरायण में मृत्यु हुए योगियों को ही मोक्ष की प्राप्ति होती है , मेघों से भरी दिन हो या रात में, कृष्ण पक्ष और दक्षिणायण में मृत्यु हुए योगियों का दोबारा ज्ञान प्रकाशवान होकर जनम लेते हैं , गीता में कहा गया है । इससे यह सिद्ध होता है कि साधारण मनुष्यों में मरण भगवान द्वारा कहा गया काल निर्णय लागू नहीं होता है । अब तक मरण के बारे में जानकारी किया गया । यह सर्वसाधारण मनुष्यों के प्रति तथा ब्रम्ह कर्म का भक्तियोगियों में किस प्रकार होता है विवरण दिया गया । मरण के बारे में विस्तार से न भूत काल में था , न ही भविष्य में इससे बढ़कर विवरण कोई दूसरा बता नहीं पायेगा हम कह रहे हैं । गर्व कहना गलतफहमी में न रहिए । गर्व का मैंने उपयोग किया किन्तु गर्व ने मेरा उपयोग नहीं किया ।

मरण कहने से ही भयभीत होने वालों के लिए इस विषय की जानकारी उपयुक्त सिद्ध हो सकती है । पुराणों में , प्राचीन काल में लंबी जटा रखने वालों पर विश्वास करने वाले लोग उनके द्वारा कहें मरण काल में यमदूतों के बारे में क्यों नहीं लिखा गया , हम कैसे मानें कि यही सच है या वह सच नहीं, अगर आप ऐसा सोच रहें हो तो हमारा प्रश्न होगा शास्त्रबद्ध रहित विषयों पर क्यों विश्वास किया जा रहा है। जबकि भगवद गीता में अनेकों प्रमाणपूर्वक स्वयं भगवान ने वर्णन किए विषयों को हमने विस्तार से विवरण किया है।

इस ग्रंथ में बताया गया **"जनन – मरण का रहस्य"** न भूत काल में किसी ने कहा था, न ही भविष्य काल में इससे भी बढ़कर बताया जायेगा ।

अब भी सब लोग जन्म और मृत्यु की सत्यता को समझेंगे इस विश्वास से समाप्त कर रहे हैं।

*****

असत्य को हजार लोग कहें व सत्य नहीं होगा,
सत्य को हजार लोग नकारें वो असत्य नहीं होगा।